बी एच ई एल
BHEL

अरुणिमा

अंक-38 अर्धवार्षिक, 2025-26

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

बीएचईएल को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2024-25 के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार

बीएचईएल को राजभाषा के क्षेत्र में 'उत्कृष्ट कार्यान्वयन' एवं 'श्रेष्ठ हिंदी गृह पत्रिका' के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा के सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। ये पुरस्कार बीएचईएल के निदेशक (मानव संसाधन) श्री कृष्ण कुमार ठाकुर ने 14 सितंबर को गांधीनगर, गुजरात में आयोजित हिंदी दिवस समारोह और 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह से प्राप्त किए।

उल्लेखनीय है कि बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 'क क्षेत्र में स्थित सार्वजनिक उपक्रमों' की श्रेणी में 'द्वितीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। बीएचईएल की एचपीईपी, हैदराबाद इकाई को 'ग क्षेत्र में स्थित सार्वजनिक उपक्रमों' की श्रेणी में 'श्रेष्ठ गृह पत्रिका' के लिए 'प्रथम पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। एचपीईपी, हैदराबाद को यह पुरस्कार हिन्दी पत्रिका 'भेल यशस्वी' के लिए प्रदान किया गया।

निदेशक (मानव संसाधन)

संदेश

प्रिय साथियो,

'अरुणिमा' के 38 वें अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर सबसे पहले मैं आपको एवं आपके परिजनों को नववर्ष – 2026 एवं बीएचईएल दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

मनुष्य के भावों, विचारों, अनुभवों एवं आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही संभव है। भाषा की शक्ति के माध्यम से ही मानव ने ज्ञान, विज्ञान के सभी क्षेत्रों में प्रगति सुनिश्चित की है। किसी भी सुदृढ़, सक्षम एवं समर्थ राष्ट्र की पहचान इस बात से होती है कि उसकी अपनी भाषा कितनी व्यापक एवं समर्थ है।

जन–मन की भाषा हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ ही हमारे ग्यारह प्रांतों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा एवं प्रोत्साहन है किंतु संबंधित नीतियों एवं निदेशों का अनुपालन दृढ़ता से किया जाना चाहिए। मेरी आप सभी से यह अपेक्षा है कि कंपनी के अन्य प्रचालनों के साथ–साथ राजभाषा कार्यान्वयन पूरी जिम्मेदारी के साथ करें ताकि हम भारत सरकार द्वारा जारी निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल हो पाएं।

यह हम सबके लिए प्रसन्नता का विषय है कि बीएचईएल को राजभाषा के क्षेत्र में 'उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन' एवं 'श्रेष्ठ हिंदी गृह पत्रिका' के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा के सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। 14 सितंबर 2025 को गांधीनगर, गुजरात में आयोजित हिंदी दिवस समारोह और 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 'क क्षेत्र में स्थित सार्वजनिक उपक्रमों' की श्रेणी में **'द्वितीय पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया। एचपीईपी, हैदराबाद इकाई की हिन्दी पत्रिका 'भेल यशस्वी' को 'ग क्षेत्र में स्थित सार्वजनिक उपक्रमों' की श्रेणी में 'श्रेष्ठ गृह पत्रिका' के लिए **'प्रथम पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया।

ये पुरस्कार राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के प्रतीक हैं और हमें इस यात्रा को अनवरत जारी रखना है।

अरुणिमा के 38 अंकों का सफल प्रकाशन हमारे कर्मचारियों की बहुमुखी प्रतिभा, रचनाधर्मिता और सृजनशीलता का जीवंत प्रमाण है। इसके लिए मैं, सभी रचनाकारों तथा पत्रिका प्रकाशन से जुड़े साथियों को हार्दिक बधाई देता हूं।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

कृष्ण कुमार ठाकुर

कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

संदेश

प्रिय साथियो,

विविधता में एकता ही हमारे देश का मूलभूत तत्व है और भाषायी दृष्टि से हिंदी देश की सामाजिक और सांस्कृतिक एकता के सेतु का काम कर रही है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को कार्यालयी कामकाज में बढ़ाने के लिए बीएचईएल में कई प्रोत्साहन योजनाएं चल रही है और प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की नीति से हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ भी रहा है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हिंदी के सरलतम रूप को अपनाकर हम अपना दैनिक कार्यालयी कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करें।

वर्तमान समय, कार्यों को सरल एवं सुचारु रूप से करने के लिए तकनीकों के अधिकतम प्रयोग का है। हिंदी में कार्य को सरलता से करने के लिए विभिन्न ई–टूल्स उपलब्ध हैं और हमारा राजभाषा विभाग कार्यशालाओं के माध्यम से निरंतर इनका प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। हमें इन ई–टूल्स का प्रयोग करके हिंदी को और अधिक समृद्ध बनाना है तथा राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

अरुणिमा के माध्यम से आपसे आग्रह है कि आप अपने अनुभव एवं कार्यक्षेत्र के अनुरूप पत्रिका में योगदान दें ताकि इसमें कंपनी के सभी प्रचालनों और विधाओं को समाहित किया जा सके और दिन–प्रतिदिन पत्रिका नई–नई उपलब्धियों को अर्जित करते हुए नई ऊंचाइयों को छुए।

आप सभी के लिए नववर्ष 2026 मंगलमय हो!

एम श्रीधर

संपादकीय

प्रिय साथियो,

नववर्ष की पावन बेला में आपको **अरुणिमा** का 38वां अंक सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका न केवल हमारी गतिविधियों, प्रयासों, उपलब्धियों का जीवंत प्रमाण है, बल्कि यह राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एवं बीएचईएल की सांस्कृतिक एवं भाषायी धरोहर की भी प्रतीक है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ हमारी पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ ही हिंदी विश्व की सबसे वैज्ञानिक भाषा मानी जाती है। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है।

हिंदी के महत्व को बताते हुए गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी ने देश की सभी प्रमुख भाषाओं को आत्मसात किया है और राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

देश का एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम होने के नाते बीएचईएल राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहा है। निर्बाध रूप से अर्द्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका अरुणिमा का प्रकाशन इसका प्रमाण है। अरुणिमा ने पूरे देश में फैली हमारी इकाइयों, साइटों एवं कार्यस्थलों को एक सूत्र में पिरोया है।

विभिन्न विषयों पर आपके द्वारा प्रेषित रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक आलेख, संस्मरण, कहानियां, लघु कथाएं, कविताएं और विविध विधाओं में की गई रचनाएं अरुणिमा की वास्तविक शक्ति हैं। मैं सभी रचनाकारों एवं पाठकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। जिन साथियों ने अभी तक पत्रिका में अपनी सृजनात्मकता का परिचय नहीं दिया है वे कृपया पत्रिका के भावी अंकों में अपना योगदान कर सृजन की इस यात्रा से जुड़ें ताकि यह गुलदस्ता और इंद्रधनुषी बनता जाए।

आपको एवं परिवारजनों को नववर्ष एवं बीएचईएल दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

(आर. के. श्रीवास्तव)
महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन)

संपादक मण्डल

संरक्षक
श्री के. सदाशिव मूर्ति
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक
श्री कृष्ण कुमार ठाकुर
निदेशक (मा.सं.)

मुख्य परामर्शदाता
श्री एम. श्रीधर
कार्यपालक निदेशक (मा.सं.)

मुख्य संपादक
श्री आर के श्रीवास्तव
महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन)

संपादक
श्री मंगल स्वरुप त्रिवेदी
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

सह संपादक
श्री अनुराग मिश्र
उप प्रबंधक (राजभाषा)

परामर्शदाता मंडल

सुश्री दीपिका शर्मा
वरि. उप महाप्रबंधक (मा.सं.)

श्री उदयराज मीणा
वरि. उप महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन)

सुश्री अर्चना महाराम यादव
वरि. प्रबंधक (वित्त)

संपादन सहयोग

श्री नीरज कुमार सिंह
सहायक अधिकारी (अनुवाद)

श्री सुरेश कुमार
सहायक अधिकारी (अनुवाद)

संपर्क सूत्रः
राजभाषा विभाग, बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय,
बीएचईएल सदन, प्लॉट नं. 25, सेक्टर 16ए नोएडा–201301
दूरभाषः 0120–6748141, ईमेलः mangal@bhel.in, मो.: 9250045881

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं, सरकार अथवा बीएचईएल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

अनुक्रमणिका

क्रं	शीर्षक	रचना वर्ग	लेखक (श्री / श्रीमती / सुश्री)	पेज नं.
1	रेलवे क्षेत्र में बीएचईएल का प्रवेशः एक परिचय	तकनीकी आलेख	साहिल जैन	8–10
2	ग़ज़ल	ग़ज़ल	अभिषेक कुमार सिंह	10
3	हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर में बीएचईएल की इंजीनियरिंग उत्कृष्टता	तकनीकी आलेख	रमेश कुमार बहल	11–13
4	प्रीडायबिटीज क्या है?	स्वास्थ्य संबंधी	डॉ. उमाशंकर शिल्पी	14–15
5	अभिव्यक्ति	कविता	विनीत कुमार	15
6	प्रसन्नता	आलेख	डी एन बाजपेयी	16
7	मणि कैलाश यात्राः एक संस्मरण	यात्रा वृत्तांत	अरुण सक्सेना	17–21
8	जीवन की खुशी	कविता	दीप्ति सिंह	21
9	ग्रीन हाइड्रोजनः कैसे पर्यावरण को स्वच्छ करेगा	तकनीकी आलेख	आँचल चौधरी	22–25
10	भाषाई उदारता आखिर किस सीमा तक	भाषाई आलेख	दिनेश कुमार सोनी	26–28
11	बीएचईएल! तू है भारत का अभिमान	कविता	सुमित कुमार वर्मा	28
12	अरुणिमा के 37वें अंक में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए पुरस्कृत कर्मचारी	उपलब्धि	संकलित	29
13	भारत की ऊर्जा नीतिः प्रगति और प्रकृति का संतुलन	पर्यावरण संबंधी आलेख	राणा रश्मिरथी	30–31
14	बचपन की मस्ती	कविता	मनीष कुमार देव	31
15	कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां	समाचार	संकलित	32–38
16	मन के बंधन खोल	आध्यात्मिक आलेख	मंगल स्वरूप त्रिवेदी	38
17	इलेक्ट्रॉनिक कचरा : बढ़ती चुनौती और समाधान	आलेख	सुदीप कुमार	39
18	लकड़ी की खिड़की : मनु की बचपन की यादें	कहानी	पारामिता बैक	40–41
19	क्यों?	कविता	सानिया	41
20	विकसित भारत @ 2047 में नागरिकों की भूमिका	आलेख	आशुतोष कुमार वर्मा	42–43
21	जल है तो कल है	कविता	शिखा गोंड	43
22	मिट्टी और अपशिष्टः एक अदृश्य पारिस्थितिक संघर्ष	आलेख	दीपक कुमार पाण्डेय	44–45
23	बैटरी भंडारण और रिसाइक्लिंग	तकनीकी आलेख	असद अली	46–49
24	नारीः खुद का सम्मान हो तुम	कविता	रोशन आरा	49
25	मन, कर्म और समर्पण : मेरी आत्मयात्रा	संस्मरण	विशाखा जैन	50
26	कच्चा घर और इकोसिस्टम	संस्मरण	अरविंद कुमार पाण्डेय	51
27	स्टार्टअप से युवा सपनों को मिली नई उड़ान	आलेख	चन्दन कुमार चौधरी	52–53
28	"हंसिबा खेलिबा धरिबा ध्यान, अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियान"	आध्यात्मिक आलेख	डॉ. मेधा	54–55
29	समुद्र मंथन	आलेख	शशि रंजन	55
30	आजादी के 78 वर्ष और राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा	भाषाई आलेख	प्रो. पूरनचंद टंडन	56–59
31	पूस की रात	कहानी	मुंशी प्रेमचंद	60–62
32	नराकास संबंधी गतिविधियां	समाचार	संकलित	63

रेलवे क्षेत्र में बीएचईएल का प्रवेश: एक परिचय

साहिल जैन

दुनिया के सबसे बड़े नेटवर्कों में से एक, भारतीय रेलवे नेटवर्क देश की अर्थव्यवस्था और कनेक्टिविटी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बीएचईएल का भारतीय रेल के साथ लंबे समय से गहरा संबंध रहा है। बीएचईएल मुख्यतः ट्रैक्शन उपकरण, विद्युत प्रोपल्शन (Propulsion) प्रणाली तथा लोकोमोटिव और इलेक्ट्रिक मल्टिपल यूनिट्स (EMU) के लिए सहायक प्रणालियों का निर्माता है।

इसके प्रारंभिक योगदान में शामिल हैं:

- एसी (AC) और डीसी (DC) ट्रैक्शन मोटरों का विनिर्माण,
- ईएमयू (EMU) और डीईएमयू (DEMU) के लिए प्रोपल्शन प्रणालियों की आपूर्ति,
- अत्याधुनिक स्टैटिक कन्वर्टर्स, ट्रैक्शन अल्टरनेटर और ट्रांसफार्मर की आपूर्ति।

इन तकनीकों ने भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे रेल संचालन की दक्षता, विश्वसनीयता और स्थिरता में सुधार हुआ है।

7,95,000+ MVA ट्रांसमिशन उपकरण की आपूर्ति → 35,300+ एसी मशीनें की आपूर्ति → भारतीय रेलवे और उद्योग को 850 +लोको की आपूर्ति

रेलवे क्षेत्र में बीएचईएल की उपलब्धियां – ऑर्डर बुकिंग और टर्नओवर

हर साल बीएचईएल को रेलवे से बड़ी मात्रा में ऑर्डर मिलते हैं, जिनमें वित्त वर्ष 2023–24 में प्राप्त, वंदे भारत ट्रेन सेट का ऑर्डर भी शामिल है। बीएचईएल के कारोबार का एक बड़ा हिस्सा रेलवे से आता है, जैसा कि नीचे ग्राफ में दर्शाया गया है।

आधुनिक रेलवे तकनीक और वंदे भारत ट्रेन सेट में बीएचईएल का महत्वपूर्ण योगदान

बीएचईएल निर्मित उपकरण

प्रोपल्शन सिस्टम

बीएचईएल द्वारा योगदान

- भारतीय रेलवे और अन्य वैश्विक साझेदारों के साथ मिलकर आईजीबीटी–आधारित (IGBT based) (इंसुलेटेड गेट बाइपोलर ट्रांजिस्टर) प्रोपल्शन सिस्टम विकसित किए हैं– जो ऊर्जा दक्षता और प्रदर्शन के लिए आधुनिक रेलवे तकनीक में स्वर्ण मानक माने जाते हैं।
- ये प्रणालियाँ अब विद्युत और डीजल दोनों इंजनों में लगाई जा रही हैं, जिससे विश्वसनीयता सुनिश्चित होती है और रखरखाव लागत कम होती है।

ट्रैक्शन उपकरण

- बीएचईएल का एक प्रमुख योगदान लोकोमोटिव (Locomotive) के लिए ट्रैक्शन कन्वर्टर्स, मोटर्स और नियंत्रण प्रणालियों का विनिर्माण

और विकास है।

- बीएचईएल ने उन्नत ट्रैक्शन कन्वर्टर्स और मोटर्स की आपूर्ति की है, जो इलेक्ट्रिक और डीजल दोनों प्रकार के लोकोमोटिव्स में उपयोग किए जाते हैं।

रोलिंग स्टॉक

बीएचईएल द्वारा योगदान

- बीएचईएल भोपाल, बेंगलुरु और झाँसी इकाइयों ने इलेक्ट्रिक और डीजल–इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव, एसी ईएमयू (AC EMU), डेमू (DEMU) और एमईएमयू (MEMU) के लिए प्रणालियाँ विकसित की हैं।
- बीएचईएल डब्ल्यूएजी–7 (WAG-7) से लेकर आधुनिक डब्ल्यूएजी–9 (WAG-9) तक लोको (Loco) विकल्पों के लिए 6000/HP और 9000/HP प्रोपल्शन प्रणाली प्रदान करता है।
- बड़े यांत्रिक हिस्सों और भारी उपकरणों का विनिर्माण (जैसे, की–केसिंग, फैब्रिकेशन आदि)

रीजनरेटिव ब्रेकिंग सिस्टम

बीएचईएल द्वारा योगदान

- ऊर्जा कुशल प्रोपल्शनः भारत का पहला रीजनरेटिव ब्रेकिंग सिस्टम वाले डब्ल्यूएजी–7 (WAG-7) लोको को बीएचईएल ने विकसित किया है, जिससे एनर्जी ओवरहेड लाइन को वापस प्रदर्शित किया जा सकता है। इसने ऊर्जा बचत में मदद की है।

रेलवे विद्युतीकरण

बीएचईएल द्वारा योगदान

- बीएचईएल भारत के रेलवे विद्युतीकरण की यात्रा में अग्रणी रहा है।
- कंपनी ट्रांसफार्मर, रेक्टिफायर और स्विचगियर की आपूर्ति करती है जो इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन की रीढ़ हैं।
- अपने निरंतर नवाचार के माध्यम से, बीएचईएल ने भारतीय रेलवे की जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने में मदद की है, जिससे टिकाऊ और पर्यावरण–अनुकूल परिवहन का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

वंदे भारत ट्रेन सेट

संक्षिप्त विवरण

- वंदे भारत एक्सप्रेस, जिसे पहले ट्रेन 18 (Train 18) के नाम से जाना जाता था, भारत की पहली स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित सेमी–हाई–स्पीड ट्रेन है। इसकी गति लगभग 160 किमी/घंटा है।
- यह परियोजना आत्मनिर्भरता, तकनीकी प्रगति और भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण में एक बड़ी उपलब्धि है।

बीएचईएल द्वारा योगदान

साझेदारी के माध्यम से योगदान

भारतीय रेलवे द्वारा प्रदान किए गए नए वंदे भारत ट्रेनसेट के 80 सेटों के विनिर्माण में बीएचईएल, टीटागढ़ रेल सिस्टम्स के साथ संयुक्त उद्यम में कार्य कर रहा है। इस अनुबंध के तहतः

- यह संयुक्त उद्यम वंदे भारत ट्रेनसेट की डिजाइनिंग, विकास, विनिर्माण और आपूर्ति करेगा।
- इसमें यांत्रिक प्रणालियाँ (जैसे बोगियाँ और कार बॉडी शेल) और विद्युत प्रणालियाँ (जैसे प्रोपल्शन, नियंत्रण प्रणालियाँ और सहायक विद्युत आपूर्ति) दोनों शामिल हैं।
- बीएचईएल विद्युत और प्रोपल्शन प्रणाली में विशेषज्ञता रखता है। ये उपकरण 160 किमी/घंटा की गति प्राप्त करने तथा सुचारू त्वरण एवं अवमंदन सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जबकि टीटागढ़ रोलिंग स्टॉक के विनिर्माण में अपने अनुभव के साथ योगदान दे रहा है।

- मुख्य इलेक्ट्रिकल और ट्रैक्शन सिस्टम के माध्यम से वंदे भारत ट्रेन सेट में बीएचईएल का योगदान इस प्रकार हैः

– यह आईजीबीटी–आधारित ट्रैक्शन कन्वर्टर्स की आपूर्ति करता है, जो ऊर्जा–कुशल और उच्च–गति प्रोपल्शन के लिए आवश्यक हैं।

– वंदे भारत ट्रेन की बोगियों को उच्च टॉर्क और गति नियंत्रण के साथ चलाने के लिए ट्रैक्शन मोटर्स विकसित किए गए हैं।

– सक्षम रीजनरेटिव ब्रेकिंग सिस्टम, जिससे ट्रेन की गति कम होने के दौरान ग्रिड में वापस बिजली भेज सके। यह एयर कंडीशनिंग, लाइट, स्वचालित दरवाजों और यात्री सूचना प्रणालियों को निर्बाध बिजली की आपूर्ति के लिए सहायक कन्वर्टर्स भी प्रदान करता है।

यह पहल न केवल विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाती है बल्कि रेल परिवहन में घरेलू अनुसंधान एवं विकास को भी मजबूत करती है।

देश के विकास में बीएचईएल का योगदान

बीएचईएल, भारतीय रेलवे की तकनीकी यात्रा को आगे बढ़ाकर और उसे गति प्रदान कर, देश के विकास में निम्नलिखित प्रकार से योगदान कर रहा हैं:

1. **तकनीकी संप्रभुताः** हाई–स्पीड ट्रेनसेट विनिर्माण में बीएचईएल की भागीदारी महत्वपूर्ण परिवहन अवसंरचना में देश की तकनीकी आत्म निर्भरता को प्रदर्शित करती है।

2. **रोजगार सृजनः** देश मे ट्रेनसेट का विनिर्माण, अनुसंधान एवं विकास और आपूर्ति श्रृंखलाओं में रोजगार वृद्धि को प्रोत्साहित करता है।

3. **निर्यात क्षमताः** बीएचईएल के विनिर्माण क्षमता विकास के पश्चात भारत विशेषकर विकासशील देशों को रेलवे उपकरण निर्यात के एक वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित हो सकता हैं।

4. **ऊर्जा दक्षता और स्थिरताः** बीएचईएल द्वारा विकसित अत्याधुनिक ट्रैक्शन प्रणालियों और रीजनरेटिव ब्रेकिंग सिस्टम के उपयोग से ऊर्जा दक्षता में सुधार हुआ है।

प्रबंधक (सीओएम)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

ग़ज़ल

खो गया खुद पे नियंत्रण अर्थ पागल हो गया
शब्द जब ख़ंजर हुए संवाद घायल हो गया

कल तलक कुछ भी नहीं था जो सिवाए राख के
आज वो इस दौर की आंखों का काजल हो गया

जो सितारा टिमटिमाता था हमारी राह में
रात जब गहरी हुई तो वो भी ओझल हो गया

बेरहम और सख़्त था जो शख़्स पत्थर की तरह
फूल के संसर्ग में आया तो कोमल हो गया

अभिषेक कुमार सिंह

दौड़ती थी जिस जगह बच्चों की अनगिनत टोलियां
अब वहां कंक्रीट के पेड़ों का जंगल हो गया

हम समझते आ रहे थे धूप का टुकड़ा जिसे
पल में अपना रूप बदला और बादल हो गया

तुम मिले तो जिंदगी के साथ बस इतना हुआ
रास्ता जो खुरदरा–सा था वो समतल हो गया

प्रबंधक
एसएसटीपी, तिरुचिरापल्ली

हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर में बीएचईएल की इंजीनियरिंग उत्कृष्टता

रमेश कुमार बहल

बीएचईएल वर्ष 1964 से, अग्रणी पूंजीगत वस्तु क्षेत्र की कंपनी के रूप में 'भारत में निर्माण' कर रही है। आज, कंपनी का व्यवसाय विद्युत और उद्योग क्षेत्र में है। बीएचईएल, विद्युत उत्पादन (थर्मल, हाइड्रो, गैस, परमाणु और सौर पीवी), पारेषण, परिवहन, रक्षा, एयरोस्पेस, तेल एवं गैस तथा देश के अन्य प्रमुख क्षेत्रों और विदेशों में भी उत्पादों, प्रणालियों और सेवाओं सहित व्यापक समाधान प्रदान करती है।

बीएचईएल, अपने पाँच दशकों से अधिक के अनुभव और 46% बाजार हिस्सेदारी के साथ, भारत के हाइड्रो पावर इलेक्ट्रो–मैकेनिकल (ई&एम) पैकेज सेगमेंट में अग्रणी है। कंपनी, अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधाओं और प्रौद्योगिकी विकास के लिए मजबूत अनुसंधान एवं विकास (R&D) गतिविधियों की नींव पर, हाइड्रोइलेक्ट्रिक सेट/उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला देने के लिए तैयार हैं। वर्ष 1981 में पहली परियोजना – बैरास्यूल (3x60 MW) की कमीशनिंग के साथ, बीएचईएल लंबे समय से एनएचपीसी (NHPC) के साथ घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है।

बीएचईएल (इलेक्ट्रो–मैकेनिकल कार्य) द्वारा कमीशन किया गया एनएचपीसी का 45 MW निम्मो बाजगो पावर स्टेशन, लद्दाख

कार्यान्वयन के अधीन प्रमुख परियोजनाएँ

वर्ष 2023–24 में, बीएचईएल को अरुणाचल प्रदेश में 2880 MW (12 x 240 MW) की देश की सबसे बड़ी क्षमता वाली दिबांग बहुउद्देशीय परियोजना के इलेक्ट्रो–मैकेनिकल (ई&एम) कार्यों के लिए एनएचपीसी लिमिटेड से ऑर्डर मिला है। इस प्रतिष्ठित ऑर्डर में टर्बाइन, जेनरेटर, डिजिटल गवर्निंग सिस्टम, स्टैटिक एक्साइटेशन सिस्टम, ट्रांसफार्मर, बस रिएक्टर, गैस इंसुलेटेड स्विचगियर, आउटडोर पॉट यार्ड, स्विचयार्ड उपकरण, प्लांट आइटमों के इलेक्ट्रिकल एवं मैकेनिकल बैलेंस की डिजाइन, इंजीनियरिंग, निर्माण, आपूर्ति, स्थापना और कमीशनिंग शामिल हैं। इस ऑर्डर के साथ, बीएचईएल ने भारत के हाइड्रो क्षेत्र में 550 से अधिक हाइड्रोइलेक्ट्रिक सेटों के पोर्टफोलियो और भारत एवं विदेशों में 35,000 MW से अधिक की क्षमता संवर्धन के साथ अपना नेतृत्व प्रदर्शित किया है।

इसके अलावा कंपनी वर्तमान में, ई&एम कार्यों के लिए 850 MW रतले एचईपी (जम्मू एवं कश्मीर), एनएचपीसी और उसके संयुक्त उद्यमों के लिए 105 MW लोकतक एचईपी (मणिपुर) के नवीनीकरण एवं आधुनिकीकरण (आरएम) के ऑर्डर निष्पादित कर रही है। वर्तमान में, विदेशों में निष्पादन के अधीन प्रमुख परियोजनाए हैं :–

- 6 x 200 MW पुनात्सांगछु–I हाइड्रो परियोजना, भूटान
- 6 x 170 MW पुनात्सांगछु–II हाइड्रो परियोजना, भूटान
- 4 x 225 MW अरुण–3 हाइड्रो परियोजना, नेपाल
- 2 x 20 MW राहुघाट हाइड्रो परियोजना, नेपाल
- इनके अतिरिक्त उत्पादों, पुर्जों एवं सेवाओं के कई कार्य आदेश

बीएचईएल : जल विद्युत क्षेत्र में अग्रणी

- भारत और विदेशों में 32 GW से ज्यादा क्षमता वाले 550 से अधिक हाइड्रो सेटों की आपूर्ति और कमीशनिंग की गई।
- भारत में कुल स्थापित हाइड्रो क्षमता की 46% आपूर्ति की गई।
- दुनिया के कुछ सबसे उच्च क्षमता वाले सिंगल–स्टेज पंपमोटर सेट (145 MW तक) पलामुरु रंगारेड्डी एलआईएस, तेलंगाना के लिए विकसित और निर्मित किए गए।
- भूटान में 89% से अधिक जल विद्युत, बीएचईएल निर्मित टर्बाइन और जेनरेटर सेटों से सुसज्जित है।
- दिबांग जल विद्युत परियोजना के लिए भारत का सर्वोच्च रेटिंग वाला फ्रांसिस टर्बाइन मॉडल (240 MW) विकसित किया और पोलावरम जल विद्युत परियोजना के लिए सबसे बड़ा कपलान रनर (80 MW) निर्मित किया।
- भारत में सबसे उच्च हेड फ्रांसिस टर्बाइन कामेंग एचईपी, अरुणाचल प्रदेश के लिए विकसित, निर्मित और कमीशन की गई।
- 47 पंप–मोटर सेट (3.3 GW) चालू किए गए और 54 पंप–मोटर सेट (7.3 GW) निर्माणाधीन हैं।

बीएचईएल, भोपाल में स्थापित उत्पादन सुविधाएँ:

- 1,00,000 वर्ग मीटर में फैली हुई हाइड्रो टर्बाइन विनिर्माण सुविधा
- हाइड्रो जेनरेटर के लिए समर्पित प्रयोगशाला
- बड़े पैमाने पर सीएनसी मशीनिंग सुविधा
- टर्बाइन कंपोनेन्टस के लिए एचवीओएफ कोटिंग सुविधा
- 7–एक्सिस रोबोटिक कॉइल टेपिंग मशीन

- हाइड्रो जेनरेटरः वीपीआई वाइंडिंग के लिए बड़े आकार का वीपीआई संयंत्र
- बीडीवी, आवेग और त्वरित आयु परीक्षण करने के लिए इन्सुलेशन प्रयोगशाला

बीएचईएल, भोपाल में हाइड्रो मशीनों के उत्कृष्टता केंद्र में मॉडल टेस्ट रिग

रोबोटिक एचवीओएफ (HVOF) कोटिंग सुविधा

सहायक इकाइयाँ :

- शाफ्ट फोर्जिंग के लिए सेंट्रल फाउन्ड्री फोर्ज प्लांट (सीएफएफपी), हरिद्वार
- हाइड्रो–जेनरेटर की लेमिनेशन के लिए फेब्रिकेशन स्टेम्पिंग एंड इंसुलेटर प्लांट (एफएसआईपी), जगदीशपुर

हाइड्रो विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाने के लिए भोपाल संयंत्र में स्थापित नई सीएनसी हाइड्रो सुविधा

बीएचईएल के हाइड्रो उत्पाद

हाइड्रो जेनरेटर और मोटर्सः

- सैलिएंट पोल वर्टिकल सिंक्रोनस हाइड्रो जेनरेटर (400 MW तक)
- लिफ्ट सिंचाई योजनाओं के लिए मोटर (200 MW तक)
- फिक्स्ड स्पीड जेनरेटर–मोटर (300 MW तक)
- बल्ब जेनरेटर (10 MW तक)
- हॉरिजॉन्टल जेनरेटर (20 MW तक)
- मैचिंग स्टेटिक एक्साइटेशन सिस्टम/ब्रशलेस एक्साइटेशन सिस्टम की इंजीनियरिंग, विनिर्माण, स्थापना और कमीशनिंग की क्षमता
- पुरानी मशीनों का नवीनीकरण, आधुनिकीकरण और उन्नयन (बीएचईएल और गैर–बीएचईएल)

हाइड्रो जेनरेटर

हाइड्रो टर्बाइन और पंप :

- फ्रांसिस टर्बाइन (400 MW तक)
- पेल्टन टर्बाइन (400 MW तक)
- कपलान टर्बाइन (1000 MW तक)
- बल्ब टाइप हाइड्रो टर्बाइन (10 MW तक)
- लिफ्ट सिंचाई योजनाओं के लिए पंप (200 MW तक)
- पंप स्टोरेज प्लांट (पीएसपी) के लिए रिवर्सिबल पंप–टर्बाइन (300 MW तक)
- बटरफ्लाई और गोलाकार वाल्व
- माइक्रोप्रोसेसर–आधारित डिजिटल गवर्नर
- संयंत्र लेआउट और यांत्रिक बीओपी

पेल्टन टर्बाइन

फ्रांसिस टर्बाइन

कपलान टर्बाइन

आगे की राह :

भारत ने अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित अद्यतन योगदान (एनडीसी) लक्ष्यों में, वर्ष 2030 तक गैर–जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से संचयी विद्युत स्थापित क्षमता का 50% प्राप्त करने का और वर्ष 2070 तक नेट–जीरो तक पहुंचने का दीर्घकालिक लक्ष्य रखा है। हाइड्रो पावर, अक्षय और गैर–जीवाश्म स्रोतों में प्रमुख योगदान देता है।

नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन की परिवर्तनशीलता के कारण ऊर्जा की पीक पावर आवश्यकताओं के प्रबंधन के लिए, हाइड्रो पावर महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इन–हाउस हाइड्रो प्रोफाइल विकसित करने के लिए अपनी स्वयं की एनएबीएल (NABL) मान्यता प्राप्त हाइड्रो लैब के साथ, बीएचईएल ग्रीन फील्ड हाइड्रो परियोजनाओं के लिए ई–एम पैकेजों में निर्विवाद रूप से बाजार में अग्रणी है और पुराने हाइड्रो सेटों के आर एंड एम (R&M) के लिए भी एक अग्रणी कंपनी है।

टर्बाइन प्रोफाइल (बीएचईएल और गैर–बीएचईएल द्वारा बनी) के कुशल उन्नयन, उनके जीवनकाल के साथ–साथ विश्वसनीयता बढ़ाने हेतु, बीएचईएल जलविद्युत उत्पादकों के लिए एक आदर्श भागीदार है। बीएचईएल, लिफ्ट सिंचाई परियोजनाओं में आवश्यक बड़े आकार के पंप–मोटर्स में भी अग्रणी कंपनी है।

प्रबंधक (सोर्सिंग स्ट्रेटजी एवं पॉलिसी)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

साधु की झोपड़ी

किसी गांव में दो साधु रहते थे। वे अपने लिए गांव वालों से भोजन लेते और दोनों समय मंदिर में पूजा करते थे। दोनों साधु गांव की सीमा से लगी एक झोपड़ी में निवास करते थे। एक दिन गांव में आंधी आ गई और बहुत जोरों की बारिश होने लगी। शाम को जब दोनों वापस पहुंचे तो देखा कि आंधी–तूफान के कारण उनकी आधी झोपड़ी टूट गई है। यह देखकर पहला साधू क्रोधित हो उठता है और बुदबुदाने लगता है– "भगवान तू मर साथ हमेशा ही गलत करता है। मैं दिन भर तेरा नाम लेता हूं, मंदिर में तेरी पूजा करता हूं फिर भी तूने मेरी झोपड़ी तोड़ दी। गांव में चोर, लुटेरे, झूठे लोगों के तो मकानों को कुछ नहीं हुआ, हम साधुओं की झोपड़ी तूने तोड़ दी, ये तेरा ही काम है। हम तेरा नाम जपते हैं पर तू हमसे प्रेम नहीं करता।"

तभी दूसरा साधु आता है और झोपड़ी को देखकर खुश हो जाता है, नाचने लगता है और कहता है– "भगवान! आज विश्वास हो गया तू हमसे कितना प्रेम करता है, ये हमारी आधी झोपड़ी तूने ही बचाई होगी वरना इतनी तेज आंधी–तूफान में तो पूरी झोपड़ी ही उड़ जानी थी। ये तेरी ही परम कृपा है कि अभी भी हमारे पास सिर ढंकने को जगह है... निश्चित ही ये मेरी पूजा का फल है, कल से मैं तेरी और अधिक पूजा करूंगा, मेरा तुझ पर विश्वास अब और भी बढ़ गया है... तेरी जय हो!"

सार – हमें कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपना विश्वास एवं सयंम नहीं खोना चाहिए तथा सदैव अपनी सोच सकारात्मक बनाए रखना चाहिए ।

संकलित

स्वास्थ्य संबंधी आलेख

प्रीडायबिटीज क्या है?

डॉ. उमाशंकर शिल्पी

प्रीडायबिटीज एक चेतावनी संकेत है कि आपका शरीर शर्करा (ग्लूकोज) का मेटाबोलिज्म/चयापचय सही ढंग से नहीं कर रहा है। इसमें ग्लूकोज की मात्रा सामान्य से अधिक होती है, लेकिन मधुमेह वाले व्यक्ति के सीमा के करीब पहुँच जाती है। यह मधुमेह से पहले की स्थिति है। यदि इस स्तर पर सही खान–पान एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाई जाए तो डायबिटीज को यहीं रोका जा सकता है। प्रीडायबिटीज से टाइप 2 मधुमेह, दिल का दौरा या स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है। अमेरिका में तीन में से एक वयस्क को प्रीडायबिटीज है।

प्रीडायबिटीज से पीड़ित 80 प्रतिशत से ज्यादा लोगों को पता ही नहीं होता है कि उन्हें यह बीमारी है। बिना इलाज के यह पाँच साल के भीतर टाइप 2 डायबिटीज बन सकता है।

प्रीडायबिटीज के क्या कारण हैं?

प्रीडायबिटीज तब होती है जब आपका अग्नाशय पर्याप्त मात्रा में इंसुलिन नहीं बनाता या आपकी कोशिकाएं इंसुलिन के प्रति प्रतिरोधी हो जाती है (या कभी–कभी दोनों)।

इंसुलिन का काम आपके रक्त से शर्करा को आपकी कोशिकाओं में पहुंचाना है। जब इंसुलिन ठीक से काम नहीं करता है तो आपके रक्त प्रवाह में बहुत अधिक शर्करा रह जाती है।

प्रीडायबिटीज के संकेत और लक्षण क्या हैं?

प्रीडायबिटीज के बहुत कम लक्षण उत्पन्न होते हैं, यही कारण है कि बहुत से लोगों को पता ही नहीं चलता कि वे इससे पीड़ित हैं।

यदि यह मधुमेह में परिवर्तित हो जाए, तो आपके लक्षण निम्न हो सकते हैं:

- धुंधली दृष्टि
- थकान
- जल्दी पेशाब आना
- भूख में वृद्धि
- प्यास बढ़ जाना
- अस्पष्टीकृत वजन घटना

अगर आपको ये लक्षण हैं, तो अपने डॉक्टर को बताएं ताकि वे आपकी रक्त शर्करा की जांच कर सकें। अगर आपके परिवार में मधुमेह का इतिहास है, तो उन्हें सूचित करें ताकि वे आपके जोखिम का आकलन कर सकें और आपकी जांच कर सकें।

वयस्कों को 35 वर्ष की आयु में मधुमेह की जांच शुरू कर देनी चाहिए। यदि आपका वजन अधिक है या अन्य जोखिम कारक हैं, तो आपके डॉक्टर पहले जांच करने का सुझाव दे सकते हैं।

प्रीडायबिटीज का निदान कैसे किया जाता है?

प्रीडायबिटीज का निदान करने का एकमात्र तरीका रक्त परीक्षण है। प्रीडायबिटीज का निदान करने के लिए दो परीक्षण है। आपका डॉक्टर इनमें से एक या दोनों की सलाह दे सकता है।

HbA1C परीक्षण दो से तीन महीने तक आपके औसत रक्त शर्करा स्तर को मापता है।

- 5.7 प्रतिशत या इससे कम का HbA1C सामान्य है।
- 5.7 से 6.4 प्रतिशत के बीच प्रीडायबिटीज ।
- 6.5 प्रतिशत या उससे अधिक HbA1C का मतलब टाइप 2 मधुमेह है।

उपवास रक्त शर्करा (Fasting Blood Sugar) परीक्षण से प्रीडायबिटीज का भी पता लगाया जा सकता है।

इस परीक्षण की श्रेणियां इस प्रकार हैः

- 100 मिग्रा/डीएल से कम = सामान्य (Normal)
- 100 से 125 मिग्रा/डीएल = प्रीडायबिटीज
- 126 मिग्रा/डीएल या अधिक = टाइप 2 मधुमेह

प्रीडायबिटीज का इलाज क्या है?

प्रीडायबिटीज के उपचार में आहार और जीवन शैली में बदलाव पर ध्यान दिया जाता है। आपके स्वास्थ्य और जोखिम कारकों के आधार पर, आपका डॉक्टर दवाएं या वजन घटाने की सर्जरी का सुझाव भी दे सकता है।

प्रीडायबिटीज को शिक्षा और देखभाल (Education / Counseling) के माध्यम से स्वस्थ जीवन शैली अपनाकर ठीक किया जा सकता है। हमारा लक्ष्य प्रीडायबिटीज के लिए अनुकूल उपचार प्रदान करना है।

इसके लिए निम्नलिखित विशेषज्ञों द्वारा बताए गए तरीके अपनाए जा सकते हैं:

- व्यायाम (Exercise) चिकित्सा द्वारा
- पारिवारिक अभ्यास और आंतरिक चिकित्सा द्वारा
- मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ द्वारा Stress कम करना,

- नर्स/ Paramedical Staff द्वारा सलाह,
- पंजीकृत आहार विशेषज्ञ द्वारा Diet Chart,
- प्रमाणित मधुमेह देखभाल और शिक्षा विशेषज्ञ की सलाह।

प्रीडायबिटीज के इलाज के लिए जीवन शैली में बदलाव

दीर्घकालिक जीवन शैली में बदलाव आपको वजन कम करने और उसे नियंत्रित रखने में मदद कर सकते हैं।

आप इन तकनीकों का उपयोग करके अपने प्रारम्भिक वजन का 5 से 7 प्रतिशत कम करके प्रीडायबिटीज को उलट सकते हैं:

- ज्यादातर समय स्वस्थ आहार लें। हर दिन खाने वाली कैलोरी को कम करने और वजन कम करने के लिए छोटे–छोटे हिस्से में खाएं। भोजन और नाश्ते में ज्यादा फल और सब्जियां शामिल करें और मीठे पेय पदार्थों के बजाय पानी पियें।
- स्वस्थ, उच्च फाइबर युक्त कार्बोहाइड्रेट खाएं। इनमें फल, सब्जियां, साबुत अनाज, बीन्स, नट्स और बीज शामिल है। सफेद आटे या अतिरिक्त चीनी से बने खाद्य पदार्थों का सेवन कम करें।
- सप्ताह में पाँच दिन कम से कम 30 मिनट शारीरिक गतिविधियां करें। कभी आप सक्रिय नहीं रहे हैं, तो अपने डॉक्टर से पूछें कि कौन सी गतिविधियां सबसे अच्छी हैं। धीरे–धीरे शुरू करें और समय के साथ बढ़ाएं।
- हर रात आठ घंटे की आरामदायक नींद का लक्ष्य रखें। हर दिन एक ही समय पर सोने और जागने से आपको बेहतर नींद लेने में मदद मिल सकती है।

प्रीडायबिटीज के इलाज के लिए दवाः

प्रीडायबिटीज के लिए दवाओं की जरूरत नहीं होती। लेकिन आपके स्वास्थ्य इतिहास और जोखिम कारकों के आधार पर डॉक्टर निम्नलिखित सुझाव दे सकता हैः

- गोलियां आपके इंसुलिन को बेहतर ढंग से काम करने में मदद करती है ताकि आपका यकृत कम ग्लूकोज बना सके।
- ये आपके इंसुलिन लेवल को बेहतर ढंग से काम करने में मदद करते हैं और वजन घटाने को बढ़ावा देते हैं।

प्रीडायबिटीज के लिए वजन घटाने की सर्जरी

यदि आपका वजन बहुत अधिक है तो वजन कम करके या बेरियाट्रिक सर्जरी से प्रीडायबिटीज को उलटाया जा सकता है।

यह सर्जरी उन लोगों के लिए प्रभावी है जो आहार और जीवन शैली के माध्यम से अपना वजन कम नहीं कर पाते और उसे नियंत्रित नहीं रख पाते हैं।

वरिष्ठ सलाहकार (चिकित्सा),
हीप, हरिद्वार

अभिव्यक्ति

अतिव्यक्ति के इस दौर में
अभिव्यक्ति की कौन सुने,

जब शोर ही बन जाये भाषा
तो सन्नाटे की कौन सुने,

पों–पों, पी–पी के कोलाहल में
बादल–चिड़ियों का संगीत कौन सुने,

तू– तू, मैं– मैं की मारा–मारी में
अंतः क्रंदन की गूँज कौन सुने,

हाँ, अतिव्यक्ति अब एक नव सत्य है
पर अभिव्यक्ति भी तो आदि तथ्य है,

वह मौन नहीं स्वयं शक्त है
वाचक, गूढ़, अनंत है,

विनीत कुमार

हास्य, संगीत, साहित्य, नृत्य आदि से संतृप्त
पर, हम में होकर, कुछ हमसे ही विरक्त,

चलो, किंचित अभिव्यक्ति को भी व्यक्त करें
कुछ तो अतिव्यक्ति को अव्यक्त करें,

नव ध्वनियों, विधाओं का संचार–प्रचार करें
थोड़ा स्वयं का भी संस्कार से सत्कार करें,

अतिव्यक्त नहीं अभिव्यक्त करें
अब समय है, अभिव्यक्ति को व्यक्त करें ।

अभियंता (अनुरक्षण एवं सेवाएँ)
सीएफएफपी, हरिद्वार

आलेख

प्रसन्नता

डी एन बाजपेयी

मानव जीवन अनुपम है, उसे सृष्टि की सर्वोत्तम कृति माना गया है। उसमें इतना कौशल भरा पड़ा है जिसकी अन्य किसी से तुलना नहीं हो सकती, उसे इतने संसाधन उपलब्ध हैं मानों प्रकृति ने माता की तरह सारा स्नेह उसी पर न्योछावर कर दिया है।

जीवन को प्रगतिशील और प्रसन्नता से भरा रखने के कुछ मोटे नियम हैं, इतने मोटे और सर्वविदित है कि उन्हें सीखने और जानने के लिए किसी विद्यालय में प्रवेश लेने, कोई धर्मशास्त्र पढ़ने या किसी सदगुरु को ढूंढने की आवश्यकता नहीं है। इन नियमों को दुर्मतिजन्य दुर्गति से ग्रसित लोगों को देखकर तथा प्रसन्न और सफल लोगों के बीच पाए जाने वाले अन्तर से सहज ही समझा जा सकता है। प्रसन्नता एक मानसिक गुण है जो थोड़े दिनों के अभ्यास एवं आदत में समाहित करने पर सहज ही एक सामान्य आदत के रूप में विकसित हो जाती है। जैसे दर्पण के सम्मुख खड़े होकर अपने मुस्कराते हुए, खीझते हुए और खिन्न निराश चेहरे को देखकर सहजता से समझा जा सकता है कि उनके बीच कितना अन्तर है?

कुरूपता या सुंदरता चेहरे की बनावट पर निर्भर नहीं है, कोई कुरूप भी प्रसन्न स्थिति में फूल जैसा सुंदर लग सकता है। कोई सुंदर भी उदास एवं निराश स्थिति में इसके विपरीत होगा। प्रसन्नतापूर्वक जब कोई अपने विचार व्यक्त करता है तो उसमें धैर्य, साहस और वाणी में ओज जैसे अनेक गुणों की झलक दिखाई देती है और वह हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहता है।

मुस्कान एक आकर्षण है, जिसमें दूसरे का स्नेह, समर्थन और सहयोग प्राप्त कर लेने की क्षमता है। मुस्कान इस बात की प्रतीक है कि व्यक्ति के अंतरंग क्षेत्र में सदगुणों के भण्डार भरे पड़े हैं। ऐसे व्यक्ति की आँखें चमकती हैं और दिखते हुए दांत उन विशेषताओं का प्रमाण देते हैं जो किसी का जीवन प्रगतिशील एवं सफल होनें की भविष्यवाणी करते हैं। 'अरस्तू' का कहना है – "प्रसन्नता और कुछ नहीं, जीवन जीने की कला का ही दूसरा नाम है। जो व्यक्ति अपने को व्यवस्थित रख सकता है और दूसरों के साथ सद्–व्यवहार बरतने के सिद्धान्त को जानता है, वह सदा मुस्कुराता पाया जाएगा।"

हम अपने उद्देश्य और क्रिया–कलापों में शालीनता का समावेश रखें, जीवन को खिलाड़ी की तरह जिएं, उच्च दृष्टिकोण को अपनाकर काम करें। ऐसे व्यक्ति हारने और जीतने के अभ्यस्त होते हैं और दोनों ही परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखते हैं। संतुलन खोकर जीतना भी बुरा है, हारना तो बुरा है ही। अपनी क्षमता से अधिक अपने हाथ में लिए हुए कामों को भारी न मानें। यदि आप उन्हें तन्मयता से करेंगे तो जीतने की ही अधिक संभावना है।

असफल होने पर भी खिन्न होने की आवश्यकता नहीं है। इससे तो आप भावी सफलता को भी खतरे में डाल देंगे। दुनिया मुस्कराते हुए मनुष्य को मनस्वी, साहसी और पराक्रमी मानती है। जबकि मुंह फुलाए रहने वाले, कठिनाइयों का रोना रोने वाले के बारे में नासमझ या अकर्मण्य होने की धारणा बनती है। आप अपने को बदनाम करें या सफल बनाएं, यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि आप अपने चेहरे को कैसा बनाए रखने के आदी हो चुके हैं।

जो उपलब्ध है, उसका सदुपयोग कीजिए। असफलताओं में अपनी भूल का निरीक्षण कीजिए। दूसरों पर दोष थोपने के बजाय, जहां पर इस बार चूक हुई है उसकी भविष्य में पुनरावृत्ति न हो इसका प्रयास करें। जो बीत चुका है उससे शिक्षा ग्रहण करें। सामाजिक बनिए, सबके साथ मिल–जुल कर रहने और सुख–दुःख मिल बांटकर जीने की आदत बनाइए। जो एकाकी रहते हैं और दूसरों से डरते या कतराते हैं उन्हें स्वार्थी या डरपोक समझा जाता है। अच्छा यही है कि स्वयं प्रसन्न रहा जाये और उस दैवीय सम्पदा को अधिकाधिक लोगों में वितरित किया जाए। हमको यह स्वीकार करना चाहिए कि "प्रसन्नता" एक ऐसा गुण है जो सज्जनों, विधेयात्मक चिंतन करने वालों को अपनी ओर आकर्षित करता है और इसी से मानव विकास का पथ प्रशस्त होता है।

उप अभियंता (डिजाइन)
ट्रांसफॉर्मर प्लांट, झांसी

हिंदी में क्यों नहीं?

गांधीजी ने पौत्र कनु गांधी को बैंक में खाता खोलने के लिए वर्धा भेजा। कनु खाता खोलकर लौटे तो गांधीजी ने पूछा, 'बैंक का फार्म किस भाषा में भरा और दस्तखत किस भाषा में किए?' कनु ने उत्तर दिया–'बापू फार्म अंग्रेजी में भरा। ' गांधीजी ने कहा, 'अंग्रेजी में क्यों भरा? हिंदी में भरना था।'

कनु ने कहा, 'फार्म अंग्रेजी में था और मुझे लगा कि अंग्रेजी में ही भरते होंगे। मेरे दिमाग में आया ही नहीं कि फार्म हिंदी में भी भरे जाते होंगे, सो अंग्रेजी में ही भर दिया।' यह सुनकर गांधीजी ने कहा, 'ठीक है, तुम्हारा दोष नहीं है। अंग्रेजों ने हमारे दिमाग में अंग्रेजी भाषा का भूत इस प्रकार बिठा दिया है कि हम दूसरी किसी भी भाषा के बारे में सोच ही नहीं पाते हैं। बैंक वाले भी सिर्फ अंग्रेजी में ही फार्म छपवाते हैं। खैर, जो हुआ, सो हुआ। भविष्य में ख्याल रखना कि बैंक के साथ किसी भी प्रांतीय भाषा में व्यवहार किया जा सकता है।'

गांधीजी ने कुछ क्षण रूककर अपने हृदय की वेदना को व्यक्त करते हुए कहा– **'कितनी शर्म की बात है कि हम भारतीय विदेशी भाषा के मोह–पाश में बंधे हुए हैं। हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है। प्रांतीय भाषाएं गुजराती, मराठी आदि बहुत अच्छी हैं, समृद्ध हैं। हमें अपनी भाषाओं का ही प्रयोग करना चाहिए।'**

तभी कनु ने संकल्प लिया कि भविष्य में वह केवल और केवल हिंदी का ही प्रयोग करेंगे।

मणि कैलाश यात्राः एक संस्मरण

अरुण सक्सेना

यात्रा महत्व एवं संक्षिप्त परिचय

मणि महेश कैलाशः हिमाचल का दिव्य धाम

हिमाचल प्रदेश की चम्बा घाटी में, बर्फीली चोटियों के बीच विराजमान है – मणि महेश कैलाश, जिसे लोकमान्यता में स्वयं भगवान शिव का ध्यानस्थ रूप माना जाता है। यह भगवान शिव के पंच कैलाश में से एक है। पाँच कैलाश क्रमशः निम्नलिखित हैं:–

1. मानसरोवर कैलाश (तिब्बत)
2. मणि महेश कैलाश (हिमाचल प्रदेश)

3. आदि कैलाश (उत्तराखंड)
4. किन्नौर कैलाश (हिमाचल प्रदेश)
5. श्रीखण्ड कैलाश (हिमाचल प्रदेश)

यात्रा का आरंभ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी) से राधाष्टमी (भाद्रपद शुक्ल पक्ष की अष्टमी) तक होता है। इस अवधि में यहाँ भव्य यात्रा और मेला आयोजित होता है। हजारों श्रद्धालु कठिन पर्वतीय मार्गों को पार कर झील तक पहुँचते हैं और पवित्र स्नान कर अपने पापों का क्षय तथा मोक्ष की कामना करते हैं।

मणि महेश कैलाश केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि श्रद्धा, तपस्या और भक्ति का ऐसा संगम है, जहाँ पहुँचकर भक्त स्वयं को शिवमय अनुभव करता है। यहाँ स्थित मणि महेश झील (शिव कुंड) के शांत जल में कैलाश पर्वत की परछाईं झलकती है, मानो शिव का आशीर्वाद स्वयं उतर आया हो।

यात्रा वृत्तांत

मुझमें और मेरे मित्रों के बीच केवल मित्रता का ही रिश्ता नहीं है, बल्कि हम सबको जोड़ने वाली एक और गहरी डोर है – भोलेनाथ से नाता। हम सब अलग–अलग शहरों से आते हैं – कोई रुद्रपुर से, कोई लखनऊ से, कोई सीतापुर से, तो कोई ग्वालियर से। भौगोलिक दूरी भले ही हमें अलग करती हो, लेकिन महादेव की भक्ति हमें हमेशा एक सूत्र में पिरोए रखती है।

पिछले तीन वर्षों से हमारे मन में एक ही अभिलाषा थी–मणि महेश कैलाश की पावन यात्रा।

सन् 2022 में हमने उत्साहपूर्वक ट्रेन की टिकटें तक बुक करवा ली थीं, परंतु नियति को कुछ और ही मंजूर था। पहाड़ों पर अत्यधिक वर्षा होने के कारण हमें अपनी यात्रा रोकनी पड़ी और टिकटें रद्द करवानी पड़ीं। वह क्षण हमारे लिए निराशाजनक अवश्य था, किंतु आस्था की लौ बुझी नहीं।

यह यात्रा केवल भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक ही संपन्न होती है। समय सीमित होने और परिस्थितियों के कारण हमें पूरे दो वर्ष और प्रतीक्षा करनी पड़ी। प्रतीक्षा लंबी थी, परंतु मन में विश्वास था कि जब शिव की कृपा होगी तभी बुलावा आएगा।

और इस बार वर्ष 2025 में हमारे हृदय में दृढ़ संकल्प था और साथ ही भोलेनाथ का आशीर्वाद भी। यही कारण था कि हमारा उत्साह दुगुना हो उठा। हम सब मित्र, अपनी–अपनी तैयारी पूरी कर, मन में अपार श्रद्धा लिए, अंततः निकल पड़े उस यात्रा पर, जिसे हम कई वर्षों से अपने हृदय में संजोए बैठे थे।

पहला दिन : 14 सितम्बर 2025 (रविवार)–मुरादाबाद से प्रस्थान

रात्रि के लगभग ग्यारह बजे मैं मुरादाबाद स्टेशन पहुँचा। रुद्रपुर से सौ किलोमीटर की दूरी तय करके आया था, पर थकान से अधिक मन में उत्साह उमड़ रहा था। प्लेटफॉर्म की चहल–पहल, अनाउंसमेंट की आवाज और इधर–उधर भागते यात्रियों के बीच मैं अकेला–सा खड़ा था, लेकिन भीतर से मुझे ऐसा लग रहा था मानो किसी अनदेखी शक्ति ने मुझे बुलाया हो। यह यात्रा किसी पर्यटन की नहीं थी–यह स्वयं भोलेनाथ के दरबार की ओर प्रस्थान था।

स्टेशन पर खड़ा–खड़ा मैं उन छः साथियों की प्रतीक्षा कर रहा था जो लखनऊ से सीधे ट्रेन में आने वाले थे। सोच रहा था–"कब मिलूँगा उनसे, कैसी होगी हमारी यह सामूहिक यात्रा?" अचानक सीटी बजती है और ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आकर रुकती है। धड़धड़ाते पहिए थमते हैं और मैं अपने डिब्बे की ओर बढ़ता हूँ।

कोच में प्रवेश करते ही मुझे परिचित चेहरे दिखाई दिए। "अरे, आ गए आप! अब तो मजा आएगा," एक साथी ने मुस्कराकर कहा। मैंने भी प्रसन्न होकर उत्तर दिया, "हाँ, अब तो शिव की बारात पूरी हो गई।" सबके चेहरों पर उल्लास था, जैसे हम किसी साधारण सफर पर नहीं, बल्कि किसी अनूठे आध्यात्मिक अभियान पर निकले हों।

बैठते ही खिड़की के बाहर निगाह गई। बाहर घना अंधेरा पसरा था, बीच–बीच में कोई ढाबे की रोशनी या दूर जाती ट्रेन की चमक दिखाई देती थी। डिब्बे के भीतर बातचीत का सिलसिला चल पड़ा। किसी ने यात्रा की तैयारी का किस्सा सुनाया, तो कोई हँसते हुए बोला, "देखना, पहाड़ पर चढ़ाई में सबसे पहले कौन हार मानता है।" इस मजाक पर सब ठहाका लगाते हैं।

धीरे–धीरे रात गहराने लगी। ट्रेन अपनी गति से भागती रही। डिब्बे में हल्की नींद और बातचीत का मिला–जुला माहौल था। खिड़की से बहती ठंडी हवा चेहरे को छू रही थी। आँखें झपकने लगतीं, पर भीतर एक अजीब–सी बेचैनी बार–बार जगाती थी–कब भोर होगी, कब पठानकोट आएगा, कब शुरू होगी असली यात्रा?

उस रात ऐसा लग रहा था जैसे समय भी मेरे साथ इस पावन यात्रा की प्रतीक्षा कर रहा हो।

दूसरा दिन : 15 सितम्बर 2025 (सोमवार)–पठानकोट से हडसर तक

सुबह ठीक 9:30 पर ट्रेन पठानकोट पहुँची। जैसे ही प्लेटफॉर्म पर कदम रखा, ठंडी और ताजा हवा का झोंका मिला–मानो हिमालय ने बाँहें फैलाकर स्वागत किया हो। सबके चेहरों पर मुस्कान थी, थकान कहीं गायब हो चुकी थी। स्टेशन के बाहर गरमा गरम चाय और नाश्ते ने ऊर्जा भर दी।

हम नौ यात्री थे। यदि सार्वजनिक वाहनों से जाते तो हमें तीन हिस्सों में सफर करना पड़ता–पहले पठानकोट से चंबा, फिर चंबा से भरमौर, और अंत में भरमौर से हडसर। यह न सिर्फ समय खा जाता, बल्कि शरीर को भी थका डालता। इसलिए पहले से ही हमने 14–सीटर ट्रैवलर बुक कर रखा था। लगभग 22,500 रुपये का किराया, यानी 2500 रुपये प्रति व्यक्ति। तय हुआ कि आने वाले पाँच दिनों तक यही ट्रैवलर हमारा साथी बनेगा।

गाड़ी में बैठते ही माहौल हल्का हो गया। किसी ने मजाक किया, "ये

गाड़ी तो अब बारात लेकर जा रही है, भोलेनाथ की बारात!" सब जोर से हँस पड़े। खिड़की से बाहर झांकते हुए पहाड़ी घुमावदार रास्तों और दूर तक फैली हरियाली को देखते हुए दिल और भी हल्का हो गया।

रास्ते में ढाबों पर चाय और पराठों का स्वाद लिया। धीरे–धीरे हम चंबा पहुँचे। संकरी गलियाँ, प्राचीन मंदिरों की घंटियाँ और चारों ओर बिखरी हरियाली ने स्वागत किया। ऐसा लगा जैसे शहर अपने आप में कोई पवित्र कथा सुनाता हो।

शाम ढलते–ढलते हम भरमौर पहुँचे। यह वही जगह है जिसे प्राचीन काल में ब्रह्मपुरा कहा जाता था। यहाँ का मुख्य मंदिर भरमाणी माता का है–अष्टमातृकाओं में प्रथम, जिन्हें सृष्टि की मूल ध्वनि माना गया है। इस मंदिर की सबसे अनोखी बात यह है कि यहाँ देवी की पीठ की पूजा की जाती है।

हमने वहीं से स्थानीय जीपें लीं–प्रति यात्री लगभग 150 रुपये किराया। जीपें हमें 4–5 किलोमीटर ऊँचाई पर स्थित भरमाणी माता मंदिर तक लेकर गईं। चढ़ाई के दौरान हेडलाइट्स की रोशनी में रास्ता और भी रहस्यमय लग रहा था।

मंदिर पहुँचकर पहले पवित्र कुंड में स्नान किया। ठंडा पानी शरीर में कंपकंपी भर देता, लेकिन भीतर एक अद्‌भुत शांति भी उतर आती। फिर देवी के दर्शन किए। रात के ग्यारह बज चुके थे, जब हम वापस भरमौर पहुँचे और बिना रुके हडसर की ओर चल दिए।

यहीं पर हमसे एक भूल हो गई। हमें भरमौर में ही विश्राम करना चाहिए था, लेकिन हम आगे बढ़ गए। अर्धरात्रि के समय जब हडसर पहुँचे तो वहाँ जन्माष्टमी का उत्सव और यात्रियों की भारी भीड़ थी। छोटा–सा कस्बा यात्रियों से खचाखच भरा हुआ था। एक साथी ने निराश होकर कहा, "अब कहाँ मिलेगा ठहरने का स्थान?" सबने इधर–उधर ढूँढा, पर कोई जगह न मिली। अंततः हमें ट्रैवलर में ही रात बितानी पड़ी।

तीन–चार घंटे जैसे–तैसे गाड़ी में गुजरे। खिड़की से बाहर झांकते तो दूर से "हर हर महादेव" के जयकारे गूंजते सुनाई देते। सुबह के चार बजे तक पूरा वातावरण शिवमय हो चुका था। लगता था मानो हर घर, हर आँगन, हर पेड़–पौधा महादेव के नाम से जाग उठा हो।

अगले दिन की कठिन चढ़ाई अब हमारे सामने थी।

तीसरा दिन : 16 सितम्बर 2025 (मंगलवार) – हडसर से धंछो

सुबह अभी अंधेरा पूरी तरह छँटा भी नहीं था कि हम सब तैयार हो गए। बैग हल्का कर लिया, केवल जरूरी सामान ही रखा। मन में जोश था, पर भीतर कहीं एक हल्की–सी घबराहट भी। "अब शुरू होगी असली यात्रा," मैंने मन ही मन कहा।

हडसर से आगे का रास्ता मानो किसी परीक्षा–स्थल जैसा था। शुरुआत में ही खड़ी चढ़ाई सामने आ खड़ी हुई। साँसें तेज होने लगीं, कदम भारी होने लगे। रास्ता खड़ी चढ़ाई लिए था। कई जगहों पर घोड़े और खच्चर भी दिखे, पर अधिकतर यात्री पैदल ही आगे बढ़ रहे थे।

कभी झरनों की कलकल से मन तरोताजा होता, कभी घने पेड़ों की छाँव कुछ पल का सुकून देती, तो कभी पथरीले और सँकरे मोड़ चुनौती की तरह सामने आ खड़े होते।

बारिश बीच–बीच में अपने रंग दिखाती रही। कभी हल्की फुहारें, कभी तेज बौछारें। पहाड़ी रास्ता कीचड़ से भर गया था। जूते फिसलते, कपड़े गीले होते, लेकिन जैसे ही कहीं से "हर हर महादेव" की गूँज सुनाई देती, थकी आत्मा में फिर से जोश भर जाता। लगता जैसे स्वयं शिव हमारे कदमों को थामे हुए हैं।

आधिकारिक तौर पर यह रास्ता 14–15 किलोमीटर माना जाता है, पर सच कहूँ तो मुझे यह लगभग 21–22 किलोमीटर का लगा। हर मोड़, हर चढ़ाई जैसे लंबी खिंचती जाती थी।

रास्ते की एक खास बात मन को बार–बार छू जाती। हर 3–4 किलोमीटर पर विभिन्न संस्थाएँ और समूह यात्रियों के लिए भंडारे और विश्राम स्थल लगाए हुए थे। गर्म–गर्म चाय, खिचड़ी, पूड़ी, हलवा–सब कुछ निःशुल्क। और वह भी इतनी ऊँचाई, इतनी कठिन परिस्थितियों में! किसी अजनबी का हमें प्लेट पर खाना बढ़ाना उस क्षण ईश्वर की सेवा से कम नहीं लगता था।

स्थानीय लोग छोटी–छोटी दुकानें भी लगाए थे। बिस्कुट, जूस, रेनकोट, यहाँ तक कि जूते–मोजे भी मिल जाते, हालाँकि कीमतें मैदानों से 2–3 गुना होतीं। लेकिन इतनी दुर्गम जगह पर वस्तुओं की उपलब्धता ही आश्चर्यजनक थी।

लगभग 6–8 किलोमीटर की कठिन पदयात्रा के बाद हम धंछो पहुँचे। शाम ढल चुकी थी, शरीर टूट चुका था, पर मन में पहुँचने की खुशी और संतोष था। वहाँ यात्रियों के लिए बनाए गए निःशुल्क शिविर थे। हमने वहीं ठहरने का निर्णय लिया।

रात को ठंडी हवाएँ चेहरे को छू रही थीं। थकान मिटाने के लिए भंडारे में सात्विक, गरम और आत्मा तक को तृप्त करने वाला भोजन मिला। सबने भोजन के बाद मिलकर भजन गाए, शिव का स्मरण किया। उस रात नींद तंबू में नहीं, बल्कि महादेव की गोद में आई।

चौथा दिन : 17 सितम्बर 2025 (बुधवार)–धंछो से गौरी कुंड और फिर मणि महेश झील

सुबह की ठंडी हवा मानो आत्मा तक उतर रही थी। धुंध से ढके पहाड़ और उन पर धीरे–धीरे फिसलते बादल... यह दृश्य किसी स्वप्न जैसा था। साथियों के चेहरों पर थकान थी, लेकिन आँखों में उस दिव्य झील तक पहुँचने का उत्साह भी साफ झलक रहा था।

धंछो से आगे बढ़े तो लगभग 2 किलोमीटर बाद एक पुल मिला। नीचे प्रचंड वेग से बहता झरना, जिसकी कलकल ध्वनि कानों में पड़ते ही तन–मन को ताजगी से भर देती। सबने वहीं रुककर झरने का शीतल जल लिया। किसी ने चेहरे पर छींटे डाले, किसी ने सीधे दोनों हथेलियों से पीकर कहा "वाह! ये पानी तो सच में अमृत है।"

पुल पार करते ही "शिव घराट" दिखाई दिया। मान्यता है कि कान लगाकर सुनो तो भीतर से चक्की की आवाज आती है। हम सब भी ठहर गए। सचमुच, जैसे कोई चक्की घूम रही हो–मन में यह भाव उमड़ा कि "गौरी माँ स्वयं अपने परिवार के लिए आटा पीस रही हैं।" यह अनुभव रोमांच से भर देने वाला था।

कुछ दूरी पर जब मार्ग संकेतक पर "गौरी कुंड–4 किलोमीटर" लिखा देखा, तो आँखें अनायास ही चमक उठीं। लगा जैसे माता स्वयं बुला रही हों।

दोपहर के बाद रास्ता और कठिन होता गया। साँसें तेज, कदम भारी, पर मन हल्का। जब पहली बार झील का दृश्य सामने आया, तो तन अपने आप नतमस्तक हो गया। शांत, गहरी, दिव्य झील... चारों ओर गूँजते जयकारे... उस क्षण लगा कि जीवन का उद्देश्य बस यही क्षण था।

गौरी माता को प्रणाम कर आगे बढ़ा। अब केवल डेढ़ किलोमीटर का रास्ता शेष था। माता का आशीर्वाद पाकर पाँव जैसे स्वयं ही उड़ रहे थे। और सामने–मणि महेश कैलाश की चोटी पर हिम से बना अद्भुत दृश्य। प्रकृति स्वयं भोलेनाथ की लीला रच रही थी। सफेद बर्फ पर स्पष्ट आकार–ऊँ की आकृति और अर्धचंद्र।

मैं आपसे एक अद्भुत संस्मरण बाँटना चाह रहा हूँ ये आपके ऊपर निर्भर है कि आप इसे कैसे देखते है, समझते हैं क्यूंकि "हरि अनंत हरि कथा अनंता, कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता"। हुआ यह कि आज पूरे दिन भी हल्की बारिश और धुंध ही थी जब हम गौरी कुंड से शाम 6 बजे आगे बढ़े तब भी मौसम पूरी तरह से साफ नहीं था। मणि महेश पर्वत की चोटी पर भी शाम गहराने के कारण हल्का हल्का अंधेरा सा ही था, शाम सात बजे का समय था हम लोग शिव कुंड के पास ही थे आरती शुरू होने वाली थी डमरू वादन शुरू हुआ और तभी अचानक मणि महेश पर्वत पर धूप खिल उठी सूर्य की रोशनी से पूरा पर्वत चमकने लगा, एवं उसके बाद हम सभी को अलग– अलग दर्शन हुये, पर्वत में ही भगवान शिव और माता पार्वती की आकृति साथ मे उभरती हुई दिखी, ऐसा लगा साक्षात भगवान ही पर्वत पर उतर आये हों,

सभी यात्रियों की आँखें उस दिशा में टिक गईं।

किसी ने कहा–"देखो! शिव जी खड़े हैं।"

दूसरे ने उत्साह से पुकारा–"मुझे तो गणेश जी भी दिख रहे हैं।"

किसी ने कार्तिकेय, किसी ने नंदी, और किसी ने पूरा शिव परिवार देखा।

परंतु मुझे भगवान शिव माता पार्वती, वासुकि ऊँ और अर्धचंद्र स्पष्ट दिखा, मेरी आँखों से आँसू बहने लगे मेरे सारे भ्रम मिट गए कि ईश्वर हैं या नहीं, साकार हैं या निराकार, मैं बिल्कुल निःशब्द था। जैसे ही आरती समाप्त हुई, सूर्य पुनः बादलों के पीछे छिप गया। मैंने और मेरे साथियों ने सुबह भी पर्वत को सूर्य कि रोशनी मे देखा परंतु कहीं भी भोलेनाथ और माता पार्वती की या जिनको भी शिव परिवार पूरा दिख रहा था, कुछ भी नहीं दिखा। हाँ हिम से बना हुआ ऊँ और अर्धचंद्र अब भी वहीं थे। भीतर आत्मा अद्भुत शांति से भर गई थी। वह दृश्य आजीवन स्मृतियों में अंकित रहेगा।

उस रात हमने भंडारे में भोजन किया। भीड़ अधिक होने से निःशुल्क शिविर भरे थे, इसलिए किराए का शिविर लिया। साधारण–सा तंबू, 100–200 रुपये का किराया, पर उसमें भी सच्ची शांति थी।

रात को मुझे अचानक साँस लेने में कठिनाई हुई। ऊँचाई पर ऑक्सीजन की कमी थी। घबराकर तुरंत सरकारी मेडिकल शिविर पहुँचा। वहाँ डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा–

"चिंता मत कीजिए, ये पहाड़ की सामान्य बीमारी है। गहरी और धीमी साँस लीजिए।"

उन्होंने दवा दी और सही ढंग से साँस लेने का तरीका समझाया।

तंबू में लौटकर मैंने आँखें बंद कीं और महादेव का स्मरण किया। उसी स्मरण में, धीरे–धीरे नींद आ गई...

पाँचवाँ दिन : 18 सितम्बर 2025 (गुरुवार)–मणि महेश से वापसी

सुबह की ठंडी हवा में जब झील के पास पहुँचा, तो मन फिर से उस अद्भुत शांति में डूब गया। झील का जल निश्चल था, मानो रातभर उसने भी ध्यान साधा हो। सूर्योदय की पहली सुनहरी किरण जब झील के जल पर पड़ी, तो ऐसा लगा जैसे स्वयं कैलाश पर्वत झील में उतर आया हो। पानी पर चमकते प्रतिबिंब ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। हाथ जोड़कर प्रणाम किया, आँखों से आँसू बहे और हृदय में वही भाव उठा–"हे भोलेनाथ, आपका बुलावा बिना कारण नहीं था। यह जीवन अब आपका प्रसाद है।"

स्नान, ध्यान और पूजा के बाद लौटने का समय आया। मन भारी हो रहा था, जैसे कोई अपना घर छोड़कर जा रहा हो। साथियों ने एक–दूसरे को ढाढ़स बंधाया–"चलो, अब शिव जी से विदा लेकर फिर बुलावे का इंतजार करेंगे।"

वापसी की राह शुरू हुई। सब कहते हैं कि उतराई आसान होती है, पर मुझे तो यह चढ़ाई से कहीं अधिक कठिन लगी। हर कदम पर घुटनों में झटका, पिंडलियों में खिंचाव। शरीर थकान से चूर, पर मन भीतर से हल्का था। "अब तो काम पूरा हो गया, बस घर लौटना है"–इन भावों ने कदमों को सहारा दिया।

रास्ते भर जयकारों की गूँज अब भी सुनाई देती रही थी। कहीं यात्रियों का समूह "बम बम भोले" पुकार रहा था तो कहीं कोई थका यात्री बैठकर भोलेनाथ से शक्ति माँग रहा था। रास्ते में फिर भंडारों का स्वाद लिया–गर्म खिचड़ी, चाय, और मुस्कराते चेहरे, लगता था मानो यह पूरी यात्रा केवल पहाड़ नहीं, बल्कि सेवा और श्रद्धा का भी पर्व है।

संध्या तक मेरे सभी साथी हडसर पहुँच गए। परंतु मैं थकान से चूर होकर, हडसर से दो किलोमीटर पहले ही एक शिविर में ठहर गया। बाहर पहाड़ों पर रात उतर रही थी, भीतर तन बोझिल था पर मन संतोष से भरा हुआ।

तंबू में लेटे–लेटे मन ही मन दोहराता रहा–

"जो आया है, वह भाग्यशाली है; और जो फिर बुलावा पाएगा, वह वास्तव में भोलेनाथ का प्रिय है।"

आँखें धीरे–धीरे बंद हो गईं। शरीर विश्राम में था, पर आत्मा अब भी मणि महेश की गोद में ही ठहरी हुई थी।

छठा दिन : 19 सितम्बर 2025 (शुक्रवार)–भराड़ी से हडसर, फिर डलहौजी

सुबह नींद खुली तो शरीर अब भी थका हुआ था, पर मन हल्का और प्रसन्न। भराड़ी की ताजी ठंडी हवा में जब अंतिम बार पीछे मुड़कर उन पहाड़ों को देखा, तो लगा मानो मणि महेश की यात्रा धीरे–धीरे विदाई दे रही हो।

हमने भराड़ी से प्रस्थान किया और दोपहर तक हडसर पहुँच गए। हडसर पहुँचते ही एक अजीब–सी अनुभूति हुई, यह वही स्थान था, जहाँ से सब शुरू हुआ था। अब यह अध्याय पूरा हो चुका था। शिव के दरबार से लौटते हुए मन में संतोष भी था और हल्की सी उदासी भी–"क्या अगली बार फिर बुलावा मिलेगा?"

हडसर से आगे हमारी ट्रैवलर बस तैयार खड़ी थी। सबने बैग रखे और डलहौजी की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में खिड़की से बाहर झाँकते तो हर मोड़ पर बदलते दृश्य मन मोह लेते। कहीं दूर तक फैले देवदार के वृक्ष, कहीं घाटियों में झरनों की गूँज। पहाड़ों की ठंडी हवा चेहरे को छूती तो मन फिर ताजगी से भर जाता।

शाम होते–होते हम डलहौजी पहुँचे। जैसे ही शहर की सीमा में प्रवेश किया, तो ब्रिटिश कालीन इमारतें और उनकी बनावट ने स्वागत किया। साफ–सुथरी सड़कों के दोनों ओर खिले फूल और ऊँचे–ऊँचे चीड़ के पेड़–सब कुछ एक अलग ही दुनिया जैसा था।

स्थानीय बाजार में घूमना भी एक अलग आनंद था। कहीं ऊनी वस्त्रों की दुकानें, कहीं स्थानीय हस्तशिल्प, कहीं गरमा–गरम पकौड़ों और कॉफी की खुशबू। हम सबने बाजार में टहलते–टहलते कॉफी पी और कुछ देर वहीं बैठकर पहाड़ों के दृश्यों का आनंद लिया।

रात को जब होटल की खिड़की से बाहर देखा तो पूरा डलहौजी शांत था। दूर घाटियों में टिमटिमाती बत्तियाँ और ऊपर तारों से भरा आकाश। ऐसा सुकून था कि लगा यह दिन यात्रा की थकान मिटाने के लिए ही मिला हो।

सातवाँ दिन : 20 सितम्बर 2025 (शनिवार) – डलहौजी से पठानकोट और वापसी

सुबह डलहौजी से निकलकर पठानकोट पहुँचे। यहाँ से वापसी की ट्रेन पकड़ी। डिब्बे में बैठते ही मन में बार–बार वही झील, वही कैलाश पर्वत और वही भक्ति–गर्जना गूँजने लगी–"हर हर महादेव!"

यह यात्रा केवल पहाड़ों की नहीं थी, यह आत्मा की यात्रा थी। लौटते समय लगा जैसे हमारे भीतर का कोई बोझ हल्का हो गया हो। यह अनुभव हमेशा याद रहेगा।

अभियंता (वेक्स)
सीएफपी, रुद्रपुर

जीवन की खुशी

छोटी सी ये जिन्दगी हर बात में खुश रहो...
जो चेहरा पास ना हो उसकी आवाज में खुश रहो
कोई रूठा हो तुमसे उसके इस अंदाज में खुश रहो
जो लौट कर नहीं आने वाले उन लम्हों की याद में खुश रहो

दीप्ति सिंह

खुशियों का इंतजार किसलिए, अपनी ही मुस्कान में खुश रहो
क्यों तड़पते हो हर पल किसी के साथ को,
कभी तो अपने आप में खुश रहो
छोटी सी ये जिन्दगी हर बात में खुश रहो...

पत्नी–श्री विजय प्रताप सिंह चौहान
अपर अभियंता (सीएमएम)
पीएस–पीईएम, नोएडा

ग्रीन हाइड्रोजन: कैसे पर्यावरण को स्वच्छ करेगा

आँचल चौधरी

2015 में, संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों द्वारा अपनाया गया सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा, वर्तमान और भविष्य में लोगों और पर्यावरण के लिए शांति और समृद्धि की रूपरेखा प्रदान करता है। इसके केंद्र में 17 सतत विकास लक्ष्य (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स –एसडीजी, नीचे दिए गए चित्र में उल्लेखित) हैं, जो वैश्विक साझेदारी में विकसित और विकासशील सभी देशों द्वारा अनुपालन के लिए एक जरूरी आहवान है। यदि समय रहते हमने प्रदूषण पर नियंत्रण नहीं किया तो यह हमारे अस्तित्व को ही प्रदूषित कर डालेगा, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी खतरा है। सतत् विकास लक्ष्यों में से एक लक्ष्य **सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा** है। सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा से क्या तात्पर्य है? इसका सीधा सा अर्थ है– ऊर्जा स्रोत जो सभी के लिए उपयोग में सस्ता हो और कार्बन तथा अन्य जहरीले प्रदूषकों से मुक्त हो। क्या ऐसे स्थायी समाधान उपलब्ध हैं? ऐसा ही एक विकल्प ग्रीन हाइड्रोजन है।

ग्रीन हाइड्रोजन क्या है?

हाइड्रोजन मुख्यतः तीन प्रकार प्रकार से उत्पन्न होती है:

1. **ग्रे हाइड्रोजन:** यह प्राकृतिक गैस से उत्पन्न होता है और उत्पादन के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन करता है। इसीलिए इसे ग्रे हाइड्रोजन कहते हैं।
2. **ब्लू हाइड्रोजन:** इसमें कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन होता है, लेकिन उत्सर्जित गैस को संग्रहित कर लिया जाता है।
3. **ग्रीन हाइड्रोजन:** यह सबसे स्वच्छ हाइड्रोजन होता है, जिसे वाटर इलेक्ट्रोलिसिस की प्रक्रिया से उत्पादित किया जाता है और इस प्रक्रिया में नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग किया जाता है, जिससे कोई प्रदूषण नहीं होता। ग्रीन हाइड्रोजन एक ऐसा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है जो पर्यावरण के लिए स्वच्छ और सुरक्षित माना जाता है। यह कार्बन मुक्त है और इसे जल को इलेक्ट्रोलिसिस के माध्यम से हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित कर प्राप्त किया जाता है, बशर्ते यह प्रक्रिया नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर और पवन ऊर्जा से संचालित हो।

इलेक्ट्रोलिसिस, वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा रासायनिक परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए किसी पदार्थ के माध्यम से विद्युत धारा प्रवाहित की जाती है। रासायनिक परिवर्तन वह है जिसमें पदार्थ एक इलेक्ट्रॉन खो देता है या प्राप्त कर लेता है (ऑक्सीकरण या कमी)। यह प्रक्रिया एक इलेक्ट्रोलाइटिक सेल में की जाती है, एक उपकरण जिसमें पॉजिटिव और निगेटिव इलेक्ट्रोड होते हैं जिन्हें अलग रखा जाता है पॉजिटिव और निगेटिव रूप से चार्ज किए गए आयनों वाले साल्यूशन में डुबोया जाता है। परिवर्तित किया जाने वाला पदार्थ इलेक्ट्रोड बना सकता है, घोल बना सकता है, या घोल में घुल सकता है। विद्युत धारा (यानी, इलेक्ट्रॉन) नकारात्मक रूप से चार्ज किए गए इलेक्ट्रोड (कैथोड) के माध्यम से प्रवेश करती है, समाधान के घटक इस इलेक्ट्रोड तक जाते हैं, इलेक्ट्रॉनों के साथ जुड़ते हैं, और रूपांतरित (कम) हो जाते हैं। पानी के इलेक्ट्रोलिसिस से हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का उत्पादन होता है। ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन की प्रकिया पर एक नजर डालते हैं।

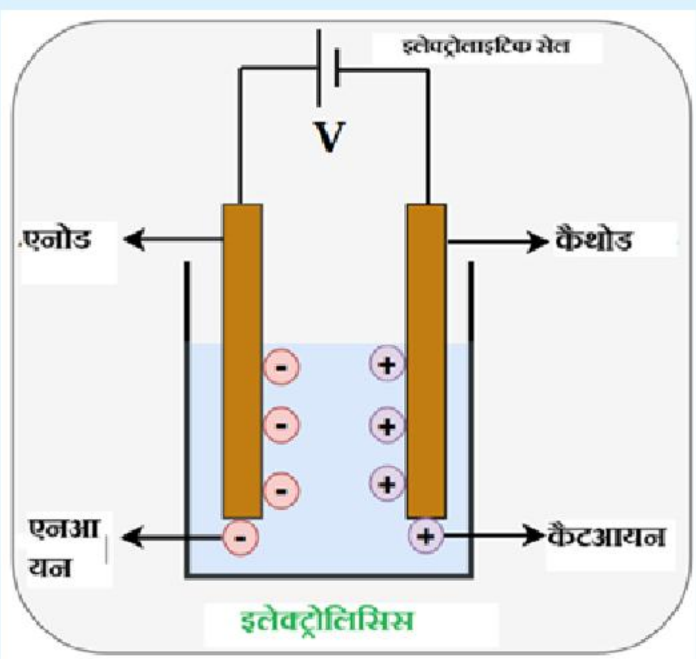

ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन–ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन इलेक्ट्रोलिसिस की प्रक्रिया से किया जाता है। इस प्रक्रिया में जल (H_2O) को हाइड्रोजन (H_2) और ऑक्सीजन (O_2) में विभाजित किया जाता है। इसे संचालित करने के लिए आवश्यक ऊर्जा सौर या पवन जैसी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से आती है। इस प्रक्रिया में कोई कार्बन उत्सर्जन नहीं होता, जिससे यह पारंपरिक ऊर्जा उत्पादन के मुकाबले अत्यधिक स्वच्छ होती है।

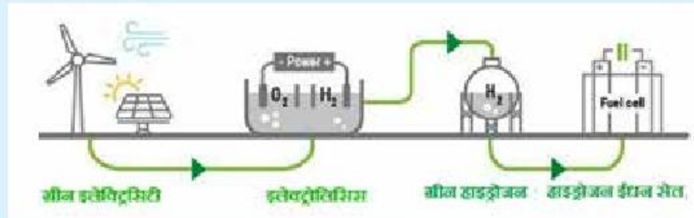

ग्रीन हाइड्रोजन परिवहन में पारंपरिक जीवाश्म ईंधन की जगह ले सकता है, जो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसका उपयोग उद्योग में अमोनिया, मेथनॉल और स्टील के उत्पादन के लिए भी किया जा सकता है, जो वर्तमान में जीवाश्म ईंधन पर बहुत अधिक निर्भर हैं। ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग भारी उद्योग, लंबी दूरी के परिवहन और दीर्घकालिक ऊर्जा भंडारण सहित कई क्षेत्रों में भी किया जा सकता है। वर्तमान समय में, बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के खतरे से निपटने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग अनिवार्य हो गया है। ग्रीन हाइड्रोजन न केवल ऊर्जा का स्वच्छ स्रोत है बल्कि यह पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ग्रीन हाइड्रोजन का पर्यावरणीय प्रभाव

1. **परिवहन क्षेत्र में प्रदूषण में कमी**–ग्रीन हाइड्रोजन से चलने वाले फ्यूल सेल वाहनों में पारंपरिक पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहनों की तुलना में शून्य उत्सर्जन होता है। इस प्रकार, सड़क परिवहन से उत्पन्न वायु प्रदूषण को काफी हद तक कम किया जा सकता है। भारी वाहनों, ट्रकों, बसों और यहां तक कि विमानों में ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग आने वाले वर्षों में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है।

2. **ऊर्जा के क्षेत्र में स्वच्छता**–ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग बिजली उत्पादन, औद्योगिक प्रक्रियाओं और परिवहन के क्षेत्र में किया जा सकता है। यह बिजली संयंत्रों में कोयले और गैस का स्थान ले सकता है, जिससे ऊर्जा उत्पादन के दौरान होने वाले प्रदूषण में कमी आएगी। साथ ही, भारी उद्योगों में हाइड्रोजन का उपयोग कार्बन रहित ऊर्जा स्रोत के रूप में किया जा सकता है। यह विशेष रूप से स्टील और सीमेंट उद्योगों में महत्वपूर्ण हो सकता है, जो बड़े पैमाने पर कार्बन उत्सर्जन करते हैं।

3. **कार्बन उत्सर्जन में कमी**–ग्रीन हाइड्रोजन को जलाने पर केवल जल का उत्सर्जन होता है, जबकि पारंपरिक जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस के जलने पर भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैसों का उत्सर्जन होता है। इन गैसों के कारण वायु प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग इन समस्याओं का समाधान कर सकता है।

4. **शहरों में वायु गुणवत्ता में सुधार**–बड़े शहरों में वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या है। जीवाश्म ईंधनों के स्थान पर ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग करने से, विशेष रूप से परिवहन और बिजली उत्पादन में, वायु गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार होगा। इसके परिणामस्वरूप श्वसन संबंधी बीमारियों, अस्थमा और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं में कमी आयेगी।

ग्रीन हाइड्रोजन की मुख्य चुनौतियाँ

वर्तमान में ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन और वितरण में कुछ चुनौतियाँ हैं–

1. **इंफ्रास्ट्रक्चर का प्रारंभिक अभावः** ग्रीन हाइड्रोजन के उपयोग के लिए आवश्यक व्यापक बुनियादी ढांचा अभी तक उपलब्ध नहीं है। इसके लिए बड़े पैमाने पर निवेश और समय की आवश्यकता होगी।

2. **भंडारण और परिवहनः** हाइड्रोजन एक अत्यधिक ज्वलनशील गैस है, और इसका भंडारण और परिवहन चुनौतियों से भरा है। इसके लिए विशेष तकनीकों और सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है। साथ ही साथ जन–मानस में इसके प्रति जागरूकता भी बढ़ानी होगी, ताकि पेट्रोल व डीजल की भांति लोग इसे सहजता से अपना सकें।

3. **उच्च लागतः** वर्तमान समय में ग्रीन हाइड्रोजन की उत्पादन लागत अधिक है क्योंकि इलेक्ट्रोलिसिस प्रक्रिया में नवीकरणीय ऊर्जा की आवश्यकता होती है, और यह अन्य हाइड्रोजन उत्पादन विधियों की तुलना में महंगा है। हालांकि, जैसे–जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत सस्ते और अधिक कुशल होते जाएंगे, ग्रीन हाइड्रोजन की लागत में कमी आने की प्रबल संभावना है।

भावी संभावनाएँ और बी.एच.ई.एल. की भूमिका

राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के तहत, भारत सरकार देश को हरित हाइड्रोजन उत्पादन और इलेक्ट्रोलाइजर विनिर्माण का वैश्विक केंद्र बनाने का लक्ष्य बना रही है। एमएनआरई ने इलेक्ट्रोलाइजर विनिर्माण और ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए 17,490 करोड़ रुपए की ग्रीन हाइड्रोजन ट्रांजिशन (साइट योजना) के लिए रणनीतिक प्रयास शुरू किया है। एमएनआरई के अनुसार, 2030 तक हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता के साथ 5 एमएमटीपीए कुल स्थापित इलेक्ट्रोलाइजर की क्षमता भारत में 60–100 GW होने का अनुमान है। यह विकास पथ इलेक्ट्रोलाइजर सहित, हाइड्रोजन मूल्य श्रृंखला में विनिर्माण, हाइड्रोजन भंडारण और वितरण समाधान, ईंधन सेल और बॉयोमास आदि के लिए पर्याप्त अवसर खोलता है। साथ ही साथ तेल की बढ़ती मांग के अलावा, विभिन्न उद्योग सहभागियों द्वारा ग्रीन हाइड्रोजन और अमोनिया संयंत्रों में निवेश के प्रस्ताव भी दिये गए हैं।

कॉनफ्रेंस ऑफ पार्टीज (COP 28) समझौता ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, जलवायु प्रभावों के प्रति लचीलापन बनाने और जलवायु संकट को संबोधित करने पर जोर देता है। देश कोयला बिजली पर निर्भर होने के साथ–साथ, भारत की जलवायु कार्य योजना के पांच अमृत तत्वों (पंचामृत) के अनुरूप 2070 तक नेट जीरो देश बनने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़ाने पर भी जोर दे रहा है। भारत सरकार 2030 तक 500 GW RE क्षमता बनाने की योजना बना रही है। नवीकरणीय ऊर्जा को तेजी से अपनाने से प्रोत्साहन मिल रहा है। भारत में सौर ऊर्जा और ऊर्जा भंडारण बाजार के लिए ईवी चार्जर, हाइड्रोजन व्यवसाय आदि जैसे व्यावसायिक क्षेत्रों को बढ़ावा देने पर बल दिया जा रहा है, जहां बीएचईएल विविधता लाने का लक्ष्य बना रहा है।

बीएचईएल का उद्योग क्षेत्र हाइड्रोजन, बैटरी एनर्जी स्टोरेज और ई–मोबिलिटी आदि जैसे आगामी व्यवसायों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। बीएचईएल बैटरी/हाइड्रोजन ईंधन चालित लोकोमोटिव को बनाने के लिए ओईएम/सहयोगियों के साथ भी काम कर रहा है।

बीएचईएल और ग्रीन स्टैट हाइड्रोजन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (जीएचआईपीएल) ने दिनांक 08.08.2023 को 'हाइड्रोजन मूल्य श्रृंखला में ग्रीन हाइड्रोजन और डेरिवेटिव में संभावित सहयोग के अवसर' के

लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता ज्ञापन इस क्षेत्र में भारत को 'आत्मनिर्भर' बनाने के उद्देश्य से देश के 'राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन' में योगदान देने में मदद करेगा।

बीएचईएल ने हाइड्रोजन उत्पादन के लिए 50 Kv क्षारीय इलेक्ट्रोलाइजर प्रणाली के लिए भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) के साथ दिनांक 28.05.2024 को एक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौता (TTA) किया है। बार्क के साथ इस समझौते के माध्यम से बीएचईएल का लक्ष्य स्वदेशी क्षारीय इलेक्ट्रोलाइजर प्रौद्योगिकी को बढ़ाने और रिफाइनरी, उर्वरक, इस्पात, परिवहन इत्यादि जैसे क्षेत्रों में आवेदन के लिए इसका व्यावसायीकरण करना है।

इसके अतिरिक्त बीएचईएल ने 2047 तक नेट जीरो हासिल करने के उद्देश्य से बीएचईएल को हरित कंपनी में बदलने के लिए हरित बीएचईएल (HARIT BHEL) पहल शुरू की है।

भविष्य के लिए बीएचईएल के अनुसंधान और विकास निम्न क्षेत्रों में ध्यान केंद्रित कर रहा हैः

क) विशेष रूप से उच्च राख वाले भारतीय कोयले के लिए कोयला गैसीकरण प्रौद्योगिकी के सफल विकास और प्रदर्शन के बाद, कंपनी सिनगैस से रसायन और हरित ईंधन (मेथनॉल, हाइड्रोजन, आदि) उत्पन्न करने के लिए स्वदेशी तकनीक में सुधार करने के लिए काम कर रही है।

ख) हाइड्रोजन मूल्य श्रृंखला अनुप्रयोगों के लिए उत्पाद और प्रणालियाँ।

संभानाओं और चुनौतियों के बीच

यद्यपि ग्रीन हाइड्रोजन की कुछ चुनौतियाँ हैं, इसके बावजूद यह ऊर्जा के क्षेत्र में क्रांति लाने की क्षमता रखता है। नवीकरणीय ऊर्जा की बढ़ती उपलब्धता और ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन की तकनीकों में सुधार से इसकी लागत में कमी आएगी। साथ ही, सरकारों द्वारा कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए नीतिगत समर्थन और निवेश से ग्रीन हाइड्रोजन का तेजी से विकास संभव हो सकेगा।

विभिन्न देश जैसे जर्मनी, जापान और ऑस्ट्रेलिया पहले से ही ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास कर रहे हैं। भारत में भी, सरकार ने ग्रीन हाइड्रोजन मिशन की घोषणा की है, जिससे हाइड्रोजन के उपयोग को प्रोत्साहन मिलेगा और देश को स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में आगे बढ़ने का मौका मिलेगा।

ग्रीन हाइड्रोजन भविष्य में एक महत्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत के रूप में उभर रहा है, जो न केवल प्रदूषण को कम करने में मदद करेगा बल्कि जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में भी एक प्रभावी हथियार साबित हो सकता है। इसकी स्वच्छता, पुनरुत्पादन क्षमता और विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग की संभावनाओं के कारण यह ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन सकता है। अगर सरकारें, उद्योग और नागरिक इस दिशा में निरंतर सकारात्मक व तेज कदम उठाते हैं, तो हम आने वाले दशकों में एक स्वच्छ, हरित और सुदृढ़ भारत की कल्पना को सच कर दिखा सकते हैं। निश्चित ही ग्रीन हाइड्रोजन में वातावरण स्वच्छ रखने की भरपूर क्षमता है, देर है तो बस तकनीकी सुधार से इसकी लागत कम कर, भंडारण को सहज बनाकर जन–मानस तक ग्रीन हाइड्रोजन पहुंचाने की।

प्रबंधक (सीएमएम)
पीएस–पीईएम, नोएडा

"हम जो कुछ भी हैं वो हमने आज तक क्या सोचा इस बात का परिणाम है। यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे कष्ट ही मिलता है। यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों के साथ बोलता या काम करता है, तो उसकी परछाई की तरह खुशी उसका साथ कभी नहीं छोड़ती।"

– भगवान गौतम बुद्ध

भाषाई उदारता आखिर किस सीमा तक

दिनेश कुमार सोनी

यह एक प्रचलित मत है कि कोई भी भाषा अन्य भाषाओं के शब्दों को स्वीकार एवं आत्मसात करके ही फलती–फूलती है, समृद्ध होती है। संभवतः भाषा के विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया भी यही है। कोई भी शब्द जितना प्रयोग होता है उतना ही सरल लगने लगता है। शब्दों की उत्पत्ति परिवेश सापेक्ष होती है, अर्थात किसी विशेष परिस्थिति, संस्कृति, पर्यावरण, वातावरण, जलवायु और परिवेश में विशेष शब्द निर्मित हो जाते हैं। यही शब्द किसी दूसरी अथवा परिवर्तित परिस्थिति, संस्कृति, पर्यावरण, वातावरण, जलवायु और परिवेश में रहने वाले लोगों के लिए बिलकुल ही अनुपयुक्त और अपरिचित हो सकते हैं, या यूं कहें कि कठिन हो सकते हैं। परंतु जब दो या दो से अधिक विभिन्न संस्कृतियां/प्रकृतियां परस्पर मिलती हैं, तब एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में पहुंच जाते हैं और इनका उपयोग दूसरे भाषा भाषी भी करना प्रारंभ कर देते हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में देखें, तो भाषाई अतिशुद्धतावादी इस प्रकार शब्दों के घालमेल को उचित नहीं मानते और ऐसा करने से परहेज करते हैं। वहीं दूसरी ओर भाषाई उदारवादी इस प्रक्रिया के पक्षधर होते हैं, वे हर भाषा के शब्द अपनाना चाहते हैं। वस्तुतः, इस प्रकार दूसरी भाषा से चलकर आए शब्दों की उपयोगिता और स्वीकार्यता एक सीमा तक स्वागत योग्य होनी चाहिए। इससे भाषा का विस्तार तो होता ही है, किसी परिस्थिति, संस्कृति, पर्यावरण, वातावरण, जलवायु और परिवेश के लोगों को अन्य परिस्थिति, संस्कृति, पर्यावरण, वातावरण, जलवायु और परिवेश को समझने में भी मदद मिलती है।

आज के टेक्नोलॉजी सम्पन्न वैश्विक जगत में कोई भी व्यक्ति भाषा में अतिशुद्धतावादी दृष्टिकोण का समर्थक होने से बचेगा, कमोबेश मेरी भी यही स्थिति है। मेरा मानना है कि अतिशुद्धतावादी दृष्टिकोण भाषा के प्रसार में एक प्रकार की बाधा है। इसलिए हिंदी में अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को स्वीकार करना आज भी एक महती आवश्यकता है।

हिंदी को राष्ट्रभाषा या अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने के लिए यह जरूरी है कि उसकी स्वीकार्यता देश के अंदर, विशेषकर हिंदीतर भाषी राज्यों में, बढ़ाई जाए। भारतवर्ष विभिन्न भाषा, संस्कृति मत और धर्म वाला देश है, यहाँ पर्यावरण, जलवायु, वातावरण और परिवेश कुछ–कुछ दूरी पर ही बदलते रहते हैं। ये सभी कारक किसी भी स्थान विशेष की शब्दावली के निर्धारक तत्व हैं। भारत के संदर्भ में इन कारकों में इतनी परिवर्तनशीलता के कारण यहाँ विभिन्न भाषाओं की और यहाँ तक की एक ही भाषा की शब्दावली अलग–अलग है। ऐसे में अन्य क्षेत्र और प्रांत की भाषा के शब्दों को हिंदी में स्थान देने से निःसंदेह हिंदी को देश की सभी प्रांतीय भाषाओं के निकट ले जाने में अधिक सफलता मिलेगी। जिस प्रकार भारत की लगभग सभी भाषाएँ, खुद को संस्कृत से जोड़कर देखती हैं और उस जुड़ाव में गौरव की अनुभूति करती हैं, उसी प्रकार हिंदी में भी यदि सभी भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को स्वीकार करने और अपनाने की यह प्रक्रिया तेजी पकड़ती है तो हिंदी को देश के उन राज्यों में स्वीकार्यता मिलने लगेगी, जो आज हिंदी को अपनी प्रांतीय भाषा के विरोधी के रूप में देखते हैं। इससे हिंदी राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनने के पथ पर तेजी से आगे बढ़ेगी।

इन सबके बीच हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हमें अपनी भाषा के मूल स्वरूप की भी रक्षा करनी है। यदि हिंदी के शब्दों को नहीं सहेजा जाएगा तो ये शब्द विलुप्त होते जाएंगे। हम सभी ने यह अनुभव किया होगा कि हिंदी में बहुत से अंग्रेजी भाषा के शब्द धीरे–धीरे आते जा रहे हैं, या अतिक्रमण करते जा रहे हैं। अंग्रेजी भाषा के शब्दों का हिंदी भाषा में जबरिया प्रयोग के पक्षधर मानते हैं कि कई आधुनिक उत्पादों का आविष्कार पश्चिम में हुआ है और जब ये उत्पाद भारत में आए तो अपने साथ अपने अंग्रेजी के ही नाम भी लेकर आए, जिन्हें हमें उसी रूप में अपनाना होगा। सही है! वैसे भी किसी नाम का रूपान्तरण करना उचित नहीं। हमने कई शब्दों को इस प्रकार हिंदी में अपनाया भी है, जैसे मोबाइल, कंप्यूटर, टाई, कोट, टीवी, टेलीफोन आदि आदि। अब इनके हिंदी नाम गढ़ना केवल निरर्थक प्रयास ही होगा। अंग्रेजी या अन्य किसी विदेशी भाषा के शब्दों के हिंदी पर्याय की आवश्यकता तभी उत्पन्न होती है जब उसके प्रयोग से कथ्य में किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न होने की आशंका या संभावना हो।

हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि इस तरह उदारता दिखाते–दिखाते कहीं हम "हिट विकेट" न हो जाएँ। ये सोच तब आयी जब मैंने किसी मम्मी को अपने छोटे से बच्चे को यह बोलते हुए सुना कि "बेबी एक बाइट और फिनिश कर लो"। तब विचार आया कि हिंदी में उदारता तो अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसे लग रहा है। अब हो ये रहा है कि दूसरी भाषाओं के शब्दों को स्वीकारने की प्रक्रिया में अपनी भाषा के शब्दों की उपेक्षा होती चली जा रही है।

आज अंग्रेजी जैसी अन्य भाषाओं के शब्दों के प्रति आकर्षण में हम अपनी भाषा के सरल शब्दों को भी अंग्रेजी के शब्दों से प्रतिस्थापित करते जा रहे हैं। हम दूसरी भाषा के शब्दों को तो स्वीकार करें लेकिन उन्हें अपनी भाषा के शब्दों का स्थान न दें। भाषाई उदारता तभी दिखनी चाहिए जब कोई शब्द हमारी भाषा में नहीं है, हमारे परिवेश, पर्यावरण, वातावरण और संस्कृति में नहीं हैं। किंतु यदि हमारे पास जो प्रचलित व अच्छे शब्द पहले से ही हैं उनकी जगह पर हम दूसरी भाषा और विशेषकर अंग्रेजी भाषा के शब्दों को प्रयोग न करें। इससे हिंदी के शब्दों का प्रयोग कम हो

जाएगा और वे धीरे–धीरे दुरूह हो जाएंगे और फिर विलुप्त हो जाएंगे, और हो भी रहे हैं। जो शब्द प्रयोग से बाहर हो जाते हैं उनका अर्थ आम जनता की समझ में नहीं आता और इस प्रकार वे दुरूह होते हुए विलुप्त हो जाते हैं फिर उनका अर्थ समझने के लिए हमें खुद शब्दकोश का सहारा लेना पड़ता है। जैसे बचपन में मैं "भात" खाया करता था, धीरे– धीरे वही "भात" "चावल" हो गया और अब वह भात केवल "राइस" हो चुका है। आज यदि किसी के मित्र या अतिथि के साथ भोजन करते समय खाने के लिए भात मांग लिए जाए तो लोग ऐसे देखते हैं, जैसे मैंने कोई अपराध कर दिया हो।

आज कल टीवी, सोशल मीडिया और प्रिन्ट मीडिया में आम बोल–चाल की भाषा में जिस प्रकार अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के शब्दों को जबरन डाला जा रहा है, वह चिंता का विषय है। इस विषय पर भारत सरकार, सभी हिंदी भाषी विद्वानों और हिंदी प्रेमियों को विचार कर सार्थक प्रयास करना चाहिए। प्रशासनिक और साहित्यिक हिंदी का भी यही हाल होने लगा है।

आज कल सभी को 'प्रॉब्लम' ही होती है 'समस्या' नहीं होती है। 'बाजार' तो कोई जाता ही नहीं, सब 'मार्केट' जाने लगे हैं। अब हमारे 'भाई बहन' नहीं रहे अपितु 'सिब्लिंग्स' बन गए हैं। हमारे 'माता–पिता' अब 'पेरेंट्स' बन चुके हैं, 'माँ' जैसा पावन शब्द भी "मॉम" से प्रतिस्थापित हो चुका है। कभी–कभी तो लगता कि 'धर्मपत्नी' के 'बीबी या वाइफ' तथा पति के 'हसबैन्ड" बनने के बाद से ही विवाह टूटने के प्रकरण बढ़ गए हैं। आज यदि समाचार चैनल में 'सर्वोच्च न्यायालय' बोला जाए तो लोगों को बहुत आश्चर्य होता है, तो बहुत से लोग समझ ही नहीं पाते कि ये है क्या चीज, क्योंकि सभी को समाचार में या कहीं और इसे 'सुप्रीम कोर्ट' ही सुनने और लिखने की आदत हो गई है उसी प्रकार 'उच्च न्यायालय' को 'हाईकोर्ट' लिखने और पढ़ने के आदी होते जा रहे हैं। फेसबुक के आने के बाद तो अब 'चेहरा' भी 'फेस' बन गया है और 'शरीर' 'बॉडी' जिसमें 'दर्द' नहीं 'पेन' होता है। और तो और मरने पर भी 'मृत्यु' या 'स्वर्गवास' के स्थान पर 'डेथ' या 'एक्सपायर' जैसे शब्द उपयोग होते हैं। लोग अब 'बीमार' नहीं होते बल्कि 'सिक' होते हैं और 'संक्रमण' नहीं 'इंफेक्शन' होता है।

आज जीवन का कोई भी क्षेत्र हो वहाँ हिंदी के प्रचलित शब्दों के स्थान पर अँग्रेजी या अन्य भाषा के शब्द अतिक्रमण करते जा रहे हैं। क्रिकेट में 'गेंद' व 'बल्ला' के स्थान पर 'बॉल' और 'वापसी' को 'कम बैक' कहा जाने लगा है। 'सुबह की सैर' 'मॉर्निंग वॉक' बन गई है, असफलता 'सेट बैक' हो गई है। 'अध्यापक या शिक्षक', 'प्राचार्य' और 'विद्यालय' सब खत्म, अब केवल 'टीचर', 'प्रिंसिपल' और 'स्कूल' चलेगा। नियम व शर्तें लागू' जैसे सरल वाक्यांश के स्थान पर 'टीएंडसी एप्लाई' जैसा जटिल वाक्यांश लिखना पसंद किया जा रहा है। रंगों के नाम हों या सप्ताह के दिनों के नाम या हिंदी के अंक सभी अब लोगों के लिए अनजान से होते जा रहें हैं। 'थैंक्स' या 'थैंक यू', गुड मॉर्निंग, मिस्टर, मिसेज, हेल्प, कंसर्न, फैमिली, बिहेवीयर, कंट्रोल, एग्जाम, वियर्ड, सिचुएशन, फेहरिस्त और न जाने ऐसे कितने शब्द जिनके लिए हिंदी में पहले से ही प्रचलित शब्द हैं, फिर भी उनके स्थान पर इस प्रकार अन्य भाषा के शब्दों का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है। देखने वाली बात है कि न तो ये शब्द किसी दूसरी संस्कृति या परिवेश से आयातित हैं और न ही हिंदी में इनके सहज सुलभ नाम अनुपलब्ध हैं, फिर भी इनका प्रयोग बढ़ता जा रहा है।

ये अतिक्रमण केवल शब्दों तक सीमित नहीं हिंदी के वाक्यों का भी स्वरूप बदलता व बिगाड़ता जा रहा है। एक वाक्य देखिए– "मेरे बेस्ट फ्रेंड कि मदर सुपर कुक हैं"। एक समाचार का अंश देखिए –"कमिश्नर ने सभी ऑफिसर्स को लॉ एंड ऑर्डर मेंटेन करने के लिए जरूरी स्टेप लेने की एडवाइस दी"। अब इन जैसे वाक्यों में हिंदी बची कहाँ?

मन में कुछ प्रश्न उठते हैं। क्या इन जैसे अंग्रेजी शब्दों के लिए सुपरिचित एवं प्रचलित हिन्दी शब्द नहीं हैं? आज सरल, सहज और सुबोध हिंदी शब्दों के बजाय अंग्रेजी शब्दों को वरीयता क्यों दी जा रही है? क्या ऐसा करने से हिन्दी भाषी लोगों की अभिव्यक्ति से हिन्दी के सदा से प्रचलित शब्द गायब नहीं हो रहे हैं? क्या हम 'टेंपल' के स्थान पर मंदिर नहीं जा सकते? "फोन डिस्कनेक्ट करने के बजाए "फोन काट' या "फोन रख दिया" नहीं कह सकते? हम अपने बिजली के उपकरण 'चालू' भी तो कर सकते हैं उसे 'ऑन' ही क्यों किया जाता है? कुल मिलाकर तथ्य यह है कि इस प्रकार के हजारों शब्द हैं जो हमारे पास अपनी भाषा में विद्यमान हैं, प्रचलन में हैं, जिन्हें बोलने और समझने में कोई समस्या नहीं है किंतु हमने उनके समतुल्य अंग्रेजी के पयार्य ढूँढ लिए हैं और धड़ल्ले से उनका प्रयोग करने में अपने को आधुनिक समझ रहे हैं। समस्या यह है कि हम अपने भाषाई गौरव के प्रति उदासीन हो गए हैं और अपनी भाषा के प्रति श्रेष्ठता या सम्मान का भाव नहीं रखते।

इस परिप्रेक्ष्य में उदारवादियों का अपना तर्क है कि यदि इन अंग्रेजी के शब्दों को सब आसानी से समझ लेते हैं तो उन्हें प्रयोग करने में क्या हानि है? मैं इस लेख के प्रारंभ में ही कह चुका हूँ कि मैं भाषा की अतिशुद्धता का पक्षधर नहीं हूँ किंतु मैं इस बात का भी पक्षधर नहीं हूँ कि हम अपनी भाषा के प्रति आत्मगौरव का भाव भी न रखें। हमें अपनी भाषा के शब्दों के प्रयोग को प्राथमिकता तो अवश्य देनी चाहिए। जहाँ ऐसा करने में कठिनाई है, शब्द दुरूह हैं या जहाँ हमें शब्द गढ़ने की आवश्यकता पड़ती है, वहाँ हमें दूसरी भाषा के शब्दों को अपना लेना चाहिए। हम शाखाओं को मजबूत करें किंतु जड़ों की उपेक्षा कदापि न करें।

हिंदी को समृद्ध करने के लिए अंग्रेजी के अंधाधुंध प्रयोग का पक्ष लेते समय हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भाषा समृद्धि के नाम पर हम अपनी परंपरा और संस्कृति को नष्ट तो नहीं कर रहे। स्वयं अंग्रेजी भाषा ने दुनिया की अनेक भाषाओं की शब्द संपदा को स्वीकार किया है किंतु अपनी संस्कृति और परंपरा की कीमत पर नहीं, न ही उन्होंने इसके लिए अपने प्रचलित शब्दों का त्याग किया है। हम भारतवासी

अपने चाचा, मामा, फूफा आदि को अंकल कहने लगे किंतु अंग्रेजों ने ताऊ, ताई, बुआ, फूफा, मामा, मामी जैसे रिश्तों के लिए हिंदी के शब्दों को स्वीकार नहीं किया। अंग्रेजों को छोड़िए, किसी ने भी कभी अँग्रेजी वाक्य में हिंदी शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे "I feel privileged to have this suavsar (सुअवसर)" बिल्कुल नहीं! कदापि नहीं! इस प्रकार के वाक्य न ही कोई बोल सकता है न लिख सकता है। जैसे हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में हिंदी शब्दों के साथ उनके अँग्रेजी पर्याय कोष्ठक में लिखे होते हैं। उसी प्रकार अँग्रेजी की पाठ्य पुस्तकें में क्यों नहीं होता? जिस प्रकार हम हिंदी बोलते समय 'बट', 'एंड', 'यू नो', 'ऑलरेडी' का प्रयोग करते हैं उसी प्रकार अंग्रेजी बोलते हुए बीच बीच में हिंदी के शब्दों का प्रयोग नहीं करते, आखिर क्यों? हम अंग्रेजी की शुद्धता की इतनी चिंता क्यों करते हैं और वहीं अपनी भाषा की शुद्धता के साथ घातक समझौता करने में हमें कोई संकोच क्यों नहीं होता?

अंग्रेजी के आकर्षण का सबसे बड़ा और घातक विकृत रूप इससे भी भयावह है अब लोग विशेषकर अँग्रेजी माध्यम से पढ़े लोग अपने इष्टदेवों, भगवानों और पौराणिक पात्रों के नामों का उच्चारण ही बदल देते हैं। आपने भी सुना ही होगा! अब लोग 'कृष्ण' को 'कृष्णा', 'अर्जुन' को 'अर्जुना', 'भीम' को 'भीमा', 'लक्ष्मण' को 'लक्ष्मणा', 'रावण' को 'रावणा', 'कुंभकर्ण' को 'कुंभकर्णा' कह रहे हैं। 'रामायण' को 'रामायणा' और 'महाभारत' को 'महाभारता' बोलते हुए भी लोगों के मन में अंग्रेजी की श्रेष्ठता के बोध आता है। अंग्रेजी की श्रेष्ठता के यह बोध कहीं न कहीं उस घातक प्रभाव को छुपा लेता है, जो धीरे–धीरे हमारी आने वाली पीढ़ी पर पड़ रहा है। जिन बच्चों ने बचपन से अपने आराध्य और पौराणिक नामों को गलत सुना और गलत बोला है वे जीवन भर यही गलती करते रहेंगे और आने वाली पीढ़ी को भी यही सिखा कर जाएंगे। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियाँ वही सीखेंगी, जो हम उनके लिए छोड़ कर जाएंगे।

आज यदि लोगों को इस बारे में समझाया जाता है, तो वे कुतर्क करने से पीछे नहीं हटते। मेरे एक परिचित जो विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं, अपने हर WhatsApp संदेश के अंत में "जय श्री कृष्णा" लिखते हैं। मैंने उनके साथी प्राध्यापक से इस बारे में उनसे चर्चा करने का आग्रह किया, क्योंकि मैं तो उनसे चर्चा करने का पात्र था ही नहीं (उनकी समझ में)। फिर चर्चा तो हुई, पर वो उन दोनों की अंतिम चर्चा रही (अब तक)!

अंत में इतना ही कहना है कि शब्द, भाषा की आत्मा है। यदि हिंदी भाषा से हिंदी के शब्द अनावश्यक रूप से निष्कासित किए जाएंगे और उनकी जगह अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग थोपा जाएगा या अंग्रेजी के आकर्षण में हम अपने शब्दों को गलत तरह से बोलेंगे, तो हम न केवल अपनी भाषा को कमजोर कर देंगे अपितु अपनी संस्कृति, घरोहर और इतिहास के साथ भी अन्याय कर देंगे। हम सबको इस पर गंभीर चिंतन करना चाहिए। हिंदी लिखते या बोलते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि हिंदी के जो शब्द प्रचलित हैं, प्रयोग में हैं, उनके स्थान पर अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग न करें।

सहायक अधिकारी–अनुवाद (एमईएक्स)
एचईपी, भोपाल

बीएचईएल! तू है भारत का अभिमान

बीएचईएल! तू है भारत का अभिमान,
तेरी शक्ति से जगमगाए जहान।

दुनिया के कोने–कोने में तेरी गूँज है,
तेरे कारनामों में वो जोश और जुनून है।
तेरी मेहनत से पली हर तकनीकी डोर,
हर क्षेत्र में तेरा कदम बढ़े और छेड़े नया दौर।

नैनो प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स, और परमाणु शक्ति,
हर नए आयाम को छुआ, तेरी बारीकी है अनमोल और सच्ची।
रिएक्टर, ट्रांसफार्मर, इंजन से लेकर तेरा हर कदम,
भारत की शक्ति को दिलाता है तू नया आत्मविश्वास, नया जश्न।

सुमित कुमार वर्मा

तेरे बीते दशकों की गाथा, इतिहास बन जाये,
हर परियोजना सफलता की नई राह दिखाये।
नवीनता की शक्ति, भारत का स्वाभिमान,
तू है उस उम्मीद का चेहरा, जो करता है हर सपने को साकार।
बीएचईएल, तू है हमारी प्रेरणा,
तेरी शक्ति से रोशन रहेगा हर कदम और हर सपना।
देश की धड़कन, तू बन चुका है पहचान,
तेरी यात्रा की गाथा, आगे और बढ़ाएगी भारत का सम्मान।
बीएचईएल! तू है भारत का अभिमान,
तेरी शक्ति से जगमगाए हर जहान।

अपर अभियंता (डब्लू ई–एस–डब्लू सीएस)
हीप–हरिद्वार

अरुणिमा के 37वें अंक में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए पुरस्कृत कर्मचारी

अरुणिमा के प्रत्येक अंक में प्रकाशित उत्कृष्ट 15 रचनाओं के लेखकों को पुरस्कृत किया जाता है। पुरस्कार प्राप्त करने वाले रचनाकारों का चयन निर्णायक मंडल द्वारा किया जाता है। अरुणिमा के 37 वें अंक में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार प्राप्त करने वाले लेखकों का विवरण इस प्रकार हैः–

असद अली
प्रबंधक
कॉर्पोरेट कार्यालय
डेटा एनालिसिसः एक परिचय
प्रथम

मीनाक्षी बटोला
अपर अभियंता
हीप, हरिद्वार
धराली का विलाप
द्वितीय

प्रभात कुमार
अभियंता
हीप, हरिद्वार
ऑफिस में एर्गोनॉमिक्सः स्वास्थ्य और उत्पादकता
द्वितीय

दिनेश चंद्र जोशी
उप अधिकारी
उद्योग क्षेत्र, नई दिल्ली
वैश्विक परिवेश– एक नम्र निवेदन
तृतीय

युवराज मोहन
उप प्रबंधक
पीईएम, नोएडा
कार्य जीवन संतुलनः एक आधुनिक आवश्यकता
तृतीय

गौरव अब्रोल
प्रबंधक
कॉर्पोरेट कार्यालय
डार्क वेब क्या है? अपने बच्चों को डार्क वेब से कैसे बचाएं
तृतीय

अमृत सिंह
अपर अभियंता
एचपीईपी हैदराबाद
महाकुंभ यात्रा वृत्तान्त
प्रशंसा

साहिल जैन
प्रबंधक
कॉर्पोरेट कार्यालय
शिक्षा का बदलता परिदृश्य
प्रशंसा

विजय कुमार अग्रहरी
वरि. अभियंता
पीएसबीजी–1, नोएडा
भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत
प्रशंसा

राणा राश्मिरथी
वरि. प्रबंधक
एफएसआईपी, जगदीशपुर
उत्पादकता और सुरक्षाः अटूट संबंध
प्रशंसा

नवीन जीनगर
प्रबंधक
कॉर्पोरेट कार्यालय
स्मार्टनेस
प्रशंसा

नवल किशोर सिंह
अभियंता
एचपीबीपी, तिरुच्चि
विख्यात भेल का नाम करें
प्रशंसा

आँचल चौधरी
प्रबंधक
पीईएम, नोएडा
चुनौतियों से व्यक्तित्व विकास
प्रशंसा

मणिभ प्रकाश
अपर महाप्रबंधक
पीएसईआर सागरदीघी परियोजना
इंसान ढूंढ रहा भगवान
प्रशंसा

दीपक कुमार पांडे
वरि. अभियंता
टीपी झांसी
माटी दर्शन
प्रशंसा

पर्यावरण संबंधी आलेख

भारत की ऊर्जा नीतिः प्रगति और प्रकृति का संतुलन

राणा रश्मिरथी

भारत केवल एक राष्ट्र नहीं, बल्कि ऊर्जा की धड़कनों से धड़कता हुआ जीवंत शरीर है। यह शरीर जितना विशाल है, इसकी ऊर्जा आवश्यकताएँ भी उतनी ही विराट हैं। एक ओर गाँव का किसान है, जो अपनी फसलों के लिए पंप चलाना चाहता है, वहीं दूसरी ओर महानगरों की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हैं, जिन्हें चौबीसों घंटे बिजली चाहिए। ऐसे में भारत की ऊर्जा नीति केवल तकनीकी दस्तावेज नहीं, बल्कि प्रगति और प्रकृति के बीच संवाद है। हमने वैश्विक जलवायु परिवर्तन की चुनौती को गंभीरता से लेते हुए एक पर्यावरण–संवेदनशील और दूरदर्शी ऊर्जा नीति की दिशा में कदम बढ़ाया है। देश ने स्पष्ट संकेत दिया है कि वह धीरे–धीरे थर्मल पावर पर अपनी निर्भरता कम करेगा और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर तेजी से अग्रसर होगा। इस दृष्टिकोण को अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने सराहा है और भारत को एक जिम्मेदार वैश्विक भागीदार के रूप में स्वीकार किया है।

हालांकि भारत की ऊर्जा नीति में बदलावों का उद्देश्य दीर्घकालिक सुधार और स्थिरता सुनिश्चित करना था, इसके प्रारंभिक चरण में कई क्षेत्रीय और औद्योगिक संस्थानों को गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। विशेष रूप से बीएचईएल और देश की अन्य प्रमुख इंजीनियरिंग तथा पावर जनरेशन कंपनियों को अचानक बदलावों और नई तकनीकी दिशाओं के कारण परिचालन दबाव का अनुभव हुआ। जहाँ निजी कंपनियाँ रणनीतिक विविधीकरण और लचीलापन अपनाकर आसानी से नई परिस्थितियों के अनुकूल हो गईं, वहीं सार्वजनिक संस्थानों के लिए यह प्रक्रिया अधिक कठिन और जटिल साबित हुई। कई बार संसाधनों, वित्तीय योजनाओं और कार्यप्रणाली में बदलाव को समायोजित करना धीमा और चुनौतीपूर्ण रहा। इस संदर्भ में यह स्पष्ट हो गया कि नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए **व्यावहारिक और यथार्थवादी संतुलन** की आवश्यकता थी। यही कारण है कि वर्ष 2021 के आसपास नीति में ऐसे सुधार और संशोधन महसूस किए गए, जो न केवल उद्योग की जरूरतों के अनुरूप थे, बल्कि दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा और स्थिरता की दिशा में भी संतुलन स्थापित कर सके।

कोयले की थर्मल ऊर्जा ने हमें दशकों तक उजाला और विकास प्रदान किया, लेकिन इसकी कीमत हमने वायु प्रदूषण, स्वास्थ्य संबंधी जोखिम और कार्बन उत्सर्जन के रूप में चुकाई है। इसके विपरीत, सौर और पवन ऊर्जा भविष्य की नई आशा की किरणें हैं। ये ऊर्जा स्रोत पर्यावरण के अनुकूल हैं और दीर्घकालिक स्थिरता प्रदान कर सकते हैं। लेकिन इनका उच्च प्रारंभिक निवेश और कुछ तकनीकी सीमाएँ, जैसे मौसम पर निर्भरता और ऊर्जा संग्रहण की कठिनाई, 24x7 बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने में चुनौती पैदा करती हैं। इसलिए, नई ऊर्जा नीति में संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। हमारी नीति स्पष्ट है कि थर्मल और रिन्यूएबल, दोनों ही ऊर्जा स्रोत आवश्यक हैं, लेकिन साथ ही थर्मल ऊर्जा को अधिक स्वच्छ ऊर्जा दक्ष और पर्यावरण–अनुकूल बनाने पर जोर दिया गया है। इस संतुलन के माध्यम से देश न केवल ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठा सकता है।

भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 13 वर्षों में भारत की ऊर्जा खपत लगभग 70% बढ़ी है, और 2040 तक इसमें दोगुनी वृद्धि होने की संभावना है। इसी पृष्ठभूमि में, हाल के वर्षों में भारत में "ग्रीन कंपनियों" की अवधारणा तेजी से उभर रही है। उदाहरण के लिए, स्टील उद्योग अब अपने उत्पादों को "ग्रीन स्टील" कहने लगा है, जिनमें आंशिक रूप से रिन्यूएबल ऊर्जा का उपयोग होता है। इसी तरह, एनटीपीसी, ओएनजीसी जैसी सार्वजनिक कंपनियाँ भी अपने ग्रीन वर्जन को अपनाकर सतत् उत्पादन की दिशा में अग्रसर हैं। बीएचईएल ने भी इस पहल में महत्वपूर्ण प्रगति की है–अपनी 16 औद्योगिक इकाइयों में से 11 ने ग्रीन कंपनी प्रमाणन प्राप्त कर लिया है। इस नए दृष्टिकोण के तहत कंपनियाँ केवल उत्पादन नहीं कर रही हैं, बल्कि ग्रीन टैग और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के लिए भी प्रयासरत हैं। जैसा कि एक समय में आईएसओ सर्टिफिकेशन कंपनियों की वैश्विक प्रतिस्पर्धा और गुणवत्ता का संकेत था, आने वाले समय में ग्रीन सर्टिफिकेशन भी वैश्विक प्रतिस्पर्धा और पर्यावरणीय जिम्मेदारी की नई पहचान बनने जा रहा है।

भारत की ऊर्जा नीति केवल महानगरों और औद्योगिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका मुख्य फोकस गाँवों और दूरदराज के इलाकों तक ऊर्जा पहुँचाना भी है। लंबे समय तक ग्रामीण भारत बिजली और स्वच्छ ईंधन की कमी से जूझता रहा, लेकिन बीते कुछ वर्षों में स्थिति तेजी

से बदली है। **सौभाग्य योजना** के अंतर्गत लाखों घरों तक पहली बार बिजली पहुँची, जिससे न केवल रोशनी आई बल्कि बच्चों की पढ़ाई और छोटे व्यवसायों को भी नई गति मिली। वहीं, **प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना** ने महिलाओं को धुएँ से मुक्त रसोई उपलब्ध कराई और स्वास्थ्य व स्वच्छता की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल साबित हुई है। इसके साथ ही, गाँवों में सौर ऊर्जा आधारित माइक्रोग्रिड, बॉयोगैस संयंत्र और बॉयोमास बिजली परियोजनाएँ विकसित की जा रही हैं। ये न केवल सस्ती बल्कि स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध करा रही है।

ग्लासगो सम्मेलन (COP26), 2021 में भारत ने यह महत्वपूर्ण संकल्प लिया कि वह वर्ष 2070 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करेगा। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए देश ने कई महत्वाकांक्षी योजनाएँ और रणनीतियाँ निर्धारित की हैं:

- 2030 तक 50% ऊर्जा आवश्यकता नवीकरणीय स्रोतों से पूरी करना।
- हरित हाइड्रोजन मिशन के माध्यम से पेट्रोलियम आयात पर निर्भरता घटाना।
- औद्योगिक सुधारों के जरिए ऊर्जा दक्षता बढ़ाना और कम उत्सर्जन सुनिश्चित करना।
- इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रचार–प्रसार, जिससे परिवहन क्षेत्र में कार्बन उत्सर्जन घटाया जा सके।
- वृक्षारोपण और कार्बन सिंक में वृद्धि, ताकि प्राकृतिक संसाधनों के माध्यम से उत्सर्जन को संतुलित किया जा सके।

इन प्रयासों के माध्यम से भारत न केवल सतत् विकास और ऊर्जा सुरक्षा की दिशा में कदम बढ़ा रहा है, बल्कि वैश्विक जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध भी अपनी जिम्मेदारी निभा रहा है। भारत की ऊर्जा नीति केवल विकास की ओर झुकी नहीं है और न ही केवल पर्यावरण संरक्षण की ओर। यह एक संतुलन की नीति है – ऐसा संतुलन जो नवीकरणीय ऊर्जा के भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाते हुए भी वर्तमान ऊर्जा आवश्यकताओं की अनदेखी नहीं करता। भारत जैसे विशाल और विविध देश में, थर्मल और रिन्यूएबल ऊर्जा दोनों की भूमिका आवश्यक है। अंतर सिर्फ इतना है कि हम इसे विवेकपूर्ण, वैज्ञानिक और पर्यावरण–सम्मत सोच के साथ कैसे अपनाते हैं।

प्रगति और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करना यही भारत की ऊर्जा नीति का मूल सार है ताकि देश न केवल आर्थिक और तकनीकी रूप से मजबूत बने, बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता और सतत् विकास की दिशा में भी अग्रसर रहे। यकीनन ऊर्जा केवल बिजली नहीं, यह आने वाली पीढ़ियों की सांस है। हमने तय किया है कि यह सांस स्वच्छ और सुरक्षित होगी।

वरि. प्रबंधक (वाणिज्य)
एफएसआईपी, जगदीशपुर

बचपन की मस्ती

यादों मे खोई, वो बचपन की मस्ती,
वो कागज का रॉकेट और कागज की कश्ती।
कभी डगमगाता व हिचखोले खाता,
पवन के प्रवाह में, तरता–उतरता
नन्हें से हाथों की नन्ही सी कश्ती,
यादों मे खोई, वो बचपन की मस्ती।
सावन के रिमझिम में दौड़ लगाना,
ताल–तलैया में डुबकी लगाना,
बरगद के पेड़ों से झूलना–लटकना,
सखाओं–संग, अल्हड़ों की वो बस्ती,
यादों मे खोई, वो बचपन की मस्ती।
गांव की गलियों में धूल उड़ाना,
तपती दोपहरी में आम चुराना,
खेतों के मेड़ों पर चलना–फिसलना,

मनीष कुमार देव

हुड़दंगी दौड़ लगाती वो गश्ती,
यादों मे खोई, वो बचपन की मस्ती।
निरभ्र आसमां में यूं तारों को गिनना,
धवल चंद्रमा को चन्दा–मामा बुलाना,
नानी के किस्सों में ख्वाब सजाना,
मीठी–बातों से सबको, लुभाने की शक्ति,
यादों मे खोई, वो बचपन की मस्ती।
बहनों से लड़ना, खुद ही रूठ जाना,
शरारत न करने का, स्वांग रचाना,
माता से झूठे बहाने बनाना,
ममता के आँचल में छुपने की युक्ति,
यादों मे खोई, वो बचपन की मस्ती।

वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना प्रबंधन समूह)
उद्योग क्षेत्र, नई दिल्ली

कॉर्पोरेट कार्यालय सहित दिल्ली - एनसीआर स्थित कार्यालयों में

हिन्दी दिवस 2025 के उपलक्ष्य में, हर वर्ष की भांति, इस वर्ष भी कॉर्पोरेट कार्यालय सहित दिल्ली – एनसीआर स्थित कार्यालयों में पूरे सितंबर माह के दौरान राजभाषा उल्लास पर्व का आयोजन किया गया। उल्लास पर्व का उद्घाटन 03 सितंबर को काव्य पाठ प्रतियोगिता के साथ हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन), श्री एम श्रीधर ने की। उद्घाटन सत्र में निर्णायक एवं मुख्य अतिथि के रूप में उप महाप्रबंधक (राजभाषा), डीएमआरसी एवं हिन्दी के जाने – माने कवि डॉ. राजाराम यादव को आमंत्रित किया गया था।

उल्लास पर्व के दौरान कुल 09 प्रतियोगिताएं – **काव्य पाठ, अनुवाद, ऑनलाइन हिंदी सामान्य ज्ञान, ऑनलाइन हिंदी सामान्य ज्ञान (कंपनी स्तर पर), टिप्पण और प्रारूपण (नोटिंग – ड्राफ्टिंग), तकनीकी आलेख, निबंध लेखन (बच्चों के लिए), स्वरचित कहानी/संस्मरण/यात्रा वृत्तांत लेखन, अंताक्षरी प्रतियोगिताएं** आयोजित की गई। ऑनलाइन हिन्दी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता कंपनी स्तर पर आयोजित की गई थी।

राजभाषा उल्लास पर्व 2025 का हर्षोल्लास के साथ आयोजन

प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 16 अक्टूबर, 2025 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में निदेशक (मानव संसाधन), कृष्ण कुमार ठाकुर द्वारा प्रमाण – पत्र एवं नकद राशि प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में कार्यपालक निदेशक (रेलवे बोर्ड), नई दिल्ली एवं हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार श्री तेज प्रताप नारायण जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर 'देश दुनिया में हिन्दी के बढ़ते कदम' विषय पर श्री तेज प्रताप नारायण का एक व्याख्यान भी आयोजित किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान निदेशक (मानव संसाधन) के करकमलों द्वारा कॉर्पोरेट कार्यालय की अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका 'अरुणिमा' के 37वें अंक का भी विमोचन किया गया।

बीएचईएल की सभी इकाइयों/प्रभागों में राजभाषा उल्लास पर्व / हिन्दी पखवाड़ा / हिन्दी माह का हर्षोल्लास के साथ आयोजन

हीप, हरिद्वार

एचपीबीपी, त्रिची

कॉर्पोरेट आर एण्ड डी, हैदराबाद

पीएसडब्ल्यूआर, नागपुर

टीपी, झांसी

एफएसआईपी, जगदीशपुर

आईवीपी, गोइंदवाल

सीएफपी, रूद्रपुर

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में, हर वर्ष की भांति, इस वर्ष भी कॉर्पोरेट कार्यालय सहित बीएचईएल की सभी इकाइयों/प्रभागों में पूरे सितंबर माह के दौरान राजभाषा उल्लास पर्व/राजभाषा उत्सव/हिन्दी पखवाड़ा/हिन्दी माह का आयोजन किया गया। माह के दौरान कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के लिए अनेक हिन्दी प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम, कवि सम्मेलन, व्याख्यान, कार्यक्रम इत्यादि आयोजित किए गए। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को विशेष पुरस्कार वितरण समारोहों में संबंधित इकाई प्रमुखों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

बीएचईएल अंतर-इकाई राजभाषा उत्कृष्टता सम्मान 2024-25 के अंतर्गत 11 इकाइयां पुरस्कृत

हीप, हरिद्वार

आरसीपुरम, हैदराबाद

पीएसडब्लूआर, नागपुर

पीएसईआर, कोलकाता

बीएचईएल राजभाषा उत्कृष्टता सम्मान योजना 2024–25 के अंतर्गत माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के सदाशिव मूर्ति द्वारा विभिन्न श्रेणियों में 11 इकाइयों/प्रभागों को पुरस्कृत किया गया। ये पुरस्कार 22 नवम्बर, 2025 को आयोजित प्रबंध समिति की बैठक के दौरान विजेता इकाइयों / प्रभागों के प्रमुखों को प्रदान किए गए। शील्ड वितरण समारोह के दौरान सभी निदेशकगण भी उपस्थित थे।

पाँच इकाइयों – हरिद्वार, आरसीपुरम हैदराबाद, पीएसडब्लूआर नागपुर, पीएसईआर, कोलकाता और एचईआरपी वाराणसी को अलग – अलग श्रेणियों में प्रथम पुरस्कार प्रदान किए गए। छह इकाइयों – एचईपी भोपाल, एचपीबीपी त्रिची, एफएसआईपी जगदीशपुर, कॉर्पोरेट आर एण्ड डी हैदराबाद, उद्योग क्षेत्र नई दिल्ली तथा आईवीपी गोइंदवाल को विभिन्न श्रेणियों में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि बीएचईएल में इकाइयों के बीच राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2003 से राजभाषा उत्कृष्टता सम्मान योजना लागू है।

एचईआरपी, वाराणसी

कॉर्पोरेट कार्यालय की अंतर - विभागीय राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत पाँच विभागों को पुरस्कार

कॉर्पोरेट कार्यालय की अंतर–विभागीय राजभाषा शील्ड योजना 2024–25 के अंतर्गत 05 विभागों को पुरस्कार हेतु चयनित किया गया है।

दो श्रेणियों (तकनीकी विभाग एवं गैर – तकनीकी विभाग) के अंतर्गत विभागों का पुरस्कार हेतु चयन किया गया है। तकनीकी विभागों में कॉर्पोरेट एचएसई एवं सीडीटी ने क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। गैर – तकनीकी विभागों में कॉर्पोरेट सतर्कता, कॉर्पोरेट संचार एवं सीएलडी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

मौलिक हिन्दी पुस्तक लेखन योजना ब्लॉक वर्ष 2023-25 के अंतर्गत चार कर्मचारियों को पुरस्कार

22 नवंबर 2025 को आयोजित प्रबंध समिति की बैठक के दौरान माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के सदाशिव मूर्ति द्वारा मौलिक हिंदी पुस्तक लेखन योजना ब्लॉक वर्ष 2023–25 के अंतर्गत चार कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। साहित्यिक वर्ग के अंतर्गत श्री अभिषेक कुमार सिंह, प्रबंधक, एसएसटीपी त्रिची को उनके गजल संग्रह 'उजालों के आस पास' के लिए प्रथम पुरस्कार तथा श्री अभिषेक जैन अबोध, प्रबंधक, एचईपी भोपाल को उनके काव्य संग्रह 'बूंद बूंद में प्यास' के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तकनीकी वर्ग में श्री राजेश कुमार, उप प्रबंधक, हीप हरिद्वार को उनकी पुस्तक 'हेल्थ इज फ्री' के लिए प्रथम पुरस्कार और डॉ. उमा शंकर शिल्पी, वरि. परामर्शदाता, हीप हरिद्वार को उनकी पुस्तक 'डायबिटीज – शंका, समाधान एवं निदान' के लिए द्वितीय पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

उल्लेखनीय है कि बीएचईएल में मौलिक हिन्दी लेखन को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2009 से मौलिक हिन्दी पुस्तक लेखन योजना लागू है। योजना के अंतर्गत साहित्यिक एवं तकनीकी दोनों ही वर्गों में दो–दो पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

मूल रूप से हिंदी कार्य योजना वर्ष 2024-25 के अंतर्गत 12 कर्मचारी पुरस्कृत

मूल रूप से हिन्दी कार्य योजना वर्ष 2024–25 के अंतर्गत बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय के 12 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। विजेताओं को 16 अक्टूबर, 2025 को आयोजित राजभाषा उल्लास पर्व के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में निदेशक (मानव संसाधन), श्री कृष्ण कुमार ठाकुर द्वारा प्रमाण – पत्र एवं नकद राशि प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा बीएचईएल रानीपेट का निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा 29 अक्टूबर, 2025 को वेल्लोर, तमिलनाडु नराकास के निरीक्षण के अंतर्गत बीएचईएल की रानीपेट इकाई का निरीक्षण किया गया। समिति ने रानीपेट इकाई में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा इसे और बेहतर बनाने के लिए कुछ सुझाव भी दिए। निरीक्षण बैठक में संसदीय समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब सहित अनेक माननीय सदस्यों ने भाग लिया। बीएचईएल रानीपेट की ओर से कार्यपालक निदेशक श्री अरुणमोड़ी देवन तथा प्रबंधक (राजभाषा) श्री सत्यनारायण पाल निरीक्षण बैठक में शामिल हुए।

कॉर्पोरेट राजभाषा विभाग द्वारा कॉर्पोरेट कार्यालय के विभागों का निरीक्षण

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार नवम्बर–दिसंबर 2025 के दौरान कॉर्पोरेट राजभाषा विभाग द्वारा कॉर्पोरेट कार्यालय के सभी 27 विभागों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान राजभाषा विभाग के अधिकारियों ने वित्त, गुणवत्ता, सीओएम, सीएसएम, सतर्कता, मानव संसाधन, संचार सहित सभी विभागों में जाकर फाइलों का निरीक्षण किया, विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों के कार्यस्थलों पर जाकर उनके द्वारा हिन्दी में किए जा रहे कार्यों का जायजा लिया तथा विभाग प्रमुखों से भेंट की। इस दौरान राजभाषा विभाग के अधिकारियों ने विभागों में राजभाषा कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों के विषय में जानकारी प्राप्त की और उनके समाधान का प्रयास किया।

भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं में बीएचईएल के 09 कर्मचारी पुरस्कृत

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा मंत्रालय/अधीनस्थ कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के प्रति प्रेरित और प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सितंबर 2025 माह में भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा 09 हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में बीएचईएल की विभिन्न इकाइयों/प्रभागों के कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और निम्नलिखित विवरण के अनुसार कुल 09 पुरस्कार प्राप्त किए:

क्र.	प्रतियोगिता	विजेता (सुश्री/श्री)	स्थान	इकाई
1.	सामान्य लेख	रोशन आरा	द्वितीय	आरओडी, लखनऊ
2.	सामान्य लेख	लोकेन्द्र प्रकाश बिजल्वाण	तृतीय	पीएसबीजी–II, नोएडा
3.	नवाचार (इनोवेशन) संबंधी लेखन	रोशन आरा	प्रोत्साहन	आरओडी, लखनऊ
4.	नवाचार (इनोवेशन) संबंधी लेखन	भोला नाथ साह	प्रोत्साहन	पावर सेक्टर मुख्यालय
5.	कविता	प्रतिभा शाही	प्रथम	ईडीएन, बेंगलुरू
6.	कविता	शिवांगी	तृतीय	कॉर्पोरेट कार्यालय
7.	संस्मरण/रोचक वृत्तांत/कहानी	आँचल चौधरी	द्वितीय	पीईएम, नोएडा
8.	संस्मरण/रोचक वृत्तांत/कहानी	सोनेश्वर कुमार सोना	तृतीय	एचईईपी, हरिद्वार
9.	संस्मरण/रोचक वृत्तांत/कहानी	रंजना लाल खंदकिया	प्रोत्साहन	एचईईपी, हरिद्वार

आध्यात्मिक आलेख

मन के बंधन खोल

मंगल स्वरूप त्रिवेदी

दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार,
तरुवर ज्यों पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार।

सभी भाग रहे हैं आनंद की चाह में, सुख की चाह में, शांति की तलाश में, कामनाओं की तृप्ति के लिए; लेकिन भाग किस दिशा में रहे हैं, यह नहीं पता? यदि मानव को उसके गंतव्य का पता नहीं हो तो संसार की यात्रा के दौरान केवल शरीर बूढ़ा होता जाता है, इंद्रियां दिन–प्रतिदिन अधिक अनियंत्रित एवं असमर्थ होती रहती हैं, मन और अधिक चंचल होता रहता है। बस यही प्रक्रिया जीवन के सभी पक्षों में चलती रहती है।

बचपन में सुनी एक छोटी सी कहानी याद आ रही है – एक व्यक्ति बहुत तेजी से भागा जा रहा था, सांस फूल रही थी, कदम संभल नहीं रहे थे, लड़खड़ा रहा था; उसकी यह हालत देखकर कुछ भले लोगों ने उसकी इस हालत का कारण जानने एवं मदद करने की मंशा से उसे रोकने की कोशिश की, परंतु वह रुकने को तैयार ही न था। तभी एक व्यक्ति ने उसे जबरदस्ती पकड़ लिया और पूछा कि इतने हैरान–परेशान होकर कहां भागे जा रहे हो? उसने कहा छोड़ो, मुझे बहुत दूर जाना है। मुझे सूर्य से मिलना है, वह पूर्व दिशा में रहता है, बहुत दूर रहता है, मुझे हर हाल में वहां पहुंचना है। तभी पकड़ने वाले व्यक्ति ने भागने वाले व्यक्ति का मुंह विपरीत दिशा में घूमाया, तो उसने देखा कि सामने ही सूर्य चमक रहा है।

इसी प्रकार, हममें से भी अधिकांश लोग सूर्य की तलाश में सूर्य की विपरीत दिशा में दौड़ लगाए जा रहे हैं। इस भागम–भाग प्रतियोगिता की एक खास बात यह भी है कि भागने वालों में से अधिकांश लोगों को तो यह भी पता नहीं है कि वे भाग क्यों रहे हैं? उन्हें जाना कहां है और जाने का सही मार्ग क्या है? वे तो बाकी लोग जैसे भाग रहे हैं, उनके पीछे–पीछे वे भी दौड़ लगा रहे हैं।

आदि संत कबीर साहब ने लिखा है कि –

जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ,
मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ।

मानव जन्म बहुत दुर्लभ है और केवल मानव देह धरकर ही जीव संसार सागर से पार जा सकता है, मोक्ष को, निर्वाण को, परम आनंद को, परम सत्य को, परम पद को प्राप्त कर सकता है। सतह पर बैठकर, किनारे खड़े रहकर, कर्म कांड कर, इंद्रियों एवं मन की इच्छाओं एवं भोगों को पूरा करने के लिए मर–मरकर जीने से उस परम सत्य को, उस परम पद को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

उसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि इसी संसार में रहते हुए, देह धर्म का पालन करते हुए, गृहस्थाश्रम में रहते हुए, निष्काम भाव से कर्म करते हुए, संतों के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में आध्यात्मिक साधनों के माध्यम से मन और सूरत के बंधनों को खोलते हुए ही परम सुख को प्राप्त किया जा सकता है। **अस्तु मानव जीवन संसार को भोगने या संसार से भागने का स्थान नहीं है, यह तो वास्तव में मुक्ति की साधना स्थली है।**

वरि. प्रबंधक (राजभाषा)
कॉर्पोरेट कार्यालय

इलेक्ट्रॉनिक कचरा : बढ़ती चुनौती और समाधाान

सुदीप कुमार

परिचयः

आज के डिजिटल युग में इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हमारी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। लेकिन जब ये उपकरण अपनी उपयोग अवधि पूरी कर लेते हैं या खराब हो जाते हैं, तो वे ई–कचरे (E-Waste) के रूप में पर्यावरण और स्वास्थ्य दोनों के लिए गंभीर समस्या खड़ी करते हैं। कंप्यूटर, मोबाइल, चार्जर, प्रिंटर, कैमरा, फ्रिज, वाशिंग मशीन आदि इसी श्रेणी में आते हैं।

भारत में ई–कचरे की स्थिति :–

- भारत विश्व में तीसरा सबसे बड़ा ई–कचरा उत्पादक देश है (यूएन ग्लोबल ई–वेस्ट मॉनिटर रिपोर्ट)।
- 2022 के इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम के अनुसार 106 प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को ई–कचरे में शामिल किया गया।
- महाराष्ट्र भारत का सबसे बड़ा ई–कचरा उत्पादक राज्य है।
- 14 अक्टूबर को हर साल "अंतर्राष्ट्रीय ई–कचरा दिवस" मनाया जाता है।
- बैटरियों को ई–कचरे से बाहर रखा गया है।

ई–कचरा बढ़ने के मुख्य कारण :–

- तीव्र डिजिटलीकरण एवं तकनीकी नवाचार।
- नए–नए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की बढ़ती मांग।
- आकर्षक विज्ञापनों और नवाचारों के कारण बदलता उपभोक्ता व्यवहार।
- इलेक्ट्रॉनिक सामान की कीमतों में गिरावट।
- ईएमआई की आसान उपलब्धता।
- शहरीकरण और आर्थिक विकास की तेज रफ्तार।

ई–कचरे से उत्पन्न चुनौतियाँ :–

1. **विषैले तत्वों का खतराः–** इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में पारा, सीसा, कैडमियम, क्रोमियम, निकिल जैसे रसायन होते हैं, जो मिट्टी, पानी, और हवा को प्रदूषित करते हैं।
2. **स्वास्थ्य पर दुष्प्रभावः–** जहरीले धातु और रसायन त्वचा रोग, फेफड़ों का कैंसर, गुर्दे की समस्या, डीएनए क्षति और तंत्रिका संबंधी विकार उत्पन्न कर सकते हैं।
3. **असंगठित प्रबंधनः–** भारत में अधिकांश ई–कचरे को अनौपचारिक क्षेत्र में बिना सुरक्षा उपायों के रिसाइकिल किया जाता है, जिससे कामगारों के स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ता है।

ई–कचरे का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव :–

- **पारा** :– मिट्टी/हवा/धूल/पानी आदि प्रदूषित होता है जिससे मस्तिष्क/श्वसन/त्वचा एवं अन्य अंग प्रभावित होते हैं।
- **तांबा** :– मिट्टी/हवा/धूल/पानी प्रदूषित होता है जिससे सिरदर्द/चक्कर आता है एवं श्वसन अंग प्रभावित होते हैं।

- **क्रोमियम** :– मिट्टी/हवा/धुल/पानी प्रदूषित होता है जिससे डीएनए क्षति/विकार प्रजनन तंत्रिका/यकृत/गुर्दा इत्यादि अंग प्रभावित होते हैं।
- **सीसा** :– मिट्टी/हवा/धुल/पानी प्रदूषित होता है जिससे रक्त प्रणाली/प्रजनन विकास तंत्रिका इत्यादि अंग प्रभावित होते हैं।
- **कैडमियम** :– मिट्टी/हवा/धुल/पानी प्रदूषित होता है जिससे डी.एन.ए./प्रजनन तंत्रिका इत्यादि अंग प्रभावित होते हैं।
- **बेरिलियम (मदरबोर्ड)** :– मिट्टी/हवा/धुल/पानी प्रदूषित होता है जिससे फेफड़े का कैंसर/त्वचा इत्यादि अंग प्रभावित होते हैं।

समाधानः–

- सरकार को ई–कचरे के प्रबंधन के लिए सख्त कानून बनाने चाहिए और उनके कड़ाई से पालन की निगरानी भी करनी चाहिए।
- इलेक्ट्रॉनिक निर्माता कंपनियों को Extended Producer Responsibility (EPR) के तहत अपने उत्पादों से उत्पन्न ई–कचरे का संग्रहण, निपटान और पुनर्चक्रण की जिम्मेदारी लेनी होगी।
- सरकार को ई–कचरे के उचित निपटान और पुनर्चक्रण के लिए आधुनिक रिसाइक्लिंग प्लांट्स की स्थापना को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- लोगों को पुराने उपकरणों के पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण के महत्व को समझाते हुए, इनके सही इस्तेमाल को बढ़ावा देना चाहिए।
- ई–कचरे के खतरों और इसके सही प्रबंधन के लिए समाज में व्यापक जनजागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।

निष्कर्षः

ई–कचरा के निपटान हेतु सरकार और नागरिक दोनों को इस समस्या के प्रति सचेत होना चाहिए। इसके लिए पुराने ई–कचरे को विदेश से आयात ना करके, अपने यहाँ उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट को गलाकर नये उपकरण बनाना चाहिए एवं सरकारी स्तर पर नियमों के सख्त अनुपालन व इलेक्ट्रॉनिक निर्माता कंपनियों की ई–वेस्ट प्रबंधन पर जिम्मेदारी तय करनी चाहिए।

अभियंता (ईएमटी)
हीप, हरिद्वार

कहानी

लकड़ी की खिड़की : मनु की बचपन की यादें

परामिता बैक

यह मेरे बचपन की कहानी है, जिसे मैं आज भी नहीं भूल पाती हूँ।
समय चाहे जितना भी बीत गया हो, यह याद आज भी मेरे दिल के बहुत करीब है।

जब मैं छोटी थी, हम एक बहुत छोटे से कमरे में रहते थे।
उस कमरे में दो खिड़कियाँ थीं – एक पूरब की ओर और दूसरी पश्चिम की ओर।
पश्चिम की खिड़की ज्यादातर बंद ही रहती थी,
लेकिन पूरब वाली खिड़की हमेशा खुली रहती थी, ताकि ताजी हवा भीतर आ सके।

कमरे में चार छोटे–छोटे रोशनदान भी थे,
पर मेरे लिए असली खासियत थी वही पूरब की खिड़की।
हर दिन मैं उसके पास बैठ जाती और बाहर की दुनिया को निहारती रहती थी।
मैं अपनी छोटी–छोटी उंगलियों से खिड़की का काठ सहलाती और महसूस करती– कि यह मेरा छोटा संसार है।

हमारे सामने और घर थे, जो दूर तक दिखने वाली प्रकृति का नजारा रोक देते थे।
लेकिन उन घरों के बीच छोटे–छोटे खाली स्थानों से मुझे दूर खड़े

लंबे–लंबे पेड़ दिखाई देते।
उनके पत्तों की हरियाली हवा में झूलती और मुझसे बातें करने लगती।
ऐसा लगता मानो वे मुझे अपनी ओर बुला रहे हों,
जैसे वे कह रहे हों, *"चलो, हमारे साथ खेलो।"*

बगल के घर की छत पर **गोल कद्दू** की बेलें चढ़ी रहती थीं।
हरी–भरी बेलों पर पीले फूल और छोटे–छोटे कद्दू झूलते,
जैसे मेरी छोटी–सी आँखों के लिए कोई जादुई दृश्य बना हो।
मैं उनसे मन ही मन बातें करती,

*''एक दिन मैं भी तुम्हारी तरह पौधे लगाऊँगी
और ढेर सारे बड़े–बड़े कद्दू उगाऊँगी।''*

रात में जब अंधेरा छा जाता,
तो मैं डरकर उस खिड़की को बंद कर देती।
बाहर की गली बहुत संकरी थी,
और मुझे हमेशा लगता कि वहाँ अंधेरे में कुछ अजनबी चीजें छुपी होंगी।

लेकिन दिन में, खासकर बरसात के मौसम में, वही खिड़की मेरे लिए जादुई दुनिया बन जाती।
बरसात के उन दिनों में जब मूसलधार बारिश होती,
तो खिड़की के ठीक नीचे वाली गली में पानी भरकर एक छोटा–सा तालाब बन जाता।
उस तालाब में कागज की छोटी–छोटी नावें तैरतीं,
और उनका धीरे–धीरे बहना मुझे किसी बड़ी समुद्री यात्रा की कल्पना कराता।

उस नजारे को देखने और उसमें खेलने का मजा लेने के लिए
मैं कई बार खिड़की के पास बैठी रहती।
कभी–कभी उस तालाब में छोटी–छोटी मछलियाँ तैरतीं।
कुछ बहुत नन्हीं, तो कुछ थोड़ी बड़ी।
मैंने टहनियों और धागे से एक छोटा–सा जाल बनाया और उन्हें पकड़ने की कोशिश की।
मछलियाँ फुर्तीली थीं, लेकिन कोशिश करने का मजा ही अलग था।

मेरा भाई भी मेरे साथ आता।
वह अपनी नाव पानी में डालता और हम दोनों यह देखने की प्रतियोगिता करते कि किसकी नाव सबसे दूर तक जाएगी।
हमारी हँसी उस बरसाती पानी में गूँजती और तालाब के किनारे के, पत्ते हिलते हुए जैसे हमारी बातें सुन रहे हों।

कभी–कभी बगल की छत पर **सीताफल** के पेड़ की टहनियाँ झूलतीं।
उनका मीठा खुशबू भरा फल मुझे बहुत भाता।
मैं उन फलों को देखकर सोचती – काश मैं बड़े होकर उनके सारे

पेड़ लगा सकूँ।

मुझे आज भी वह **लकड़ी की खिड़की** याद है।
वह सिर्फ घर का हिस्सा नहीं थी,
वह मेरे बचपन की साथी थी।
उस खिड़की ने मेरे सपनों को देखा,
मेरी हँसी–सिसकियाँ सुनीं,
और मेरे खेलों की गवाह बनी।

उसी छोटी–सी खिड़की से मैंने दुनिया की कल्पना की,
और उसी के सहारे मैं धीरे–धीरे बड़ी हुई।

वह खिड़की मेरे लिए सिर्फ लकड़ी का टुकड़ा नहीं थी,
वह मेरी जिंदगी का एक हिस्सा थी –
एक ऐसी दोस्त, जिसे मैं आज भी याद करती हूँ और हमेशा करती रहूँगी।

उप प्रबंधक (सीएलडी)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नोएडा

क्यों?

क्यों मुझे खुद से आगे 'इज्जत' को रखना सिखाया है
क्यों लाखों निर्भयाओं को दरिंदों के हाथ माँ ने खोया है
क्यों रातों को वो अकेली सहम–सहम कर कदम बढ़ाती है
क्यों घर की लक्ष्मी मर्द के कदमों में धकेली जाती है
क्यों उस अनजान लड़की को आदमी अपनी बहन न मान पाता है
क्यों निशस्त्र देख उस हैवान का मन डोल जाता है
क्यों उसके कपड़ों की लम्बाई उसका चरित्र दर्शाती है
क्यों लड़कों की गन्दी नजर किसी सजा के लायक नहीं मानी जाती है
क्यों एक औरत पर हाथ उठाते वक्त मर्दानगी को ढेस नहीं पहुँचती है
क्यों औरत कमाए तो जिम्मेदारियों की जंजीरें उन्हें जकड़ने दौड़ती हैं
क्यों शादी के नाम पर आज भी लेन देन की प्रथा लड़की का मान घटाती है
क्यों जिस्म के लिए उसकी भावनाओं को मसल, खेल और मार के 'मर्दानगी' आती है

सानिया

क्यों इतनी आधुनिकता के पश्चात् भी सोच समाज की पिछड़ी है
क्यों लड़की के स्वतंत्र विचारों से पिता की इज्जत बिगड़ी है
क्यों मर्दो का अभिमान बनाकर औरतों को नवाजा जाता है
क्यों जब अहंकार को ठेस पहुंचे तो द्रौपदी सा उसे त्याग दिया जाता है
क्यों पितृसत्ता की कलम एक नारी का भाग्य रचती है
क्यों दुनिया जीत कर भी उसकी पहचान उसके पति के नाम से होती है
क्यों उसके सपनों को कर्तव्यों का भार दबाता है
क्यों उसकी मेहनत को 'फर्ज' कहकर अनदेखा किया जाता है
क्यों उसकी खामोशी को सहमति मान लिया जाता है
क्यों उसकी बेबसी को उसकी नियति का नाम दिया जाता है
क्यों अपराध सिर्फ बलात्कार और शोषण को ही माना जाता है
क्यों इन अपराधों की किसी के जुबान पे बात नहीं है
क्यों इस पीड़ा को सह, चुप्पी को ढाल बना लेना सही है
क्यों महिलाओ को बांधना इतना आसान हो रहा है
क्यों अभी तक तू सो रहा, यहाँ क्यों पर क्यों सवाल हो रहा है।

सपुत्री – श्री रामदेव प्रसाद यादव, प्रशासनिक अधिकारी
निदेशक (मा. सं.) सचिवालय, कार्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

"आज मैंने सूर्य से बस जरा–सा यों कहा –
आपके साम्राज्य में इतना अँधेरा क्यों रहा?
तमतमाकर वह दहाड़ा–मैं अकेला क्या करूँ?
तुम निकम्मों के लिये मैं ही भला कब तक मरूँ?
आकाश की आराधना के चक्करों में मत पड़ो।
संग्राम यह घनघोर है, कुछ मैं लड़ूँ, कुछ तुम लड़ो !!"

– बालकवि बैरागी की रचना "हैं करोड़ों सूर्य" का अंश)

आलेख

विकसित भारत @ 2047 में नागरिकों की भूमिका

आशुतोष कुमार वर्मा

भारत, एक प्राचीन सभ्यता और विविधताओं से भरा देश है, जो आजादी के 100 वर्ष पूर्ण होने की ओर दृढ़ गति से अग्रसर है। वर्ष 2047 हमारे लिए केवल स्वतंत्रता की शताब्दी नहीं होगा, बल्कि यह उस भारत का स्वप्न होगा जो समृद्ध, सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित देशों की श्रेणी में शामिल हो। "विकसित भारत" का अर्थ केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक समानता, वैज्ञानिक नवाचार, तकनीकी श्रेष्ठता, स्वच्छ पर्यावरण, सशक्त लोकतंत्र और नैतिक मूल्यों पर आधारित समाज की स्थापना भी है।

इस महान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ तो आवश्यक हैं, किंतु उससे भी अधिक आवश्यक है, प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी। जब तक आम जन–मानस अपनी जिम्मेदारियों को समझकर ईमानदारी से राष्ट्र–निर्माण में सहयोग नहीं करेगा, तब तक विकसित भारत का सपना अधूरा रहेगा।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था––

"राष्ट्र का सपना तभी साकार होता है जब नागरिक बड़े सपने देखते हैं और उन्हें साकार करने का साहस रखते हैं।" स्पष्ट है कि विकसित भारत का सपना तभी पूरा होगा, जब हम सभी मिलकर योगदान देंगे।

विकसित भारत का अर्थ

'विकसित भारत' का आशय है, ऐसा राष्ट्र जहाँ:

- प्रत्येक नागरिक को समान अवसर प्राप्त हों।
- गरीबी, निरक्षरता और असमानता जैसी समस्याएँ न्यूनतम स्तर पर हों।
- विज्ञान, शोध और तकनीकी नवाचार में भारत अग्रणी भूमिका निभाए।
- पर्यावरणीय संतुलन और सतत् विकास सुनिश्चित हो।
- समाज में भ्रष्टाचार, भेदभाव और हिंसा का स्थान न हो।
- लोकतंत्र मजबूत हो और नागरिक अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति सजग हों।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल योजनाएँ ही पर्याप्त नहीं, बल्कि नागरिकों की जागरूकता, सहयोग और कर्तव्यनिष्ठा भी अनिवार्य है।

नागरिकों की भूमिका

1. शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति

शिक्षा किसी भी देश की प्रगति की नींव होती है। यदि नागरिक स्वयं

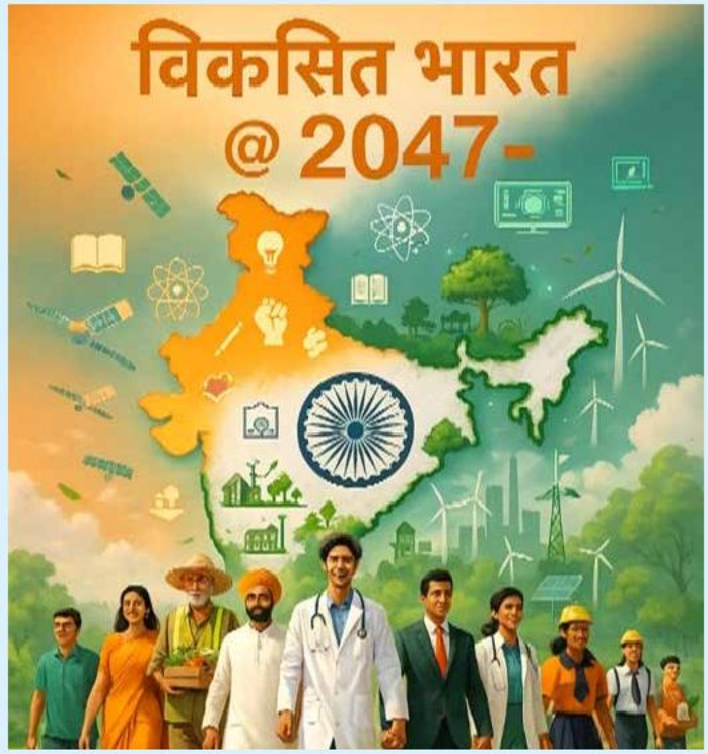

शिक्षित होंगे और अपने परिवार व समाज को भी शिक्षा की ओर प्रेरित करेंगे, तभी भारत ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो सकेगा। डिजिटल शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और नई तकनीकों की समझ नागरिकों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाएगी। युवाओं को विशेष रूप से शोध, नवाचार और कौशल विकास में योगदान देना होगा।

2. कौशल विकास और रोजगार सृजन

हर नागरिक को "हर घर ज्ञान, हर हाथ कौशल" के भाव को अपनाना चाहिए। जब समाज में कौशलयुक्त युवाओं की संख्या बढ़ेगी, तो न केवल रोजगार के अवसर पैदा होंगे, बल्कि भारत आत्मनिर्भरता की दिशा में भी मजबूती से आगे बढ़ेगा।

3. देशभक्ति और नैतिक मूल्यों का पालन

किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसके नागरिकों की नैतिकता और देशभक्ति में निहित होती है। यदि नागरिक अपने–अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी और परिश्रम से कार्य करेंगे, तो भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ और सामाजिक बुराइयाँ स्वतः समाप्त हो जाएंगी। राष्ट्रप्रेम केवल भाषणों तक सीमित न होकर व्यवहार और जीवनशैली में दिखना चाहिए।

4. नवाचार और उद्यमिता

भारत दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश है। यदि यह युवा शक्ति तकनीकी शोध और उद्यमिता में सक्रिय होगी तो भारत 2047

तक नवाचार का वैश्विक केंद्र बन सकता है। नागरिकों को 'वोकल फॉर लोकल' की भावना अपनाते हुए स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना चाहिए। स्टार्ट–अप संस्कृति, नए प्रयोग और आत्मनिर्भरता का मार्ग ही भारत को आर्थिक महाशक्ति बनाएगा।

5. पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास

विकास तभी सार्थक है जब वह प्रकृति के साथ सामंजस्य में हो। नागरिकों को जल–संरक्षण, वृक्षारोपण, नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग और प्रदूषण रोकने के लिए आगे आना होगा। "स्वच्छ भारत" केवल सरकारी कार्यक्रम ही नहीं, बल्कि हर नागरिक की जीवनशैली का हिस्सा होना चाहिए।

6. स्वच्छता और स्वास्थ्य

स्वस्थ और स्वच्छ समाज ही विकास का वास्तविक परिचायक है। प्रत्येक नागरिक को व्यक्तिगत स्वच्छता, सार्वजनिक स्थानों की सफाई और स्वास्थ्य जागरूकता पर ध्यान देना होगा। यदि नागरिक बीमारियों से बचेंगे, तो राष्ट्र की ऊर्जा और उत्पादनशीलता स्वतः बढ़ेगी।

7. सामाजिक सद्भाव और एकता

भारत अनेक भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों का संगम है। विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा जब नागरिक आपसी भाईचारे और सहयोग की भावना बनाए रखेंगे। विभाजनकारी सोच, वैमनस्य और हिंसा से दूर रहकर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को अपनाना आवश्यक है।

8. लोकतांत्रिक जिम्मेदारी

भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है और उसकी शक्ति जनता में निहित है। नागरिकों को मतदान में सक्रिय भाग लेना चाहिए, जिम्मेदार नेताओं का चयन करना चाहिए और सरकार की योजनाओं पर सतत निगरानी रखनी चाहिए। लोकतंत्र तभी सशक्त होगा जब नागरिक जागरूक और उत्तरदायी होंगे।

9. आर्थिक आत्मनिर्भरता

"आत्मनिर्भर भारत" केवल नारा नहीं, बल्कि भविष्य की नींव है। नागरिकों को स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता देनी चाहिए और उत्पादनशीलता को बढ़ावा देना चाहिए। श्रम की गरिमा और छोटे उद्योगों के समर्थन से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और भारत आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनेगा।

10. महिला सशक्तिकरण

आधी आबादी के बिना राष्ट्र का पूर्ण विकास संभव नहीं। नागरिकों को महिलाओं की शिक्षा, सुरक्षा और रोजगार के अवसरों की दिशा में योगदान देना होगा। समान अवसर और सम्मान सुनिश्चित कर ही विकसित भारत का निर्माण संभव है।

11. सामाजिक सेवा और जनकल्याण

नागरिक केवल अपने अधिकारों तक सीमित न रहें, बल्कि जनकल्याण में भी भागीदार बनें। अनाथों की शिक्षा, गरीबों की मदद, आपदा प्रबंधन में सहयोग और स्वास्थ्य सेवाओं में योगदान जैसी पहल राष्ट्र को मजबूत बनाएगी।

भारत के लिए 2047 केवल स्वतंत्रता की शताब्दी नहीं, बल्कि एक संकल्प का वर्ष है – "विकसित भारत का सपना" यह सपना तभी साकार होगा जब प्रत्येक नागरिक अपनी भूमिका जिम्मेदारी से निभाए। चाहे वह शिक्षा प्राप्त करना हो, कानून का पालन करना हो, पर्यावरण की रक्षा करना हो, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना हो, या सामाजिक सद्भाव बनाए रखना हो – हर कदम भारत को आगे ले जाएगा।

"सरकार रास्ता तय करती है, पर उसे चलकर पार करने का उत्तरदायित्व नागरिकों का ही होता है।" जब हर भारतीय यह संकल्प लेगा कि "देश पहले, मैं बाद में", तब भारत न केवल 2047 तक विकसित राष्ट्र बनेगा बल्कि आने वाली सदियों तक एक समृद्ध, सशक्त और विकसित राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित रहेगा और विश्वगुरु के रूप में संपूर्ण विश्व का मार्गदर्शन करेगा।

अभियंता (परियोजना प्रबंधन)
पीएसबीजी–I, नई दिल्ली

जल है तो कल है

जल है तो कल है अब तुम समझ भी लो इशारा,
नहीं तो मुश्किल होगा देखना जीवन का सवेरा।

जल ही जीवन, जल ही सम्पूर्ण सृष्टि का आधार,
अगर नहीं सम्भले तो ना रहेगी नदी, ना किनारा।

बूँद–बूँद है कीमती बूँद–बूँद से भर जाता सागर,
जल ना बचेगा तो बचेगा न भविष्य का नजारा।

शिखा गोंड

जितना भी संभव हो, करो इसका संरक्षण तुम,
ताकि पृथ्वी पर बचा रहे सभी जीवों का बसेरा।

जल के कम प्रयोग से, बारिश के जल प्रबंधन से,
होगा संरक्षण भी और उज्ज्वल भविष्य हमारा।

पत्नी–श्री कृष्ण बिहारी, वरिष्ठ प्रबंधक
पीएस–ईआर, कोलकाता

मिट्टी और अपशिष्टः एक अदृश्य पारिस्थितिक संघर्ष

दीपक कुमार पाण्डेय

भारतवर्ष के छोटे–बड़े सभी शहर अंधाधुंध कचरे का निर्माण कर रहे हैं। कचरे से निर्मित विनाशलीला आज छुपाई नहीं जा सकती। कचरे ने सभी जैविक तथा अजैविक इकाइयों में अपना घर बना लिया है। प्रदूषित हवा और दूषित जल तो हमें दिख जाते हैं किन्तु माटी (मिट्टी) में कचरा आसानी से दृष्टिगोचर नहीं हो पाता......। माटी में कचरा होता है लेकिन अदृश्य रूप में, कितनी विचित्र बात है कि अदृश्य रूप में अपशिष्ट की उपस्थिति का हमें आभास नहीं है। माटी के माध्यम से ही आज फल, सब्जियों तथा दूध में भी सूक्ष्म किन्तु घातक अपशिष्ट समा चुके हैं।...... ये अब हमारे अस्तित्व पर खतरा बनकर मंडरा रहे हैं। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि अभी तक हम कचरे अथवा अपशिष्टों की तकनीकी तौर पर पहचान ही नहीं कर पाये हैं।

माटी का कार्य कचरे का भक्षण भी है। लेकिन इतनी मात्रा में माटी कचरे को पचा नहीं पा रही है। जिस प्रकार मानव अधिक भोजन करके खाद्य सामग्री अपने पेट में पचा नहीं पता और बीमार पड़ जाता है........ ठीक वही स्थिति माटी की भी है। माटी अपनी शक्ति के अनुरूप कचरे को स्वयं में समाहित कर रही है लेकिन कचरे की अधिकाधिक मात्रा उससे पच नहीं पा रही है। माटी द्वारा दो प्रकार से कचरा भक्षण किया जाता हैः

- प्रत्यक्ष रूप में कचरा भक्षण
- अप्रत्यक्ष रूप में कचरा भक्षण

माटी ऐसा विचित्र द्रव्य है जो हमें मौन रहकर भी ज्ञान सिखाती है। माटी वायु अथवा जल से बिलकुल पृथक है......। जब कचरा जल में मिलता है जो जल प्रदूषित हो जाता है..... तथा जब कचरा वायु में मिलता है जो वायु प्रदूषित हो जाती है..... लेकिन जब यही कचरा माटी में मिलता है तो माटी उसे अपने जैसा बना देती है अर्थात माटी बना देती है। प्लास्टिक जैसे कई हठी अथवा बदमाश कचरे भी माटी के आगोश में माटी बन जाते हैं लेकिन इसके लिये माटी सैकड़ो वर्षों का समय लेती है। माटी एक कर्मयोगी दिव्यात्मा है जो सभी प्रकार के कचरे का जैविक निष्पादन कर पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखने पर बल देती है। माटी का एक सुकर्म ''प्रत्यक्ष रूप में कचरा भक्षण'' कहा जाता है।

माटी अप्रत्यक्ष रूप में कचरा भक्षण भी करती है........। जी हाँ.......यह अपने द्वारा पोषित वनस्पतियों के माध्यम से भी कचरे को माटी में तब्दील कर देती है। उदाहरण के तौर पर जंगल अथवा वनों में अपशिष्ट शीघ्र विघटित हो जाते हैं। माटी के अलावा पेड़–पौधे उस अपशिष्ट को शिष्ट बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

भारत के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अनुसार देश में प्रत्येक वर्ष 62 मिलियन टन कचरा उत्पन्न होता है। कचरे की इतनी बड़ी मात्रा को माटी यथाशीघ्र भक्षण नहीं कर पाती ....क्योंकि इसमें जैविक तथा अजैविक कचरा दोनों होता है। लेकिन इसमें लगभग 30 मिलियन टन गीला कचरा होता है जिसको माटी शीघ्र पचा सकती है......। लेकिन बिडम्बना है कि कचरा प्रत्यक्ष रूप में माटी तक पहुंच नहीं पाता। यह माटी तक तब पहुँचता है जब यह जल अथवा स्वयं सड़कर अपशिष्टासुर नहीं बन जाता। कचरे के दूसरे रूप अपशिष्टासुर (सड़ा–गला अथवा द्रवीय रूप) को पचाना माटी के लिए अत्यधिक कठिन होता है। जो कचरा प्रकृति में जैविक है आसानी से विघटित हो सकता है उसे मिट्टी के हवाले कर देना चाहिए।

दुनिया में कोई भी वस्तु अप्राकृतिक नहीं है। प्रत्येक वस्तु प्राकृतिक है..... .....हम भी प्राकृतिक वस्तु (जीव) हैं !!! अपशिष्ट शायद वह है जो हमारी समझ से परे है .... इसलिए हम ना ही उसका इस्तेमाल कर पा रहें है और ना ही संहार। बड़े चिंता की बात है कि माटी उसे स्वयं में विलय करा सकती है लेकिन हम स्थलीय जीव होकर भी उस तक कचरा पहुंचा नहीं पा रहे हैं....। माटी सीवेज की नालियों में बहते गंदे पानी को पी नहीं सकती अथवा कचरे के पहाड़ को खा नहीं सकती !!!!! माटी एक सीमित मात्रा में कचरे से लिपटकर उसे माटी बना सकती है। माटी से कचरा भक्षण करना उचित है लेकिन माटी पर कचरा लादना उचित नहीं है यह माटी की हत्या करने जैसा है।

वह माटी ही है जो अपशिष्ट से लड़ सकती हैं।.....माटी ही अपशिष्ट को हरा सकती है..... इसके लिए हमें अपशिष्ट की उचित मात्रा को माटी तक पहुंचना होगा। अधिकाधिक मात्रा में कचरे को इकठ्ठा करना ठीक नहीं है......। माटी से क्षमा मांगकर उसके सानिध्य में आये कचरे को माटी के यथास्वरूप बनाना होगा। हमें कचरे को भी समझना होगा ....कौन सा कचरा है.........? कैसा गुण अथवा अवगुण है ....? यदि हमने कचरे को नहीं जाना तो उसका मुकाबला नहीं कर पाएंगे। या फिर ऐसा भी हो सकता है कि हमारी अज्ञानता कचरे को और भी शक्तिशाली बना दे और माटी को बर्बाद कर दे।

माटी इतना सक्रिय द्रव्य है कि वह भौतिक संसार की सभी वस्तुओं को स्वयं में समाहित कर सकती है। उड़ती हुई माटी का एक सैनिक (धूल) भी यन्त्र, उपयंत्र, मशीनरी अथवा उसकी पेंटिंग को बर्बाद करने में सदैव आगे रहता है। माटी द्वारा भौतिक संसार की सभी वस्तुओं को बर्बाद करने का गुण ही प्राकृतिक संतुलन का जीवन दर्शन कहा जाता है। हम जिस मकान अथवा बिल्डिंग में बैठे हैं अभी तुरंत यदि इससे बाहर निकल जाएँ और 100 साल बाद देखें तो पूरा मकान अथवा बिल्डिंग माटी के चपेट में आ चुकी होगी। कुछ वर्ष और छोड़ दें तो छोटे–बड़े वनस्पति और जीव, मकान को खाकर पुनः माटी बना देंगे।

परमसृष्टा ने माटी को महाविनिर्माण की जिम्मेदारी दी है वह अपनी जिम्मेदारी निभाएगी ही.......।

कोई भी द्रव्य या पदार्थ अपशिष्ट इसलिए बना क्योंकि हमने उसके साथ अपशिष्ट की भांति व्यवहार किया। मूल कारण जानने के लिए हमें अपने भूतकाल की ओर देखना होगा। पिछली सदी तक मानवों द्वारा त्याज्य किया जाने वाला पदार्थ अधिकतर जैविक पदार्थ होता था। इसलिए वह अपशिष्ट प्राकृतिक तरीके से मिट्टी में विघटित हो जाता था। या फिर ये कहें कि प्राकृतिक तरीके से पुनःचक्रण (Recycle) हो जाता था। आज की स्थिति बिलकुल अलग है। आज मानव द्वारा जनित कचरे में रसायनों का बोलबाला है। इस कचरे में प्लास्टिक के साथ–साथ अनगिनत अजैविक पदार्थ भी आ गए हैं। अब सतत् रूप से जनित होते इस कचरे ने स्वच्छता और सुचिता के पैमाने बदल दिए हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि भिन्न–भिन्न गुणों वाले अपशिष्ट आपस में मिलकर इतना गंदा माहौल पैदा कर दिए हैं कि इनके निपटान का तरीका ढूँढना मुश्किल हो रहा है। यद्यपि कितना भी कचरा आ जाए माटी उसे स्वयं में समाहित करने के लिए तैयार बैठी है .....कि कब कचरा आये और मैं उसे पचा लूँ। लेकिन आज मानव कचरे का हिमालय तैयार कर चुका है.......। है ना ये चिंता की बात।

भौतिक रूप में अवांछित उत्पादों को कचरे की संज्ञा दी गई है। अपशिष्ट अथवा कचरा जीव–जन्तु तथा वनस्पति जगत पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। दूसरे शब्दों में कहें समस्या रहित जीवन जीने के लिए तो कचरे का निपटान एवं प्रबंधन अति आवश्यक है। कचरा मिट्टी, वायु तथा जल के साथ संयोग करके उनके गुण–धर्म को बदल देता है। जिसे आम भाषा में प्रदूषण कहा जाता है। कचरे से होने वाला सबसे बड़ा नुकसान मिट्टी की बर्बादी है। कचरा धरती पर पाये जाने वाले विभिन्न जल निकायों जैसे तालाब, नदी तथा अन्य प्रवाहमान जल प्रदायक निकायों को गंदा अथवा विषैला कर देता है। इस प्रकार ये सभी जल निकाय माटी तथा वनस्पतियों के लिए खतरा बन जाते हैं।

मानव जीवनयापन करने के लिए विभिन्न वस्तुओं का उपभोग करता रहता है। उपभोग की वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए वह उसे प्रकृति से प्रत्यक्ष रूप में ग्रहण करता है या उसे बाजार से खरीदता है। उपभोग की ये सभी वस्तुएं कचरा अर्थात अनुपयोगी पदार्थ पैदा करती हैं। ये पदार्थ प्रत्यक्ष रूप में मानव के द्वारा इस्तेमाल नहीं किए जा सकते। इसलिए मानवीय दृष्टिकोण से कचरे का उत्पादन सतत रूप से कायम है। वर्तमान में मानव सभ्यता का विकास तेजी से हो रहा है जिसके कारण अपशिष्ट की मात्रा भी बढ़ती जा रही है। माटी के लिए इन अपशिष्टों का भक्षण करना इसलिए कठिन हो गया है क्योंकि कई अपशिष्ट बहुत खतरनाक हैं........। माटी को उसे पचाने के लिए काफी समय तक उसे अपने उदर में रखना पड़ रहा है। माटी हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। यहाँ हम अपशिष्ट अथवा कचरे को भी माटी बनाने में सक्षम हैं लेकिन एक सीमित मात्रा में ही.........। जब कचरे की अत्यधिक मात्रा माटी में डाली जाती है तो कचरा माटी के प्राकृतिक गुणों को कम कर देता है जिसे विज्ञान की भाषा में प्रदूषण कहा जाता है।

माटी के अंदर प्राकृतिक तरीके से कचरे का विघटन करने की अद्भुत क्षमता है किन्तु यह क्षमता सीमित है। कचरे की अधिक मात्रा पाकर माटी स्वयं रोगी हो जाती है। इसमें एक दूसरा पहलू भी है – बायोडिग्रेडेबल तथा नॉन–बायोडिग्रेडेबल कचरा। बायोडिग्रेडेबल कचरे को माटी शीघ्र पचा लेती है परन्तु माटी द्वारा नॉन–बायोडिग्रेडेबल कचरे को पचाना कठिन होता है। भले ही इसका नाम नॉन–बायोडिग्रेडेबल है, फिर भी माटी अपनी पूरी शक्ति से पचा ही लेती है............। लेकिन इस कार्य में उसे कई वर्ष लग जाते हैं ....कभी–कभी सैकड़ो वर्ष भी। संसार के सभी शहर उपजाऊ मिट्टी के भक्षक हैं। शहरी जिंदगी के अंधानुकरण से गाँव शहर बनते जा रहे हैं। इससे माटी को सबसे अधिक चोट पहुंच रही हैं। शहर का फैलाव आसपास की उपजाऊ जमीन को खा रहा है। शहरों के पास जो खेत थे वहां अट्टालिकाएं बनती जा रही हैं। माटी को रौंदकर सीमेंट अपनी विजय का प्रदर्शन कर रहा है.....। माटी सीमेंट के अहंकार को देखकर चुप है।

माटी की बर्बादी में हम बहुत बड़े गुनहगार हैं। मकान बनाने के कार्य को हमने अपनी सफलता का मापदंड बना लिया है। हमारी अति महत्वकांक्षा ही शहरीकरण को बढ़ावा दे रही है। शहरी नागरिक बनना गौरव की बात हो गई है। पेड़ों अथवा जंगलों की कटाई की प्रवृत्ति हमें शहरी बना रही है किन्तु यह माटी को सुषुप्तावस्था में भेज दे रही है अर्थात माटी कंक्रीट की कैदी बनती जा रही है। हम कम पड़ती खेती की जमीन के लिये परेशान नहीं हैं.....। हम परेशान हैं कि इस शहर को और कितना बड़ा बनायें........ या चकाचौंध करें।

वरि. अभियंता (एफएमएस)
ट्रांसफॉर्मर प्लांट, झांसी

अष्टांग योग क्या है?

महर्षि पतंजलि ने योग को 'चित्त की वृत्तियों के निरोध' (योगः चित्तवृत्तिनिरोधः) के रूप में परिभाषित किया है। उन्होंने 'योगसूत्र' नाम से योगसूत्रों का एक संकलन किया है, जिसमें उन्होंने पूर्ण कल्याण तथा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि के लिए आठ अंगों वाले योग का एक मार्ग विस्तार से बताया है। अष्टांग योग (आठ अंगों वाला योग), को आठ अलग–अलग चरणों वाला मार्ग नहीं समझना चाहिए; यह आठ आयामों वाला मार्ग है जिसमें आठों आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। योग के ये आठ अंग हैं: **1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम 5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि**

बैटरी भंडारण और रिसाइक्लिंग

असद अली

बैटरी:

बैटरी एक ऐसा उपकरण है जिसमें इलेक्ट्रिक सेल का एक समूह होता है जो रासायनिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करके डायरेक्ट करंट (DC) के स्रोत के रूप में कार्य करता है। बैटरियों की दो मुख्य श्रेणियाँ हैं:

क) प्राइमरी बैटरियाँ: प्राइमरी बैटरियाँ गैर–रिचार्जेबल और एकल–उपयोगी (डिस्पोजेबल) होती हैं, जिन्हें केवल एक बार इस्तेमाल किया जा सकता है। एक बार पूरी तरह डिस्चार्ज हो जाने के बाद इन्हें पुनः चार्ज नहीं किया जा सकता, इसलिए इन्हें एकल–चक्र (single-cycle) बैटरी भी कहा जाता है। इनमें मौजूद रसायन उपयोग और समय के साथ समाप्त हो जाते हैं, जिसके कारण डिस्चार्ज होने पर इन्हें त्यागना पड़ता है। **उदाहरण:** एल्कलाइन बैटरियाँ तथा ड्राई सेल बैटरियाँ।

चित्र 1 : ड्राई सेल बैटरी

ख) सेकेंडरी बैटरियाँ: सेकेंडरी बैटरियाँ पुनर्चक्रणीय (रिचार्जेबल) बैटरियाँ होती हैं, जिन्हें बार–बार चार्ज करके लंबे समय तक उपयोग किया जा सकता है। डिस्चार्ज होने पर इन्हें आसानी से पुनः चार्ज किया जा सकता है, जिससे इनकी आयु और उपयोगिता बढ़ती है। इनका व्यापक उपयोग विद्युत वाहनों (इलेक्ट्रिक व्हीकल्स) और मोबाइल फोन में होता है। **उदाहरण:** लिथियम–आयन (Li-Ion) बैटरी, लिथियम–पॉलीमर (Li-Polymer) बैटरी, तथा लेड–एसिड (Lead-Acid) बैटरी।

चित्र 2 : लेड–एसिड बैटरी

बैटरी भंडारण:

बैटरी भंडारण या बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (BESS) ऐसी तकनीक है, जो विद्युत ऊर्जा को रिचार्जेबल बैटरियों में संग्रहीत करती है। यह ऊर्जा भविष्य में उपयोग के लिए सुरक्षित रहती है। इस प्रणाली में विद्युत ग्रिड, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा या अन्य स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित किया जाता है। जब आवश्यकता पड़ती है, तो संग्रहीत ऊर्जा को पुनः विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करके विविध अनुप्रयोगों में उपयोग किया जाता है, जैसे कि ग्रिड स्थिरीकरण, पीक लोड प्रबंधन, नवीकरणीय ऊर्जा का एकीकरण और बैकअप पावर। बैटरी भंडारण का स्तर निम्न प्रकार का हो सकता है:

चित्र 3 : बैटरी भंडारण के स्तर

बैटरी ऊर्जा भंडारण की प्रक्रिया:

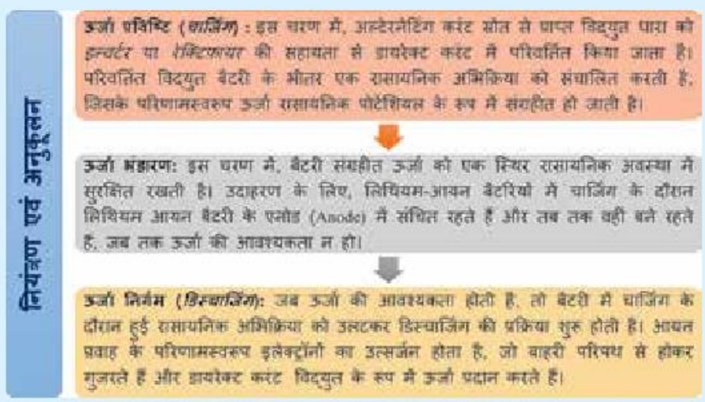

चित्र 4 : बैटरी ऊर्जा भंडारण की प्रक्रिया

बैटरी ऊर्जा भंडारण के अनुप्रयोग:

बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली बिजली की आपूर्ति और मांग को संतुलित करने, नवीकरणीय ऊर्जा के एकीकरण को बढ़ावा देने, तथा विभिन्न क्षेत्रों को समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, वर्ष 2025 में वैश्विक बैटरी ऊर्जा भंडारण क्षमता के 160 GWh तक पहुँचने का अनुमान है।

- **ग्रिड–स्तरीय ऊर्जा भंडारण:** बैटरी भंडारण प्रणाली अतिरिक्त नवीकरणीय ऊर्जा को संग्रहीत करती है, ताकि उच्च मांग या कम उत्पादन की अवधि में इसका उपयोग किया जा सके।
- **सहायक ग्रिड सेवाएँ:** बैटरी भंडारण प्रणाली आवृत्ति नियमन, वोल्टेज

समर्थन, और ब्लैक–स्टार्ट क्षमता प्रदान करके विद्युत ग्रिड की स्थिरता सुनिश्चित करती है।

• **औद्योगिक अनुप्रयोगः** बैटरी भंडारण प्रणाली बैकअप पावर प्रदान करती है और पीक डिमांड शुल्क को प्रबंधित करती है। उदाहरण के लिए, डेटा सेंटर और औद्योगिक पार्क।

• **आवासीय ऊर्जा भंडारणः** बैटरी भंडारण प्रणाली रूफटॉप सोलर के साथ मिलकर घरेलू उपयोग के लिए ऊर्जा का कुशलतापूर्वक संग्रहण करती है, जिससे ग्रिड पर निर्भरता कम होती है।

• **ग्रामीण एवं ऑफ–ग्रिड विद्युतीकरणः** बैटरी भंडारण प्रणाली माइक्रोग्रिड्स के माध्यम से सौर ऊर्जा का उपयोग करके दूरस्थ क्षेत्रों में विश्वसनीय बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करती है।

• **इलेक्ट्रिक वाहन एकीकरणः** बैटरी भंडारण प्रणाली तेज चार्जिंग स्टेशनों को समर्थन प्रदान करती है।

बैटरी भंडारण आधारित ईवी चार्जिंग स्टेशन

• **दीर्घावधि ऊर्जा भंडारणः**

• बैटरी भंडारण प्रणाली, फ्लो या सोडियम–आयन बैटरियों का उपयोग करके, 8 घंटे या उससे अधिक समय तक ऊर्जा का कुशल संग्रहण करती है।

बैटरी ऊर्जा भंडारण की चुनौतियाँः

• **ऊर्जा घनत्व और प्रदर्शनः** लिथियम–आयन बैटरियों की ऊर्जा घनता जीवाश्म ईंधनों की तुलना में कम है, जो इलेक्ट्रिक वाहनों और पोर्टेबल उपकरणों के लिए एक चुनौती है।

• **लागत और स्केलेबिलिटीः** लिथियम, कोबाल्ट और निकेल जैसे कच्चे माल की उच्च लागत और जटिल उत्पादन प्रक्रियाएँ बैटरी निर्माण को महंगा बनाती हैं।

• **सुरक्षा जोखिमः** लिथियम–आयन बैटरियाँ ओवरचार्जिंग या भौतिक क्षति की स्थिति में अति ताप, आग या विस्फोट का खतरा पैदा करती हैं।

• **पर्यावरणीय प्रभावः** बैटरी कच्चे माल, जैसे कोबाल्ट और लिथियम, के खनन से पर्यावरणीय क्षति, जल प्रदूषण और उच्च कार्बन उत्सर्जन होता है।

• **ग्रिड एकीकरणः** बैटरी भंडारण की वर्तमान क्षमताएँ पीक डिमांड को पूरा करने या लंबी अवधि के भंडारण के लिए अपर्याप्त हैं, जिससे ग्रिड स्थिरता प्रभावित होती है।

बैटरी ऊर्जा भंडारण का भविष्यः

• **लिथियम–आयन बैटरियों में प्रगतिः** इलेक्ट्रोड सामग्री और सेल डिजाइन में नवाचारों के चलते उच्च ऊर्जा घनत्व और तेज चार्जिंग क्षमताओं का विकास हो रहा है।

• **सॉलिड–स्टेट बैटरियों का उदयः** तरल इलेक्ट्रोलाइट्स की जगह ठोस इलेक्ट्रोलाइट्स वाली सॉलिड–स्टेट बैटरियाँ अधिक सुरक्षा, लंबी आयु और उच्च ऊर्जा घनत्व प्रदान करने का वादा करती हैं।

• **एआई और स्मार्ट एकीकरणः** आर्टिफिशल इंटेलिजेंस बैटरी प्रबंधन प्रणालियों के अनुकूलन, बैटरी खराब होने की भविष्यवाणी और ग्रिड एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

• **हाइब्रिड सिस्टम्सः** बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणालियाँ ग्रिड–स्तरीय अनुप्रयोगों में तेजी से विस्तार करेंगी, जिसमें नवीकरणीय ऊर्जा के साथ हाइब्रिड सेटअप भी शामिल होंगे।

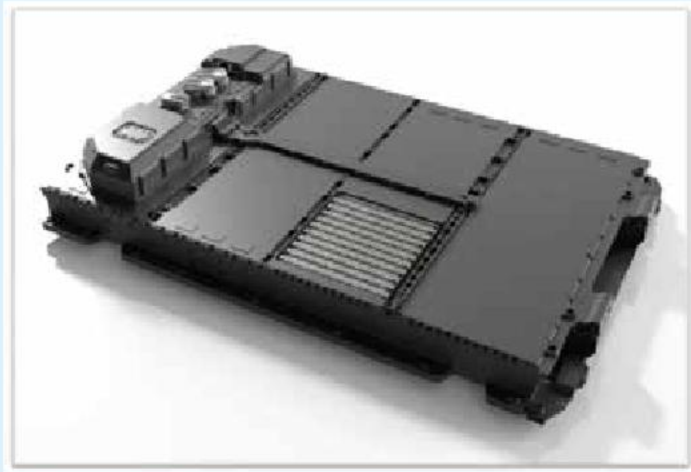

चित्र 5 : मर्सिडीज–बेंज ई क्यू एस कार में इस्तेमाल होने वाली सॉलिड–स्टेट बैटरी

बैटरी भंडारण के महत्व को समझने के बाद, अब हम बैटरी रीसाइक्लिंग की प्रक्रिया और इसके लाभों पर चर्चा करेंगे।

बैटरी रिसाइक्लिंगः

बैटरी रिसाइक्लिंग वह प्रक्रिया है जिसमें पुरानी, अनुपयोगी या दोषपूर्ण बैटरियों को एकत्रित कर, उन्हें अलग–अलग भागों में विघटित और प्रसंस्कृत किया जाता है, ताकि उनमें मौजूद मूल्यवान धातुएँ जैसे लिथियम, कोबाल्ट, निकेल, मैंगनीज आदि को पुनः प्राप्त किया जा सके। इन सामग्रियों का उपयोग नई बैटरियों या अन्य उत्पादों के निर्माण में किया जाता है। इसका उद्देश्य पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना और खनन पर निर्भरता को न्यूनतम करना होता है।

बैटरी रिसाइक्लिंग की प्रक्रियाः

चित्र 6 : बैटरी रिसाइक्लिंग प्रक्रिया

बैटरी रिसाइक्लिंग के अनुप्रयोगः

• **बैटरी निर्माण के लिए सामग्री पुनः प्राप्तिः** लिथियम, कोबाल्ट और निकेल को पुनः प्राप्त करके आयात पर निर्भरता कम की जाती है।

• **सेकंड–लाइफ बैटरी अनुप्रयोगः** इलेक्ट्रिक वाहनों की बैटरियों को कम मांग वाले उपयोगों में पुनः प्रयुक्त किया जाता है।

• **ई–वेस्ट प्रबंधनः** उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स की बैटरियों को संसाधित करके पर्यावरणीय खतरे कम किए जाते हैं।

• **रोजगार सृजन और सर्कुलर इकोनॉमीः** रिसाइक्लिंग रोजगार के अवसर पैदा करता है और सतत् आपूर्ति श्रृंखलाओं को बढ़ावा देता है।

• **नियामक अनुपालनः** पुनर्नवीनीकरण सामग्री और उत्सर्जन में कमी के वैश्विक मानदंडों को पूरा करता है।

• **सतत निर्माणः** नई बैटरियों में पुनर्नवीनीकरण सामग्री को एकीकृत करके लाभ मार्जिन बढ़ाए जाते हैं।

चित्र 7 : संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया में माउंटेन पास नामक रेयर अर्थ मिनरल खदान

बैटरी रिसाइक्लिंग की चुनौतियाँः

• **निम्न रिसाइक्लिंग दरः** कई क्षेत्रों में प्रयुक्त बैटरियों के संग्रह के लिए मजबूत प्रणाली नहीं होने के कारण रिसाइक्लिंग दर कम है, उदाहरण के लिए, वैश्विक स्तर पर केवल लगभग 5% लिथियम–आयन बैटरियाँ ही रीसाइकिल होती हैं।

• **तकनीकी चुनौतियाँः** वर्तमान रिसाइक्लिंग विधियाँ (जैसे पायरोमेटलर्जी एवं हाइड्रोमेटलर्जी) अक्सर मूल्यवान सामग्री जैसे लिथियम का केवल अंश ही पुनः प्राप्त करती हैं और इनमें ऊर्जा खपत अधिक होती है।

• **आर्थिक बाधाएँः** रिसाइक्लिंग प्रक्रियाएँ नई सामग्री की खनन प्रक्रिया की तुलना में महंगी होती हैं, जिससे रिसाइक्लिंग अवसंरचना में निवेश कम होता है।

• **पर्यावरणीय और स्वास्थ्य जोखिमः** पायरोमेटलर्जी जैसी रिसाइक्लिंग प्रक्रियाएँ हानिकारक अपशिष्ट और उत्सर्जन उत्पन्न कर सकती हैं, जिसके लिए कड़े पर्यावरणीय नियंत्रण आवश्यक हैं।

• **नियामक और नीति अंतरः** विभिन्न देशों में रिसाइक्लिंग नियम अलग–अलग हैं, जिससे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और मानकीकृत प्रक्रियाओं में चुनौती आती है।

बैटरी रिसाइक्लिंग का भविष्यः

• **नवीन रिसाइक्लिंग तकनीकेंः** डायरेक्ट रिसाइक्लिंग पद्धतियाँ उभर रही हैं, जिनमें बैटरी के पुर्जों को पूरी तरह तोड़े बिना पुनः उपयोग किया जाता है, ताकि बैटरी की दक्षता बढ़ाई जा सके और ऊर्जा की खपत कम हो।

• **इंफ्रास्ट्रक्चर का विस्तारः** दुनिया भर में नए रिसाइक्लिंग संयंत्र स्थापित हो रहे हैं, जो ग्रेफाइट और अन्य महत्वपूर्ण खनिजों की पुर्नप्राप्ति पर केंद्रित हैं।

चित्र 8 : असेंड एलिमेंट्स बैटरी रिसाइक्लिंग सुविधा, कॉविंगटन, जॉर्जिया

• **रिसाइक्लेबिलिटी के लिए डिजाइनः** निर्माता मॉड्यूलर डिजाइनों और मानकीकृत रसायनों को प्राथमिकता दे रहे हैं ताकि बैटरियों को आसानी से खोला और रिसाइकिल किया जा सके।

• **सर्कुलर इकोनॉमी मॉडलः** इस्तेमाल की गई बैटरियों को अन्य अनुप्रयोगों (जैसे स्टेशनरी ऊर्जा भंडारण) के लिए पुनः उपयोग करना, उनके जीवनचक्र को पूर्ण रिसाइक्लिंग से पहले और लंबा करेगा।

• **नियामक परिवर्तनः** कड़े नियम, जैसे विस्तारित उत्पादक जिम्मेदारी के प्रावधान, निवेश को बढ़ावा देंगे।

निष्कर्षः

बैटरी भंडारण और रिसाइक्लिंग एक सतत ऊर्जा भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लिथियम–आयन और सॉलिड–स्टेट बैटरियों में प्रगति अधिक दक्षता और सुरक्षा का वादा करती है, जबकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और हाइब्रिड सिस्टम ग्रिड एकीकरण को सुदृढ़ बना रहे हैं। डायरेक्ट रिसाइक्लिंग और मॉड्यूलर डिजाइन जैसी नवाचार तकनीकें कम रिकवरी दर और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान कर रही हैं तथा सर्कुलर अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित कर रही हैं।

हालाँकि उच्च लागत, आपूर्ति श्रृंखला की बाधाएँ और नियामकीय चुनौतियाँ बनी हुई हैं, फिर भी बढ़ता हुआ बुनियादी ढांचा और कड़े नियम इस क्षेत्र को आगे बढ़ा रहे हैं। वैश्विक बैटरी बाजार में तेजी और रिसाइक्लिंग क्षमता के विस्तार के साथ, ये तकनीकें पर्यावरणीय प्रभाव को कम करेंगी, महत्वपूर्ण खनिजों की उपलब्धता सुनिश्चित करेंगी और डिकार्बोनाइजेशन का समर्थन करेंगी। इस प्रकार, वर्ष 2030 तक यह एक निम्न–कार्बन ऊर्जा पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करने में सहायक होंगी।

प्रबंधक (सीडीटी)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नोएडा

नारीः खुद का सम्मान हो तुम

नारी, खुद का सम्मान हो तुम,
परिवार तुम्हारी दुनिया है, पर
इस दुनिया के बाहर, सारी दुनिया है।
रिश्ते तुम्हारी ताकत है,
इन्हें जंजीर बनाकर ना पहनो तुम,
नारी हो, नारी होने का सम्मान करो तुम।

कुदरत ने जब दिया है जीवन,
फिर जीने की किसी से क्यों इजाजत लो।
तुम्हारा भी आसमान है पूरा,
अपनी भी कोई जगह चुनो।
नारी, खुद का सम्मान हो तुम ।

खुद की शक्ति हो,
खुद अपना अभिमान हो तुम,
खुद से खुद को दी गई,
"नारी" पहचान हो तुम ।
हवा के संग बहुत बह चुके,
अब हवा में खुलकर साँसें लो,
आग में तपकर बहुत ढल चुके,
अब रोशन अपनी मशाल करो ।
नारी हो, नारी होने का सम्मान करो ।

रोशन आरा

बेटे को अपना मानो,
पर बेटी को पराया मानकर ना पालो,
सपनों की उड़ान को, मौका बराबर दो,
शक्ति हो, विश्वास हो तुम,
बदलाव की आवाज हो तुम।
नारी हो, खुद का सम्मान हो तुम।

ज्ञान से अपने मन को जगाओ,
काबिलियत से देश को जगमगाओ,
हर राह पर बढ़ो, चाहे विज्ञान, कला या राजनीति,
या फिर हो व्यापार की नीति।
जहाँ भी रखो कदम, छू लो आसमान,
इतिहास रचो तुम, बनो सबकी पहचान।

अपना सहारा खुद हो,
अपना खूब ख्याल रखो,
संघर्ष में किसी को अब अकेला ना छोड़ो,
मिलकर अपने हक को जीतो,
जब नारी की ताकत बने नारी,
तब उन्नति की राह बढ़े।
मानव के अस्तित्व का आधार हो तुम,
नारी हो, खुद का सम्मान हो तुम ।

उप अभियंता,
क्षेत्रीय प्रचालन प्रभाग, लखनऊ

संस्मरण

मन, कर्म और समर्पण : मेरी आत्मयात्रा

विशाखा जैन

जिंदगी हमें कभी पीड़ा की भाषा में, कभी प्रेम की भाषा में, और कभी बिल्कुल मौन रहकर भी बहुत कुछ सिखा जाती है। मेरी यात्रा भी ऐसी ही रही–दर्द से उपचार तक, और फिर आत्म–समर्पण तक।

दर्द–पहली बार जिसने भीतर झाँकने को मजबूर किया

दिसंबर 2023 में अचानक रोग ने घेर लिया। पीड़ा इतनी कि नींद रूठ गई और मन प्रश्नों से भर गया। डॉक्टर ने कहा–"शल्य चिकित्सा (सर्जरी) करनी होगी।" परिवार ने समझाया–"संयम रखो, उचित उपचार नहीं हुआ समस्या फिर लौट आएगी।"

मैं उलझन में थी। लगा जैसे ईश्वर मुझे परख रहे हों। उसी समय मुझे महाभारत का प्रसंग याद आया–जब अर्जुन ने युद्ध से मुँह मोड़ना चाहा और श्रीकृष्ण ने कहाः **"कर्म ही तेरा धर्म है, परिणाम की चिंता मत कर।"** मैंने भी निर्णय लिया–भागना नहीं, धैर्य और विश्वास के साथ सामना करना है। मैंने स्वयं को अनुशासन में ढाला–सादा भोजन, दाल–सब्जी और जीरा–नमक का हल्का तड़का। बाहर का खाना और चाय–कॉफी सब त्याग दिया। (सच कहूँ तो चाय छोड़ना मेरे लिए किसी युद्ध से कम नहीं था।)

जब उपचार दवा से नहीं, मन से आया

उपचार बदलते रहे–एलोपैथी, आयुर्वेद, होम्योपैथी...

और फिर एक चिकित्सक ने कहा– **"आपका मूलाधार चक्र (रूट चक्र) कमजोर है, मन पर काम कीजिए।"** ऐसा लगा मानो किसी ने भीतर जमी धूल साफ कर दी हो। मैंने ध्यान, नाद–चिकित्सा (साउंड हीलिंग), और आत्मचिंतन आरम्भ किया।

और जो एक वर्ष में न हो सका– **वह केवल एक महीने में हो गया।**

रोग समाप्त। चिकित्सक आश्चर्यचकित। और मैं... कृतज्ञ।

जैन धर्म की शिक्षा मेरे भीतर गूँजने लगी– **"मनुष्य अपने कर्मों का स्वयं निर्माता है।"** सच में, मेरा मन ही मेरी असली औषधि था।

हम्पी : जहाँ प्रकृति ने मुझे 'समर्पण' सिखाया

उपचार की यह आंतरिक यात्रा जारी ही थी कि हाल ही में मुझे हम्पी में सात–दिवसीय एकांत–यात्रा (solo retreat) का अवसर मिला–मेरी पहली बड़ी एकल यात्रा। परिवार का उत्साह और समर्थन इतना मधुर था कि लगा मानो ब्रह्मांड मेरी राहें सहज बना रहा है।

इस यात्रा में मैंने एक अत्यंत प्रभावी जीवन–मंत्र सीखा– "समर्पण" (Surrender)

यात्रा से दो दिन पहले गेस्टहाउस के स्वामी से कहा–सुनी हो गई–उन्होंने बुकिंग रद्द करने को कहा। दिल्ली विमानतल पर वायु यातायात नियंत्रण (air traffic control) बाधित हुआ, उड़ानें विलंबित। लोग कथित त्रुटियों पर क्रोधित, हंगामा कर रहे थे। और मैं शांत खड़ी थी–क्योंकि मेरा उद्देश्य केवल एक थाः हम्पी पहुँचना।

इसी बीच, पहले से बुक किए चालक ने फोन किया– "आपको 2700 रुपये देने होंगे, मैं अब आपको नहीं लेने आऊँगा।" क्षणभर लगा–"अब क्या होगा?"

पर दिल ने कहा–"चिंता छोड़ो... समर्पण करो।"

मैंने एक अजनबी से साहस करके पूछा– "हम्पी कैसे पहुँचा जाए?"

उन्होंने स्नेहपूर्वक कहा– "आइए, मैं आपको बस–अड्डे तक छोड़ देता हूँ।"

अजनबी ने सहारा दिया।

टैक्सी चालक 2700 से 1300 पर आया, फिर मेरे रिट्रीट–सहभागियों से बात करने के बाद बोला– "500 रुपये दे देना, मैं गाड़ी भेज दूँगा।"

रात 2:30 बजे मैं हम्पी पहुँच चुकी थी–सुरक्षित, शांत और आभारी।

उस क्षण मन ने कहा– **"समर्पण हार नहीं, विश्वास की ऊँचाई है।"**

प्रकृति के बीच जीवन का सन्देश

तुंगभद्रा नदी के किनारे बैठकर जब दूर अंजनाद्री पर्वत को देखा–जहाँ हनुमानजी का जन्म हुआ–और दूसरी ओर यंत्रोद्धारक हनुमान मंदिर, तब मन में एक गहरी अनुभूति उठी–

"जन्म और उद्देश्य निश्चित हैं। बीच की नदी–यही जीवन–यात्रा है। और संतुलन वही पा सकता है, जो भीतर स्थिर है।"

हम्पी के विशाल पत्थर–जो अनगिनत वर्षों से बिना गिरे, केवल संतुलन पर टिके हैं–जैसे जीवन का गूढ़ पाठ पढ़ा रहे थेः **"तूफान आएँगे, पर संतुलन वही रख पाएगा जो समर्पित है।"**

यात्रा का सार

अब पीछे मुड़कर देखती हूँ तो स्पष्ट होता है– **बीमारी ने मुझे मेरे भीतर पहुँचाया,** जहाँ कर्मों की पहचान हुई। **मन ने मुझे स्वस्थ किया,** क्योंकि वही सबसे शक्तिशाली औषधि है। **हम्पी ने मुझे समर्पण सिखाया,** कि जहाँ प्रयास समाप्त हो, वहाँ से विश्वास प्रारम्भ होता है।

- कठिनाइयाँ गिराने नहीं, **जगाने** आती हैं।
- हर पीड़ा आत्मा की पुस्तक का एक अध्याय है–जो हमें ऊपर उठाता है।
- और कर्म... वे जीवन की दिशा तय करते हैं, पर मंजिल हमारी साधना और समर्पण से निर्मित होती है।

जब मन दृढ़ हो, कर्म सात्विक हों और विश्वास अडिग– तब जीवन केवल जीवन नहीं,

बल्कि मुक्ति की ओर बढ़ती एक दिव्य आत्मयात्रा बन जाता है।

वरिष्ठ प्रबन्धक (यूपीसी)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नोएडा

कच्चा घर और इकोसिस्टम

अरविंद कुमार पाण्डेय

मुझे आज भी वह दृश्य स्पष्ट याद है—लगभग पैंतीस वर्ष पहले का। मैं छोटा था, और मेरे **दादाजी** हर सुबह एक पलरी (अरहर के तने से बुनी टोकरी) और एक फावड़ा लेकर घर के पीछे बने छोटे **गड्ढे** की ओर चल पड़ते थे। गड्ढे की गीली मिट्टी खोदकर सिर पर रखकर घर तक लाते, और उसी से हमारे दूसरे बन रहे **कच्चे घर** की दीवारें धीरे–धीरे उठती जातीं।

इस प्रकार प्रति दिन मिट्टी निकालने से गड्ढा थोड़ा और गहरा, और बड़ा हो जाता था और धीरे–धीरे वह एक सामान्य गड्ढा– **एक छोटा सरोवर** बनने लगा था।

अब जब मैं बड़ा हो गया और कुछ समझ आई तो अनुभव करता हूँ कि एक साधारण मानव–क्रिया से एक पूरा नया पारिस्थितिकी–तंत्र (इकोसिस्टम) जन्म ले चुका था। कुछ ही वर्षों में उस सरोवर ने अपनी उपस्थिति का प्रभाव दिखाना आरंभ कर दिया:

वर्षा जल सरोवर में ठहरने लगा, जिससे **भूजल स्तर** सदा ही संतुलित बना रहा। गर्मियों में भैंसें उसी में पैठ जातीं और घंटों ठंडक पातीं। अलग–अलग किनारे पर कुत्ते, गाय, सुकर तथा बकरियाँ भी अड्डा जमा लेती। धीरे–धीरे उस सरोवर में मेढ़क, मछलियाँ, कछुए और पानी के पक्षी जैसे बगुले, जलमुर्गियाँ भी बसने लगे।

सरोवर के किनारे–किनारे दादा जी ने केला, सहजन, जामुन, अर्जुन, पलाश, अमरूद, बाँस, गूलर और अनेक फूलों के पौधे लगा दिए थे। गर्मियों में पेड़ों की छाँव और सरोवर की ठंडक मिलकर एक अलग ही सुख देती थी—मानो प्रकृति वहीं बैठकर हमें आशीर्वाद देती हो। वही किनारा हमारा एसी और कूलर हुआ करता था—प्राकृतिक, बिना पैसों वाला।

हमारे पड़ोस के दो **कुम्हार** भी नित्य वहाँ से मिट्टी निकालकर ले जाते और उसे गूँथकर सुंदर घड़े, सुराही, कुल्हड़, दियली तथा अन्य कई प्रकार के बर्तन बनाते। उस गड्ढे की मिट्टी से न केवल हमारा घर, बल्कि आसपास के अनेक घर बने थे। इस प्रकार एक गड्ढे ने कितनों का भोजन, कितनों का घर, कितनों का भविष्य सँभाला था।

पर उस समय मैं छोटा था– यह सब कुछ मेरे लिए बस रोज का दृश्य था, महत्व समझ से परे था।

आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मन में एक ही बात आती है—दादाजी ने अपनी भूमि से केवल मिट्टी नहीं निकाली थी, बल्कि उन्होंने पर्यावरण–संतुलन की एक पूरी पाठशाला खोल दी थी। वो आज के युगानुसार पढे–लिखे तो नहीं थे पर अपने कृतित्व से उन्होंने वो किया जो करना किसी नामी विश्वविद्यालय का पर्यावरण पर बड़ी डिग्री धारी मेधावी छात्र का सपना होता है। उसके लिए ये सब समझना ही कठिन है, करना तो दूर की बात है।

किन्तु अब...

समय बीता। दादाजी नहीं रहे। वह कच्चा घर भी अब नहीं है।

लोहे–सीमेंट के भवन उठ गए हैं और सरोवर हर वर्ष थोड़ा–थोड़ा भर दिया जाता है—कचरे, गोबर, मिट्टी और नई आवश्यकताओं से। क्योंकि परिवार बड़ा हो गया है, सबको पक्के घर चाहिए। उसकी व्यापकता जो बढ़ती थी, अब घटने लगी है। जो सरोवर कभी गाँव की **पारिस्थितिकी तंत्र का केंद्र** था, आज उपेक्षित हो गया है।

किन्तु वह आज भी है, जैसे किसी बूढ़े परिचित सा खड़ा हुआ—निर्मोही, शांत, पर इतिहास से भरा हुआ।

वर्षा उपरांत इस बार जब मैं गाँव गया, तो लम्बे समय तक उसके किनारे बैठा उसे निहारता रहा। उसके किनारे क्या अब तो घर की सीमा ही उसके किनारे पहुँच गई है। मुझे लगा जैसे वह मुझसे बात करना चाहता हो—अपनी पूरी कहानी सुना देना चाहता हो... कदाचित अपना दुःख भी, क्योंकि अब तो उसकी ओर कोई देखता भी नहीं। यदि देखता भी है तो बस घृणा से।

मुझे अचानक ऐसा लगा कि जैसे मनुष्यों के जैसे उस सरोवर की भी एक आयु है और वह अब वृद्ध हो चुका है—जैसे कुछ ही वर्षों का साथ और बचा हो।

उसको देखते हुए मुझे इक्ष्वाकु वंशीय महाराज सगर की कथा का स्मरण हो आया जिनके आदेश पर उनके 60 सहस्त्र पुत्रों ने सिंधु को खोदकर और विस्तार दिया जिसके उपरांत उनके नाम पर सिंधु को सागर भी कहा जाने लगा। मै समझता हूँ कि उस सरोवर के लिए मेरे दादा जी की भूमिका वही रही है जो सगर की सागर के लिए रही थी। वैसे मेरे दादा जी के नाम में "नारायण" शब्द था जिसका अर्थ ही है जल में स्थान या जल में निवास।

परंतु अब सबके लिए वह अनुपयोगी हो गया है। अब कोई कुम्हार मिट्टी लेने नहीं आता, कोई कच्चा घर बनाने मिट्टी निकालने नहीं आता। इसलिए उसकी सफाई भी नहीं होती। हर कोई बस उसे भर देना चाहता, वो भी जितना शीघ्र हो सके। अब उसमें गंदगी के ढेर हैं। पेड़ भी कुछ कट गए कुछ गिर गए।

दादाजी के जाने के पश्चात जैसे उसके **संरक्षक** ही नहीं रहे। वह अनाथ हो गया है। पूर्ण अनाथ, असहाय। अब तो मानो दादाजी के जाने के साथ–साथ **सरोवर भी विदा लेना चाहता हो,** क्योंकि उसका निर्माता, उसका जनक, उसका पालक, अब उसके साथ नहीं है।

दादाजी, आपके बनाये इस सरोवर की प्रत्येक बूँद में आपका परिश्रम, आपकी दृष्टि और आपकी ममता बसती है। आज मैं उसी सरोवर से आपकी उपस्थिति का अनुभव करता हूँ।

वरिष्ठ अभियंता (एचएसई)
टीबीजी, नोएडा

आलेख

स्टार्टअप से युवा सपनों को मिली नई उड़ान

चन्दन कुमार चौधरी

महाराष्ट्र में पुणे के रहने वाले मयूर पाटिल के पास एक मोटरसाइकिल थी। उन्होंने 2011 में अपनी मोटरसाइकिल का माइलेज बढ़ाने की कोशिश की और सफलता हासिल करते हुए इसका माइलेज 62 किलोमीटर तक बढ़ाया। 2017–18 में उन्होंने टेक्नोलॉजी डेवलप की और उसका ट्रायल बसों में किया। इससे 40 प्रतिशत उत्सर्जन कम हुआ और 2021 में उन्होंने इसका पेटेंट भी करा लिया। अटल न्यू इंडिया चैलेंज से 90 लाख रुपए ग्रांट मिलने के बाद वह अपने चार दोस्तों के साथ मिल कर अब अपना स्टार्टअप चला रहे हैं। आज मयूर वाहनों का वायु प्रदूषण कम करने और उनका माइलेज बढ़ाने वाला उपकरण बना रहे हैं। उनके इस अनोखे काम से जहां एक ओर पर्यावरण को लाभ मिल रहा है वही वे आत्मनिर्भर बन कर दूसरों को रोजगार भी दे रहे हैं। मयूर बताते हैं कि मोटरसाइकिल का माइलेज जो पहले 25 किमी था उसे हमने 39 किमी कर दिया। मयूर की तरह ही, अहमदाबाद के रहने वाले अंगद सिंह लीक से हटकर कुछ अलग करना चाहते थे। यही कारण है कि जब उन्हें मौका मिला तो उन्होंने अपना स्टार्टअप शुरु किया और माल परिवहन के लिए एक वेबसाइट चलाने लगे। इस स्टार्टअप की सफलता को देखते हुए अंगद के कुछ दोस्त नौकरी छोड़ कर उनके साथ काम करने लगे हैं। आज भारत में अगर यह बदलाव आ रहा है तो यह स्टार्टअप इंडिया के कारण संभव हुआ है जिसकी घोषणा पहली बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त 2015 को लाल किले की प्राचीर से की थी और 16 जनवरी 2016 को इसकी शुरुआत की गई थी। दरअसल, आज भारत में औसत उम्र करीब 29 साल है और यह आज दुनिया के सबसे युवा देशों में शामिल है। हमारी 65 फीसदी आबादी की औसत उम्र करीब 35 साल है। यानि यह युवाओं का देश है जिसके सपने भी युवा हैं और वह परंपरागत तरीके से हट कर कुछ अलग करना चाहते हैं जिसमें स्टार्टअप इंडिया उनकी मददगार साबित हो रही है और उनके सपने को नई उड़ान दे रही है।

क्या होता है स्टार्टअप

साधारण शब्दों में कहें तो स्टार्टअप का अर्थ होता है नयी कंपनी शुरू करना। ऐसी कंपनियों को युवा उद्यमी स्वयं या दो तीन लोगों के साथ मिलकर शुरू करते हैं। शुरू करने वाला व्यक्ति ही कंपनी में शुरुआती पूंजी लगाने के साथ कंपनी का संचालन भी करता है। ये कंपनी अपेक्षाकृत नये प्रोडक्ट्स या सेवाओं पर कार्य करती है, ऐसी सेवाएं जो उस समय बाजार में उपलब्ध नहीं होती हैं। हालांकि केंद्र सरकार के विभाग डिपार्टमेंट ऑफ इंडस्ट्रियल पॉलिसी एंड प्रमोशन (डीआईपीपी) के अनुसार "स्टार्टअप कंपनी वह कंपनी है जो भारत वर्ष में गत पांच वर्षों के अंदर रजिस्टर हुई है और जिसका टर्न ओवर 25 करोड़ से अधिक किसी भी वित्त वर्ष में अभी तक नहीं हुआ हो। यह कंपनी इनोवेशन, डेवलपमेंट, डिप्लॉयमेंट, नए प्रोडक्ट का व्यवसायीकरण, टेक्नोलॉजी आधारित सेवा अथवा बौद्धिक संपदा की दिशा में कार्य कर रही हो, ऐसी अपेक्षा की जाती है।" स्टार्टअप इंडिया के माध्यम से सरकार इन नए और छोटे–छोटे स्टार्टअप को न केवल वित्तीय सहायता, उचित मंच और प्रोत्साहन देती है बल्कि अटल इन्क्यूबेशन सेंटर जैसे कार्यक्रम के जरिए इन्हें चुनौतीपूर्ण माहौल में तरक्की करने का हुनर भी सिखाया जाता है।

स्टार्टअप की परिकल्पना का लक्ष्य

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सपना रहा है कि देश का युवा नौकरी मांगने वाला नहीं, नौकरी देने वाला बने। आत्मनिर्भर बनें। इसके लिए जरूरत है इन युवाओं के सपनों को सही रास्ता दिखाने की। स्टार्टअप इंडिया योजना का मुख्य उद्देश्य कुल मिलाकर उद्यमशीलता को बढ़ावा देना है जिससे देश में रोजगार के अवसर बढ़ें। आज के युवा कल के रोजगार सृजनकर्ता और इनोवेशन के लिए चौथी औद्योगिक क्रांति के नेतृत्वकर्ता हैं।

स्टार्टअप ने बदली न्यू इंडिया की सोच

आज कल हम चारों तरफ स्टार्टअप, स्टार्टअप, स्टार्टअप की गूंज सुनते हैं। यह साबित करता है कि यह स्टार्टअप का युग है, और यह भी सही है कि स्टार्टअप की दुनिया में आज भारत विश्व में एक प्रकार से नेतृत्व कर रहा है। साल–दर–साल स्टार्टअप में रिकार्ड निवेश मिल रहा है और ये क्षेत्र बहुत तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। यहां तक कि देश के छोटे–छोटे शहरों में भी स्टार्टअप की पहुंच बढ़ी है। कुछ साल पहले तक अगर कोई कहता था कि वो व्यापार करना चाहता है या कोई नई कंपनी शुरू करना चाहता है, तब परिवार के बड़े–बुजुर्ग का जवाब होता था कि – तुम नौकरी क्यों नहीं करना चाहते, नौकरी करो। नौकरी में सुरक्षा होती है वेतन होता है। झंझट भी कम होती है। लेकिन, आज यदि कोई अपनी कंपनी शुरू करना चाहता है तो उसके आस–पास के सभी लोग बहुत उत्साहित होते हैं और इसमें उसका पूरा समर्थन भी करते हैं। यह योजना भारत के विकास की कहानी का अहम मोड़ बन गया जिसके बाद से अब लोग सिर्फ नौकरी मांगने वाला बनने का सपना नहीं देख रहे बल्कि नौकरी देने वाला भी बन रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी का मंत्र 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के साथ 'स्टार्टअप इंडिया' राष्ट्रीय भागीदारी और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बन गया है और इससे विश्व मंच पर भारत की स्थिति और मजबूत बन रही है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं, "आज जहां भी देखो, किसी भी परिवार में जाओ, कितना ही संपन्न परिवार हो, पढ़ा–लिखा परिवार हो, लेकिन अगर परिवार में नौजवान से बात करो तो वो क्या कहता है। वो अपने पारिवारिक परंपराओं से हट कर कहता है, मैं तो स्टार्टअप करूंगा, स्टार्टअप में चला जाऊंगा। यानी जोखिम लेने के लिए उसका मन उछल रहा है। आज छोटे–छोटे शहरों में भी स्टार्टअप संस्कृति का विस्तार हो रहा है और मैं उसमें उज्जवल भविष्य के संकेत देख रहा हूं।"

खूब चर्चा में है यूनिकॉर्न

आज कल 'यूनिकॉर्न' शब्द खूब चर्चा में है। आप सबने इसके बारे में सुना

होगा। एक ऐसा स्टार्टअप होता है जिसका वैल्यू कम से कम 1 बिलियन डॉलर होता है यानी करीब–करीब सात हजार करोड़ रुपए से ज्यादा। साल 2015 तक देश में बमुश्किल नौ या दस यूनिकॉर्न हुआ करता था। अब यूनिकॉर्न की दुनिया में भी भारत तेज उड़ान भर रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक साल 2021 में एक बड़ा बदलाव आया और सिर्फ 10 महीनों में ही भारत में हर 10 दिन में एक यूनिकॉर्न बना और भारत ने 50 हफ्तों में स्टार्टअप की दुनिया में लगभग 40 यूनिकॉर्न जोड़े। ये इसलिए भी बड़ी बात है क्योंकि हमारे युवाओं ने यह सफलता कोरोना महामारी के बीच हासिल की। 2025 तक, यह संख्या बढ़कर 118 से अधिक हो गई है, जो निवेशकों के अधिक भरोसे और घरेलू नवाचार को दर्शाता है। यानि 118 से अधिक स्टार्टअप ऐसे हैं जो 1 बिलियन से ज्यादा के वैल्यू को पार कर गए हैं। स्टार्टअप की सफलता के कारण हर किसी का उस पर ध्यान गया है और जिस प्रकार से देश से, विदेश से, निवेशकों से उसे समर्थन मिल रहा है। शायद कुछ साल पहले उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।

स्टार्टअप के लिए सरकार दे रही मदद

आपका बिजनेस आइडिया अगर पसंद आया तो सरकार जरूरी सुविधाएं देती हैं। साथ ही सरकार फंडिंग की सुविधा उपलब्ध कराती हैं। इसके लिए उद्योग एवं वाणिज्य मंत्रालय से संपर्क किया जा सकता है या www.startupindia.gov.in पर जानकारी हासिल की जा सकती है। स्टार्टअप इंडिया योजना के तहत विभिन्न सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए किसी भी इकाई को आवेदन करना होगा और डीआईपीपी द्वारा स्टार्टअप के रूप में मान्यता प्राप्त करनी होती है। इतना ही नहीं स्टार्टअप में कई अन्य तरह के लाभ भी मिलते हैं। जैसे आसान स्वीकृति, कंपनी को बंद करने की सरल प्रक्रिया, कानूनी सहायता, पेटेंट आवेदनों को तेजी से ट्रैक करने और सूचना की कमी को दूर करने के लिए वेबसाइट। अनुदान और प्रोत्साहन के तहत पात्र स्टार्टअप के लिए इनकम टैक्स व कैपिटल गेन्स टैक्स में छूट; स्टार्टअप इकोसिस्टम में अधिक पूंजी लगाने के लिए फंड ऑफ फंड्स और क्रेडिट गारंटी स्कीम की सुविधा मिलती है। साथ ही इनक्यूबेशन व इंडस्ट्री–एकेडेमिया पार्टनरशिप के अंतर्गत कई सारे इनक्यूबेटर व इनोवेशन लैब, कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं और सहायता का प्रावधान भी इसमें है। इसके अलावा, स्टार्टअप स्थापित करने के लिए लघु व्यवसाय ऋण, फंड की आसान पहुंच, अन्य उद्यमियों से मुलाकात, क्राउडफंडिंग की सुविधा जैसे अन्य सरकारी लाभ भी मिलते हैं।

स्टार्टअप से विभिन्न क्षेत्रों में पैदा हो रहे हैं नए अवसर

स्टार्टअप से विभिन्न क्षेत्रों में नए अवसर पैदा हो रहे हैं। बेंगलुरु, हैदराबाद, मुंबई और दिल्ली–एनसीआर जैसे प्रमुख केंद्र इस परिवर्तन में सबसे आगे रहे हैं, जबकि छोटे शहर भी तेजी से इसमें योगदान दे रहे हैं। स्टार्टअप इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से 51% से अधिक स्टार्टअप टियर II/III शहरों से उभर रहे हैं। भविष्य के मद्देनजर भारत का स्टार्टअप परिदृश्य और भी बड़ी उपलब्धियों तक पहुंचने के लिए तैयार है। फिनटेक, एडटेक, हेल्थ–टेक और ई–कॉमर्स में स्टार्टअप ने स्थानीय चुनौतियों का सामना किया है और वैश्विक मान्यता हासिल की है। जोमैटो, नाइका और ओला जैसी कंपनियां भारत के नौकरी चाहने वालों से नौकरी देने वालों की ओर परिवर्तन को दर्शाती हैं, जिससे आर्थिक प्रगति हो रही है। योजनाओं, क्षमता–निर्माण प्रयासों, भास्कर जैसे मंच और स्टार्टअप महाकुंभ जैसे आयोजनों ने गैर–मेट्रो शहरों सहित सभी सेक्टर और क्षेत्रों में स्टार्टअप को सशक्त बनाया है। जैसे–जैसे भारत नवाचार का वैश्विक नेतृत्वकर्ता बनने की दिशा में अपनी यात्रा जारी रख रहा है, स्टार्टअप इंडिया कार्यक्रम एक समावेशी और जीवंत उद्यमशीलता इकोसिस्टम को प्रोत्साहन देते हुए आर्थिक विकास का एक प्रमुख नेतृत्वकर्ता बना हुआ है।

युवाओं ने शुरू किया साफवाटर नामक स्टार्टअप

हाल ही में कुछ युवाओं ने साफवाटर नामक एक स्टार्टअप शुरू किया है। युवाओं द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान का मकसद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इंटरनेट की मदद से पानी की शुद्धता और गुणवत्ता के बारे में जागरूकता फैलाना है। कुछ युवाओं द्वारा शुरू किए गए अभियान का उद्देश्य पानी की गुणवत्ता से संबंधित मामलों पर क्षेत्रों में जागरूकता पैदा करना है। यह स्वच्छता के लिए अगला कदम है। स्वस्थ भविष्य के लिए इस स्टार्टअप के महत्व को देखते हुए, इसे एक वैश्विक पुरस्कार भी मिला है। आज से कुछ साल पहले तक हमारे देश में स्पेस सेक्टर में स्टार्टअप के बारे में कोई सोचता तक नहीं था। लेकिन आज नये और युवा सोच वाले भारत में यह संभव हो पा रहा है। इतना ही नहीं, वर्तमान समय में ऐसे–ऐसे क्षेत्रों में स्टार्टअप शुरू हो रहा है जिसके बारे में कभी कल्पना करना भी संभव नहीं था।

स्टार्टअप इंडिया : वर्तमान स्थिति

भारत ने 31 दिसंबर, 2024 तक स्टार्टअप की मान्यता के लिए उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) द्वारा जारी 1.57 लाख से अधिक प्रमाणपत्रों के साथ, दुनिया में तीसरे सबसे बड़े स्टार्टअप और यूनिकॉर्न इकोसिस्टम के रूप में खुद को मजबूती से स्थापित किया है। देश के उद्यमशीलता परिदृश्य को 118 से अधिक यूनिकॉर्न के साथ आगे बढ़ाया जा रहा है। स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार द्वारा नवाचार को बढ़ावा देने और एक समृद्ध स्टार्टअप इकोसिस्टम बनाने के लिए एक प्रमुख पहल है। इसका लक्ष्य आर्थिक विकास को बढ़ावा देना और बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करना है। सरकार ने स्टार्टअप की परिवर्तनकारी क्षमता को पहचानते हुए उद्यमिता को मदद और बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं, जिसमें महिला उद्यमिता भी शामिल है। स्टार्टअप इंडिया पहल के तहत सरकार से समर्थित 1,57,066 स्टार्टअप में से लगभग आधे 73,000 से अधिक स्टार्टअप में कम से कम एक महिला निदेशक हैं, जो नवाचार और आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों की ओर से देश भर में अनेक योजनाएं एवं पहलें क्रियान्वित की जा रही हैं।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं। इनके आलेख रोजगार समाचार, दैनिक जागरण, नव भारत टाइम्स सहित देश के प्रमुख समाचार प्रत्रों में नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं। वर्तमान में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार में सलाहकार संपादक के पद पर हैं)।

अध्यात्मिक आलेख

''हंसिबा खेलिबा धरिबा ध्यान, अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियान''

डॉ. मेधा

'मेरा दागिस्तान' पुस्तक के विश्व प्रसिद्ध लेखक रसूल हमजातोव ने अपनी इसी पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि ईश्वर ने इस दुनिया को बनाने से पहले सिगरेट का दो–चार कस लिया होगा, फिर ये दुनिया बनाई होगी। लेकिन मेरा अनुमान है कि ईश्वर एक निर्मल हंसी से सराबोर कोई लतीफा या चुटकुला गढ़कर उस पर स्वयं घंटों हंसते रहे होंगे और उनकी हंसी से ही यह सृष्टि बनती चली गई होगी। कह सकते हैं कि यह सृष्टि प्रभु की निर्दोष हंसी और विनोद की ही अभिव्यक्ति है। इसी बात को श्री अरविंद ने कुछ ऐसे कहा है– ''जो ईश्वर मुस्कुरा नहीं सकता, वह हास्यपूर्ण ब्रह्मांड का सृष्टा नहीं हो सकता।''

विश्व भर के धार्मिक गुरु और पुरोहित ईश्वर की गंभीर और नीरस छवि प्रस्तुत करते रहे हैं। मानो ईश्वर किसी फिल्म में नायिका का खूसट, गुस्सैल और नीरस पिता हो, जो बात–बात में क्रोधित होकर अपना फैसला सुनाता हो और हर समय सजा देने के लिए तत्पर रहता हो। ईश्वर की इसी दुष्प्रचारित छवि से चिन्तित होकर श्री अरविन्द ने कहा होगा–''कुछ धर्मनिष्ठ लोगों की बात मानें तो लगता है कि परमेश्वर कभी नहीं हंसता, लेकिन हाइन बिलकुल सही थे, जब उन्होंने ईश्वर में' दिव्य एरिस्टोफेनेस' को पाया।'' इस उद्धरण में श्री अरविन्द कहना चाह रहे हैं कि ईश्वर हास्य विनोद और निर्दोष हंसी से सराबोर हैं ओर उनमें 'ओल्ड कॉमेडी' के महानायक एरिस्टोफेनेस' जैसा विनोद और हास्यात्मकता मौजूद है। श्री अरविन्द हास्यबोध को अस्तित्व के लिए अनिवार्य मानते हैं और उसके बिना विश्व के असंतुलित और विक्षिप्त हो जाने की बात करते हैं– ''हास्यबोध ? यह अस्तित्व का नमक है। इसके बिना न जाने कब का संसार पूरी तरह से असंतुलित होकर आग में जलकर खाक हो गया होता।'' सच कहें तो जहां निर्मल हंसी और विनोद है, वहां साक्षात ईश्वर की उपस्थिति है। श्री अरविंद ने अपनी कविता, 'कौन' में निर्मल हंसी और हास्य में ईश्वर की उपस्थिति को कुछ इस तरह रूपायित किया है–

''सारा संगीत उसकी (ईश्वर) हंसी का स्वर है,

सारी सुंदरता उसकी प्रेमोन्मत्त मुस्कान है।''

इसीलिए श्री अरविंद ने निर्मल और अहिंसक हास्य– विनोद को ईश्वर के करीब ले जाने वाला बहुत ही त्वरित और कारगर उपकरण माना है। श्री अरविंद की बात की मुनादी भक्ति आंदोलन के संतों ने भी की है, इसीलिए अधिकांश संत कवियों का जीवन और साहित्य निर्मल हास्य–विनोद से प्रेरित रहा है। संत कबीर की हास्य –विनोद की शैली तो जग जाहिर है ही–

"हंसी खेल में कहि गए, कहि गए रहस्य अपार।
जो सिर ऊपर कर चले, तिनका कौन उतार?"

यह तो आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का भी मानना है कि हंसी– खेल में अप्रत्यक्ष ढंग से कही गईं बातें मनुष्य के मन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। यहीं पर कबीर की इस शैली का उदाहरण इनके इस दोहे में देखा जा सकता है–

''मैना ने मैं ना कहा मोल भयो दस बीस।
बकरे ने मैं मैं कहा कबीर कटायो सीस।।''

देखिए तो जरा, इस दोहे में कितनी सरलता से बाबा कबीर ने हास्य के जरिए अहंकारी जीव की परिणिति के बारे में समझा दिया है।

मराठी संत तुकाराम की पंक्ति है–
"संतांची मस्करी, विठोबा घेई सुखेरी।"

संत नामदेव जी का कहना है कि भक्तों की मसकरी और मस्ती स्वयं भगवान विठोबा (कृष्ण) को बहुत प्रिय लगती है। संतों के हास्य को उन्होंने भक्ति का ही एक रूप माना है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने हास्य रस को भक्ति की अनुभूति का हिस्सा माना है। उनके बारे में मान्यता है कि वह बहुत ही विनोदी प्रवृत्ति के थे। उनके जीवन के कई दृष्टान्त इस बात की पुष्टि करते हैं। गुरु नानक देव जी ने भी कहा है–

''हसण खेलण मनु चाहे दूखु न लगई पासि।''

अर्थात् यदि मन सच्चे भाव से हंसें और खेले अर्थात आनंदमयी रहे तो दुःख उसके पास नहीं फटकता। चूंकि पार ब्रह्म का स्वरूप सच्चिदानंद है, तो आनंद की अवस्था हमें स्वतः ही ईश्वर के समीप ले जाती है और हमारी आध्यात्मिक प्रगति का माध्यम बनती है।

जहाँ हास्य– विनोद और आध्यात्मिक जीवन के संबंध पर लिखित सत्संग हो रहा हो, वहां इटली के असीसी शहर के महान संत फ्रांसिस का उल्लेख न हो तो सत्संग अधूरा ही रह जाएगा। वर्ष 1181 में इटली में जन्में संत फ्रांसिस का एक शिष्य एक बार अत्यंत उदास और दुखी था। उसकी उदासी और पीड़ा को देखकर संत ने उससे कहा– ''ये बाहरी उदासी और दुख क्यों? इस दुख को अपने और परमात्मा के बीच ही रहने दो। मेरे और संसार के सामने तो आनंद में रहो। परमात्मा के सेवक के लिए यह शोभनीय नहीं है कि वह अपने बन्धुओं को दुखियारी और समस्याग्रस्त चेहरा दिखाए।'' यहां असीसी के संत फ्रांसिस का कहना है कि व्यक्ति को लौकिक दुख हो या पारलौकिक – दोनों ही स्थितियों में उसे उसकी फरियाद ईश्वर से करनी चाहिए। लेकिन संसार के सामने तो उसे आनंदित ही दिखना चाहिए क्योंकि समाधान तो संसार के पास नहीं, ईश्वर के पास ही है। तभी संत रहीम दास जी ने कहा–

''रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि इठलैहें लोग सब, बांट न लैहे कोय।।''

कह सकते हैं कि विनोद और हास्य जीवन की जड़ता को समाप्त कर कुछ क्षणों के लिए ही सही, हमें अंधकार और कलुषता से मुक्त कर आलोक की ओर उन्मुख कर देता है। संभवतः उन क्षणों में हम तमस और रजस के प्रभाव से मुक्त होकर सत्यलोक में प्रवेश करते हैं। गुरू नानकदेव जी के

शब्दों में कहें तो हम उन क्षणों में निर्बैरी, निर्द्वंद्वी, निर्भयी और मस्त हो जाते हैं और ईश्वर को जीवात्मा का यही रूप लुभाता है। इसीलिए चाहे ज्ञानमार्गी हों या भक्तिमार्गी सभी ने हास्य– विनोद को साधना के लिए अनिवार्य माना है। इस सतसंग में भला संत गोरखनाथ की पंक्ति को कैसे भुलाया जा सकता है–

"हंसिबा खेलिबा धरिबा ध्यान, अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियान।
हंसै खेलै न करै मन भंग, ते निहचल सदा नाथ के संग।।"

कहना गलत न होगा कि अलबेले ईश्वर की अलबेली सृष्टि के मूल में निर्दोष हंसी और विनोदी वृत्ति ही है।

सहायक प्रोफेसर
सत्यवती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

समुद्र मंथन

शशि रंजन

समुद्र मंथन हिंदू पुराणों में वर्णित एक महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध कथा है जिसमें देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया था ताकि अमृत प्राप्त किया जा सके। यह मंथन बहुत कठिन और संघर्षपूर्ण था, जिसमें कई प्रकार की बाधाएँ और संकट आए, लेकिन अंत में अमृत प्राप्त हुआ। इस मंथन में धैर्य, संघर्ष, और सहयोग की महत्ता दिखाई देती है।

इसी प्रकार अपने जीवन के अनुभवों, संघर्षों और परेशानियों पर गहराई से विचार करना चाहिए। जीवन में कठिनाइयों का सामना करते हुए हमें अपने आप को समझना होता है। हमें अपनी कमजोरियों और ताकतों का ज्ञान होना चाहिए, ताकि हम बेहतर निर्णय ले सकें और जीवन में

सफलता प्राप्त कर सकें। समुद्र मंथन की कथा जीवन में संघर्ष, संयम और मिलकर कार्य करने की प्रेरणा देती है।

इस कथा के अनुसार, देवों और असुरों के इस अथक प्रयास में कई महत्वपूर्ण वस्तुएं, जीव, और दिव्य वस्तुएं निकली थीं जो हमारे जीवन को कई महत्वपूर्ण सन्देश भी देती है, जो इस प्रकार हैं –

1. संघर्ष और प्रयास का महत्वः

समुद्र मंथन बताता है कि जीवन में महान उपलब्धियाँ और सफलता केवल तब मिलती हैं जब हम कठिन संघर्ष और लगातार प्रयास करते हैं। बिना मंथन के अमृत या कोई भी फल नहीं मिलता। इसी प्रकार, कठिनाइयों से हार मानने के बजाय उनका सामना करके आगे बढ़ना चाहिए।

2. मिलजुल कर काम करने की प्रेरणाः

देव और असुर, जो स्वभाव से शत्रु थे, परंतु अमृत पाने के लिए मिलकर काम करते हैं। यह सिखाता है कि अगर लक्ष्य बड़ा हो और भले ही मतभेद हों पर एकता और सहयोग से बड़े से बड़े उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

3. धैर्य और संयमः

मंथन के दौरान विष भी निकला जिसे सहन करना पड़ा। जीवन में भी कई बार कष्ट और परेशानियाँ आती हैं, लेकिन धैर्य और संयम से उनका सामना करना चाहिए क्योंकि अंत में अच्छे फल प्राप्त होते हैं।

4. सतर्कता और बुद्धिमत्ताः

अमृत प्राप्ति के बाद भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण करके असुरों को छल लिया ताकि अमृत केवल देवों को मिले। यह दर्शाता है कि जीवन में बुद्धिमत्ता और रणनीति का प्रयोग भी जरूरी होता है।

5. अमृत यानी अमरता का प्रतीकः

अमृत जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान, मुक्ति, और अनंत सुख का प्रतीक माना जाता है। समुद्र मंथन बताता है कि सच्चे ज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी कठिन परिश्रम और तपस्या आवश्यक है।

6. सृजन और विनाश का चक्रः

मंथन से जो वस्तुएं निकलती हैं उनमें सृजन (जैसे लक्ष्मी, कामधेनु, वृषभ आदि) और विनाश (जैसे विष, मदिरा) दोनों होते हैं। यह जीवन के संतुलन और प्रकृति के चक्र को दर्शाता है।

जीवन मंथन के फलस्वरूप हम अपने उद्देश्यों को स्पष्ट (**हिरण्याक्ष**) कर, अपने रास्तों की मुश्किलों (**कालकूट विष**), डर (**नाग**) और कमजोरियों से जीतकर, ईमानदारी, स्वच्छता (**शुभ्र वस्त्र**), ज्ञान, मार्गदर्शन (सप्तर्षि), आत्म सम्मान (**कौस्तुभ मणि**), मानसिक शांति (**परिजात वृक्ष**) और स्पष्ट संवाद (**दिव्य शंख**) के साथ मेहनत और निरंतर प्रयास (**स्वर्ण वृषभ, हल**) करते हुए अपने इच्छाओं (**कामधेनु**) को सही दिशा प्रदान करना चाहिए जिससे कि हम समृद्धि (**लक्ष्मी**) और अंतिम सफलता अमृत (**अमरत्व का पेय**) का आनंद लेते हुए **सिद्धि** को प्राप्त कर सकें। समुद्र मंथन के इन 14 रत्नों को अपने जीवन से विस्तारपूर्वक जोड़कर समझना हमारे जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और सफलताओं को गहराई से जानने का एक तरीका है। जीवन मंथन के अनुभवों से मिली सीख और आत्म साक्षात्कार हमें जीवन की गहरी समझ और मानसिक शक्ति देते हैं, जिससे हम हर परिस्थिति का सामना कर सकने में सक्षम होते हैं।

वरिष्ठ अभियंता (सीडीटी)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नोएडा

आजादी के 78 वर्ष और राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा

प्रो. पूरनचंद टंडन

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के साथ–साथ सामाजिक व्यवहार की भी वस्तु है इसलिए भाषा–विशेष के द्वारा उसके भाषिक समुदाय की जातिगत विविधता, उनकी संश्लिष्ट संस्कृति आदि की अभिव्यक्ति भी होती है। भारत एक बहुभाषा–भाषी और बहु–सांस्कृतिक राष्ट्र है। यहाँ कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अनेक भाषाओं–उपभाषाओं तथा बोलियों को व्यवहार में लाया जाता है। भिन्न–भिन्न भाषा–समाजों की संस्कृति में तमाम विभिन्नताएँ होने के बावजूद हमें एकता के ही दर्शन होते हैं और यह एकता है – भावनात्मक एकता। देश में भावनात्मक एकता को स्थापित करने के लिए हमें विभिन्न भाषाओं में से किसी एक भाषा को स्वीकार करना आवश्यक होता है। जिस तरह हर देश के अपने प्रतीक स्वरूप झंडे होते हैं, जिसे 'राष्ट्रध्वज' के नाम से अभिहित किया जाता है, उसी तरह हर देश की समग्रता की अभिव्यक्ति माध्यम के रूप में सार्वदेशिक स्वरूप रखने वाली एक भाषा भी होती है और उस भाषा को 'राजभाषा' अथवा 'प्रशासन की भाषा' की संज्ञा दी जाती है।

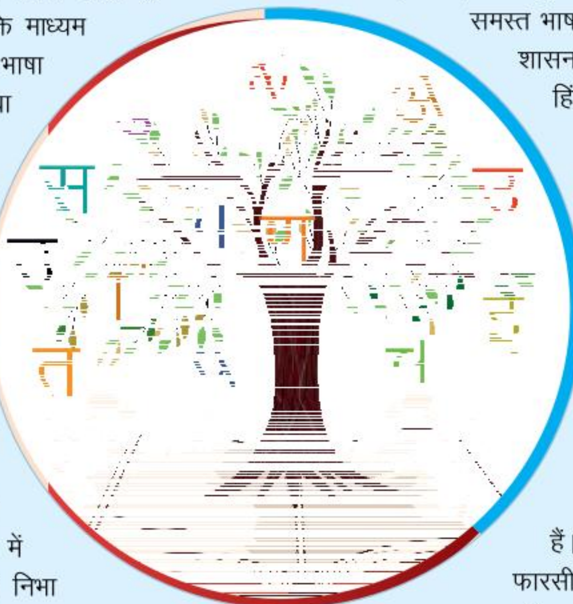

'राजभाषा' का तात्पर्य राज्य के तीन प्रमुख अंगों की भाषा से है। ये अंग हैं – संसद, अदालतें और प्रशासन या सरकार। इन तीनों अंगों का संबंध संपूर्ण देश की संसद से है जो पूरे देश के लिए कानून बनाती है और प्रदेशों के विधान–मंडल अपने–अपने स्तर पर अपनी भाषा में काम करते हैं। इन सबका समन्वय करने के लिए जरूरी है कि सभी विधायी निकायों के निर्णय आदि देश की राजभाषा में उपलब्ध हों। हिंदी राजभाषा के दायित्व को निभा रही है और अंग्रेजी सह–राजभाषा के रूप में काम कर रही है। इन भाषाओं को यह दायित्व भारत की सांविधानिक और वैधानिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत दिया गया है।

राजभाषा हिंदी : पूर्वपीठिका

विश्व का अति–सभ्य प्राचीन देश होने के कारण भारत में अत्यंत प्राचीन काल से शासन चलता आया है। उस शासन को चलाने के लिए किसी न किसी प्रशासनिक व्यवस्था की उपयोगिता भी रही है। तब इससे संबंधित साहित्य को राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, दंडनीति, स्मृति आदि नामों से अभिहित किया जाता था। तब प्रशासन में प्रयुक्त होने वाले शब्द की अभिव्यक्तियाँ राजकीय अभिलेख तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उनका प्रयोग काव्य और इतिहास में भी उपलब्ध था। इसलिए वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण जैसे धार्मिक ग्रंथों में राजा, उनके प्रकार, उनकी नियुक्ति, मंत्री तथा पदाधिकारी, उनकी आचार–संहिता, प्रशासन, संचालन विधि आदि के अनेक उदाहरण मिल जाते हैं उस समय राजकाज एवं प्रशासन की भाषा संस्कृत थी। इस तथ्य के प्रमाण हमें प्राचीन सरकारी लेखों, पत्रों, कानूनों, नियमों तथा सरकार से संबंधित अभिलेखों से प्राप्त होते हैं।

कालांतर में संस्कृत विशिष्ट वर्ग और साहित्यिक ग्रंथों तक ही सीमित रह गई और जनता से दूर जाने लगी, जिसके परिणामस्वरूप समयानुसार प्राकृत, पालि, अपभ्रंश आदि भाषाओं का प्रयोग राजकाज में होने लगा।

लगभग बारहवीं–तेरहवीं शताब्दी के आसपास पूर्वी पंजाब से बंगाल तक प्रचलित सभी बोलियों एवं भाषाओं को हिंदी ने आत्मसात कर लिया और राजकाज की भाषा के रूप में व्यवहृत होने लगी। ऐसा इसलिए संभव हुआ कि हिंदी का उत्तर–पूर्वी एवं मध्य भारत की समस्त भाषाओं से गहरा संबंध रहा है। जैसे, राजपूतों के शासन की भाषा डिंगल–पिंगल वस्तुतः राजस्थानी हिंदी ही थी, जिसमें शासकीय पत्र, टिप्पणियाँ, राज–कर्मचारियों की आचार–संहिता, राजा के आदेश आदि प्रस्तुत किए जाते थे।

भारत में मुसलमानों के आगमन के पश्चात् देश के उन भागों में जहाँ उन्होंने शासन स्थापित किए, अरबी–फारसी को भारतीय भाषाओं के साथ प्रशासन में अवश्य स्थान मिल गया, किंतु उत्तर भारत में गुलाम वंश, ख़िलजी वंश, लोदी वंश, सूरी तथा मुगल वंशों के विभिन्न बादशाहों के शासन में हिंदी के प्रयोग के प्रमाण तथा साक्ष्य मिलते हैं। औरंगज़ेब के शासन में भी हिंदी का प्रयोग फारसी के साथ होता रहा। मुगलकाल के समय सरकारी काम–काज में प्रयुक्त होने वाले शब्दों, यथा – 'सरकार', 'तहसीलदार', 'वकील', 'चपरासी', 'सिपाही', 'अमीन', 'दफ्तर', 'खजांची', 'माल', 'मकान' आदि का प्रयोग आज भी धड़ल्ले से होता है। यही मराठों के शासनकाल में भी देखने को मिलता है, जहाँ युद्ध के पश्चात् तैयार किए गए संधि–पत्रों, राजनीतिक व्यापारिक समझौतों, अध्यादेशों, प्रमाण–पत्रों आदि की भाषा भी हिंदी थी।

अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में तत्कालीन प्रचलित राजभाषा फारसी को ही प्रश्रय दिया। 1835 ई० में लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी को भारत की शिक्षा और प्रशासन की भाषा के रूप में स्थापित कर दिया। धीरे–धीरे वह न केवल पूरी तरह से भारतीय प्रशासन की भाषा भी बन गई, बल्कि शिक्षा, वाणिज्य, व्यापार तथा उद्योग धंधों की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई। फिर भी अंग्रेजी शासक यह महसूस करते रहे कि भारत की भाषाओं को बहुत दिनों

तक दबाया नहीं जा सकता, अतः उन्होंने हिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी को और अन्य प्रदेशों में वहाँ की भाषाओं को प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम बनाया। हिंदी को लेकर अंग्रेजों के विरुद्ध स्वयं अंग्रेज ही लड़ते रहे। इनमें उल्लेखनीय नाम 'फ्रेडरिक पिन्काट' का है। ब्रिटिश सरकार से उनकी यह लड़ाई सन् 1868 ई० से प्रारंभ हो गई थी जबकि वे उस समय केवल बत्तीस वर्ष के थे। सन् 1888 में श्रीधर पाठक को लिखे पत्र में उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा था कि "बीस साल पहले मैं एकमात्र यूरोपियन था, जिसने सरकार पर हिंदी के बारे में दबाव डाला और दस साल बाद इस नियम को बनवाने में सफल रहा कि भारत जाने वाले अंग्रेजों के लिए हिंदी की परीक्षा पास करना अनिवार्य किया जाए।"

वस्तुतः लोकभाषा में ही लोक–आंदोलन होते हैं, इसीलिए राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान जब जनता की भाषा को महत्त्व देने की आवाज बुलंद हुई तो राष्ट्रीय संघर्ष में हिंदी का संघर्ष जुड़ गया। गौरतलब है कि उन्नीसवीं शताब्दी तक प्रायः हिंदी के संघर्ष का संकेंद्रण अदालती भाषा के रूप में अपने हक की लड़ाई के इर्द–गिर्द ज्यादा था, पर बीसवीं शताब्दी के शुरुआती दौर में ही अंग्रेजी एवं हिंदी का संघर्ष राष्ट्रीय संघर्ष का अभिन्न अंग बन गया। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, गोखले, लाला लाजपत राय, पं० मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, पं० नेहरू, विनोबा भावे, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया आदि उस समय के प्रायः सभी नेताओं, साहित्यकारों तथा जागरण–कर्ताओं ने राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी की भूमिका को अपने–अपने ढंग से रेखांकित किया। इन्हीं नेताओं, जागरण–कर्ताओं और साहित्यकारों के प्रयास का फल था कि स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राजभाषा बनाने की बात मुखर हो उठी।

स्वाधीनता के पश्चात् हिंदी को प्रशासन की भाषा के रूप में विकसित करने का निश्चय किया गया क्योंकि भाषायी स्वाभिमान स्वतंत्र राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है। हिंदी को राजभाषा या प्रशासन की भाषा के पद से सुशोभित करने के पीछे यह धारणा थी कि हिंदी केवल ज्ञान–विज्ञान, अध्ययन, साहित्य आदि की ही भाषा न रहे, लोक–संपर्क की ही भाषा न बने, बल्कि प्रशासनिक भाषा का जामा पहनकर सरकारी काम–काज, बोलचाल तथा कार्य–व्यवहार की भी भाषा बन जाए। इसके लिए वैधानिक व्यवस्था की गई, मानवीय एवं भौतिक संसाधन जुटाए गए तथा सरकारी कार्यालयों और क्षेत्रों में ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास किया गया कि धीरे–धीरे हिंदी दैनिक कार्यों की भाषा बन जाए। इसी के कारण 14 सितंबर 1949 ई० में हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला।

सांविधानिक उपबंध : संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी है। इसी तरह संविधान के अनुच्छेद 343(2) के अनुसार यह प्रावधान किया गया कि संविधान के प्रारंभ में 26 जनवरी, 1965 तक सभी राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का यथावत प्रयोग होता रहेगा ताकि हिंदी इस अवधि के दौरान शासन, विधान, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के कार्यों को निष्पादित करने में सक्षम हो जाए। संविधान के अनुच्छेद 343(3) में संसद को यह अधिकार भी दे दिया गया कि पंद्रह वर्ष की अवधि समाप्त होने के बाद भी वह चाहे तो अंग्रेजी के प्रयोग को यथावत रखने का विधि द्वारा कोई उपबंध कर सकेगी। इस प्रकार के प्रावधान से हिंदी को राजभाषा का गौरव प्रदान करने के पश्चात् भी अवरोधात्मक सांविधानिक उपबंधों का सामना करना पड़ा।

संविधान के अनुच्छेद 344 के द्वारा माननीय राष्ट्रपति महोदय को यह आदेश दिया गया है कि संविधान के प्रथम पाँच वर्ष तथा दस वर्ष के पश्चात् राजभाषा आयोग की नियुक्ति करें। संविधान के अनुच्छेद–345 में यह प्रावधान किया गया है कि राज्य का विधान मंडल विधि द्वारा एक या एकाधिक प्रादेशिक भाषाओं अथवा हिंदी को सरकारी प्रयोजनों के लिए स्वीकार कर सकेगा।

अनुच्छेद 346 में यह साफ–साफ आदेश है कि एक राज्य तथा दूसरे राज्य के बीच किसी राज्य एवं संघ के मध्य पत्राचार में संघ की राजभाषा का ही प्रयोग होगा।

अनुच्छेद–347 के अनुसार यदि किसी राज्य के जनसमुदाय का पर्याप्त अनुपात अपने द्वारा बोली–समझी जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा अभिज्ञात कराना चाहे तो राष्ट्रपति उस भाषा को सरकारी अभिज्ञा देने का अधिकारी है।

संविधान के अनुच्छेद–348 में उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों इत्यादि की भाषा का भी प्रावधान है। संविधान के अनुच्छेद–349 में यह व्यवस्था है कि संविधान के शुरू के पंद्रह वर्षों की कालावधि तक अंग्रेजी के स्थान पर किसी अन्य भाषा का पाठ प्राधिकृत पाठ नहीं माना जाएगा। संविधान के अनुच्छेद–350 के अनुसार कोई व्यक्ति अपनी शिकायत के समाधान के लिए संघ या संबद्ध राज्य में प्रयुक्त होने वाली किसी भी भाषा में निवेदन कर सकता है। इस व्यवस्था के जरिए भाषायी अल्पसंख्यकों के अधिकार भी पूरी तरह सुरक्षित किए गए हैं।

संविधान का अंतिम अनुच्छेद–351 अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसके अनुसार संघ सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह हिंदी को एक ऐसी सर्वमान्य राष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित करे जिसका पूरे राष्ट्र में गर्व सहित प्रयोग किया जा सके और वह भारत की मिश्रित संस्कृति को अभिव्यक्त कर सके। इसके लिए हिंदी को अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को ग्रहण कर उनसे समृद्ध किए जाने का सुझाव है।

राजभाषा हिंदी संबंधी वैधानिक व्यवस्था : स्वतंत्रता के पश्चात् भारत के संविधान के प्रवर्तन पर हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। संविधान के अनुच्छेद–343 के अनुसार भारत संघ की राजभाषा 'देवनागरी में लिखित हिंदी' है। वर्ष 1952 से लेकर 1961 तक सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति के महत्त्वपूर्ण आदेश निकले।

अनुच्छेद–344 के अनुसार भारत के राष्ट्रपति ने वर्ष 1956 में एक राजभाषा आयोग का गठन भी किया जो राजभाषा के प्रगामी–प्रयोग के विषय में सिफारिश कर सके। 30 सदस्यों की संसदीय समिति ने आयोग की सिफारिशों पर विचार किया और राष्ट्रपति के समक्ष अपनी राय प्रस्तुत की। इसके आधार पर वर्ष 1960 में हिंदी के विकास तथा प्रगामी–प्रयोग

के लिए विस्तृत निर्देश जारी किए गए। उसके बाद सघन रूप से राजभाषा के प्रयोग के बारे में कार्रवाई बढ़ी।

सन् 1963 में राजभाषा अधिनियम बना, सन् 1967 में इसमें संशोधन हुआ। राजभाषा अधिनियम के अनुसार संघीय कार्यों के लिए द्विभाषिक स्थिति अपनाई गई और हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार कर कुछ कार्यों के लिए उसका प्रयोग (विशेष रूप से धारा 3(3) के अनुपालन में) जरूरी किया गया। किंतु इसके साथ ही अंग्रेजी को सरकारी कामकाज में उन सभी प्रयोजनों के लिए चलते रहने की अनुमति दी गई, जो संविधान लागू होने के पहले से चल रही थी। इस प्रकार केंद्रीय सरकार में एक दीर्घकालिक द्विभाषिकता की व्यवस्था शुरू हुई।

दिसंबर 1967 में संसद के दोनों सदनों में भाषा–नीति संबंधी एक संकल्प पारित किया गया। इस संकल्प के पैरा–1 के अनुसार राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम बनाता है जिसमें केंद्रीय सरकार के कार्यालयों आदि के लिए एक वर्ष में हिंदी में काम करने के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। राजभाषा नीति के अनुपालन के विचार से राजभाषा नियम, 1976 के तहत देश को 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्र के रूप में वर्गीकृत किया गया। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का दायित्व भारत सरकार एवं उसके उपक्रम में कार्यरत प्रशासनिक प्रमुखों का है और इसमें प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का सहयोग अपेक्षित है।

राजभाषा हिंदी और अनुवाद

भारत कई वर्षों तक गुलाम रहा – पहले मुगलों का, फिर अंग्रेजों का। मुगलों के समय यहाँ की प्रशासनिक भाषा फारसी थी तो अंग्रेजों के समय अंग्रेजी। किंतु भारतीय जनमानस की भाषा कभी भी अंग्रेजी नहीं रही। इसी कारण स्वतंत्रता से पूर्व भी प्रशासनिक कार्यों में अनुवाद की आवश्यकता पड़ती थी। इसी कारण उच्चाधिकारी और जनमानस के बीच संवाद स्थापित करने में अनुवाद की आवश्यकता पड़ी।

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967) और विशेष तौर पर उसकी धारा 3(3) के अनुसार, कार्यालयों में कामकाज में द्विभाषिकता की स्थिति के कारण तब से लेकर आज तक कितने ही आदेश और अनुदेश निकाले गए जिसके अनुसार प्रशासन के प्रायः सभी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग कमोबेश हो रहा है। सरकार के महत्त्वपूर्ण कामकाज, जैसे – संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक और अन्य रिपोर्टें, प्रेस–विज्ञप्तियाँ, संसद के लिए सभी रिपोर्टें और सभी कागज–पत्र, संविदा, करार, नोटिस, लाइसेंस, परमिट, टेंडर, फार्म आदि हिंदी और अंग्रेजी में साथ–साथ जारी किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त विभागीय नियम, मैनुअल, संविदा और अन्य कार्यविधि सामग्री भी दोनों भाषाओं में तैयार हो रही है। पत्र–व्यवहार, फाइल पर टिप्पणियों आदि में भी हिंदी का प्रयोग हो रहा है। सबसे बड़ी बात है कि इन सभी सरकारी कागजातों को मूलतः अंग्रेजी में लिखा जाता है और उसके बाद इसका हिंदी में अनुवाद किया जाता है। इस कार्य के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है अतः अनुवाद की आवश्यकता आज प्रशासन के क्षेत्र में पग–पग पर दिखाई देती है। स्थिति यह हो चुकी है कि आज 'कार्यालयी अनुवाद' जैसी अवधारणा मूर्त रूप ग्रहण कर चुकी है।

जब हम स्वतंत्र हुए तो हमारे पास अपनी कोई भी एक भारतीय भाषा ऐसी न थी जिसे राजकाज की भाषा बनाया जा सके। भाषायी स्तर पर हम पर या तो फारसी ने राज किया या अंग्रेजी शासन ने मुगल बादशाहत उर्दू–अरबी मिश्रित फारसी में शासन करती रही और जब अंग्रेज हम पर काबिज हुए तो अंग्रेजी भाषा में शासन चला। परिणामतः बहुभाषा–भाषी देश भारत 15 अगस्त, 1947 से इस चिंता में ग्रस्त दिखा कि राजकाज की भाषा किसे बनाया जाए। उपबोलियों, बोलियों, उपभाषाओं तथा भाषाओं की कमी देश में न थी। सभी भारतीय भाषाओं का अपना–अपना सुदीर्घ एवं सशक्त इतिहास रहा है। मौखिक एवं लिखित साहित्य की एक विलक्षण परंपरा भी सबके पास रही है किंतु साहित्य की भाषा प्रशासन–शासन की भाषा नहीं होती। आम आदमी की भाषा या बोलचाल की भाषा विज्ञान तकनीक की भाषा नहीं होती, यह हमें नहीं भूलना चाहिए।

सन् 1949 में हिंदी को जब केन्द्र सरकार की राजभाषा घोषित किया गया था तब हिंदी में पारिभाषिक शब्द बनाने और हिंदी शिक्षण–प्रशिक्षण पर भी बल दिया गया। समस्या यह हुई कि शब्दावली–निर्माण के सिद्ध ान्तों के बिना देश के अलग–अलग कोनों से ये अवधारणात्मक शब्द बनाए जाने लगे। व्यक्तिगत रूप से भी विद्वानों ने शब्द बनाने प्रारम्भ किए तथा संस्थागत स्तर पर भी शब्द बनने लगे। अब नई समस्या यह आ गई कि अंग्रेजी के किसी भी एक अवधारणात्मक शब्द के लिए हमने एकाधिक हिंदी शब्द बना लिए। शब्द अलग–अलग स्थानों– विद्वानों से बन रहे थे। हर शब्द के लिए उसके पास अपना तर्क था कि वही शब्द सटीक एवं सार्थक है। कहीं बोधगम्यता, कहीं सहजता–सरलता, कहीं लौकिकता आदि तर्क शब्द–निर्माण के लिए दिए जा रहे थे। कहीं संस्कृत–निष्ठता पर अधिक बल था । कुल मिलाकर समस्या और बढ़ गई। अंततः भारत सरकार को एकरूप पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का दायित्व लेना पड़ा और सन् 1960 में जाकर विशेष संवैधानिक प्रावधान करके एक राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की संस्था का गठन किया गया जिसे हम 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग' के नाम से जानते है।

कृत संकल्प होकर, दृढ़ निश्चय लेकर, कमर कस कर और समय–निर्धारित नीति के तहत जब तक हिंदी अनुप्रयोग सुनिश्चित नहीं किया जाएगा, तब तक समस्या का निराकरण नहीं हो सकता। हमारी युवा पीढ़ी, विशेष रूप से हिंदी साहित्य एवं हिंदी भाषेतर अनुशासनों के विद्यार्थियों–शोधार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति सम्मान – स्वाभिमान का भाव दिखाई नहीं देता। यह एक प्रकार की खतरनाक उदासीनता है। वस्तुतः प्रत्येक नागरिक के मन में यह शुद्ध संकल्प पैदा करना होगा कि बात हिंदी तक सीमित नहीं, हमारी समस्त भारतीय भाषाओं के प्रयोग अनुप्रयोग की भी है। आज हम हिंदी अनुप्रयोग की अनिवार्यता को समझें, उसे 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की भाषा बनाएँ, कल दूसरी, तीसरी और चौथी भारतीय भाषा भी इसी तरह अनुप्रयुक्त भाषा बनती चले और हम सिद्ध कर सकें कि हमारी सभी भारतीय भाषाएँ कितनी समर्थ सशक्त हैं। आज अवश्यकता है हिंदी की ऊर्जा से विश्व को अवगत कराने की।

आज आवश्यकता है देश की उन भाषाओं और बोलियों को देवनागरी लिपि

से जोड़ने की, जिनके पास अपनी कोई लिपि नहीं है। आज आवश्यकता है कि हिंदी– हिंदी शब्दकोश, द्विभाषी तथा बहुभाषी शब्दकोश, व्याकरण कोश, मुहावरा –लोकोक्ति कोश, परिभाषा कोश, प्रयोग कोश तथा व्याख्या कोश आदि का कार्य युद्ध स्तर पर किया और करवाया जाए। 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' तथा 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग' ने इस दिशा में स्तुत्य कार्य किया है। किंतु अभी आगे भी अनेक दिशाएँ रिक्त हैं।

आज यह भी आवश्यक हो गया है कि समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं का माध्यम भी हिंदी बने और हिंदी को एक स्वतंत्र विषय के रूप में भी परीक्षाओं में रखा जाए। हिंदी इतर भाषा समुदाय के भारतीय नागरिकों को हिंदी का सहज शिक्षण–प्रशिक्षण युद्ध स्तर पर देना होगा। हिंदी की शिक्षण अनिवार्यता बनानी होगी। देश में सैकड़ों–हजारों हिंदी सेवा संस्थाएँ हैं। उनकी निष्ठा पर भरोसा करना होगा तथा उन्हें यथासंभव प्रोत्साहित करते हुए हर प्रकार का सहयोग देना होगा। इससे हिंदी अनुप्रयोग का पक्ष सशक्त होगा। विश्वविद्यालयों, शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थाओं को हिंदी अनुप्रयोग से जोड़ना होगा।

कुल मिलाकर हिंदी केवल भावना और संवेदना की भाषा न रहे, उसके साथ–साथ कामकाज की, जीवन का मार्ग प्रशस्त करने की रोजी–रोटी और विकास की, विश्व के साथ–साथ सोचने की और आगे बढ़ने की भी भाषा बने, यह आज के भारत के लिए आवश्यक है।

वास्तव में भारत का रंगीन स्वप्न भाषा प्रौद्योगिकी के माध्यम से सूचना एवं संचार के उपकरणों पर अब साकार होता दिखाई देने लगा है। हिंदी के अनेक सॉफ्टवेयर अब बाजार में उपलब्ध हैं। हमारे दैनिक जीवन के समस्त क्रियाकलापों से लेकर, कार्यालयी, व्यवसायी, वित्तीय, वाणिज्यिक, सौंदर्यशास्त्र, साज–सज्जापरक, गणितीय, सांख्यिकीय, प्रकाशकीय तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक क्षेत्रों में कंप्यूटर का सफलतम् प्रवेश हो चुका है। जिस कम्प्यूटर तथा उसकी भाषा को लेकर हम भयभीत तथा सहमे हुए थे, उसे जीवन के हर क्षेत्र में जोड़कर हमने अपनी भाषओं से जीत लिया है। आज सरकारी या गैर–सरकारी कार्यालय हो अथवा व्यवसाय, शिक्षा हो या विज्ञापन, सूचना तंत्र हो या जनसंचार माध्यम, बैंक हो या डिजाइनिंग और टाइटलिंग का क्षेत्र, सरकारी उपक्रम हों या मंत्रालय, निगम हो या निकाय हो अथवा विभिन्न संस्थान, स्कूल हो या विश्वविद्यालय – सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। प्रशिक्षण की बहुलता एवं सहजता ने ष्भाषा के सशक्तिकरण की दृष्टि से युद्ध स्तर पर अभियान छेड़ दिया है। गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत राजभाषा विभाग ने कम्प्यूटर के हिंदी अनुप्रयोग की दिशा में राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए अविस्मरणीय योगदान दिया है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का एक और बहुत बड़ा लाभ हिंदी को मिला है और यह है–अंतरराष्ट्रीय मंच पर हिंदी का भव्य स्तरीय अवतरण। इससे पहले यह महत्त्वपूर्ण कार्य हिंदी सिनेमा पर रहा था, किंतु दूरदर्शन, रेडियो, केबल टीवी, इंटरनेट, ई–मेल आदि ने इस दिशा में गंभीर एवं सकारात्मक भूमिका निभाई है। निश्चय ही इन माध्यमों से हिंदी के वर्तमान संवेदनात्मक एवं संपर्क–भाषा–स्वरूप में परिवर्तन आया है।

अब भाषा स्वयं उपभोक्तावादी संस्कृति का हिस्सा तो बन ही रही है, साथ ही उपभोग, व्यवसाय तथा इसके संप्रेषण का माध्यम भी बन रही है। पहले लौह–तंत्र से जुड़ रही इस भाषा की कठोरता को हमें पचाना होगा। फिर धीरे–धीरे इन क्षेत्रों में भी सहजता–संवेदनात्मकता की सोच पैदा करनी होगी।

प्रिंट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में 'विज्ञापन की भाषा हिंदी' ने अपना एक नया मुहावरा पैदा किया है, अपना एक नया तेवर प्रकाशित किया है। इस आधार पर यह तो स्पष्ट ही है कि 'भूमंडलीकरण' अथवा 'वैश्वीकरण' की आधुनिक अवधारणा को सूचना एवं भाषा–प्रौद्योगिकी ने साकार बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सूचना प्रौद्योगिकी से हिंदी को जोड़ने पर कुछ अत्यन्त सुखद परिणाम स्पष्टतः दिखाई देते हैं। एक तो जन–मानस से जुड़ी भाषा हिंदी 'एलीट क्लास' से भी जुड़ गई; कामकाज, खेल–जगत, शेयर मार्केट, वित्त–वाणिज्य, आँकड़े, कार्टून से जुड़ती चली गई। आई. टी. (Information Technology) की कार्य पद्धति में हिंदी के जुड़ने से कार्य में तेजी आ गई, गुणवत्ता आ गई, सामाजिक प्रतिष्ठा का उन्नयन हो गया, कार्य–क्षेत्र विस्तृत हो गया, सौंदर्य चेतना का समावेश हो गया, पारदर्शिता आ गई, चयन की सुविधा हो गई, समय और धन की बचत होने लगी, आत्म–प्रसार के अवसर खुल गए, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का भाव पैदा हो गया और इन सबसे बढ़कर कुएँ से निकलकर भाषा अथाह–अपार समुद्र में विस्तार पाने लगी ।

अतः भारतीय समाज के प्रत्येक नागरिक को विश्व–समाज से जोड़ने के मिशन में हिंदी सूचना–प्रौद्योगिकी का सशक्त माध्यम है। 'इंटरनेट' के लिए जिस एक विश्व–भाषा को विकसित किए जाने का विचार है, उसमें हिंदी भी अवश्य शामिल होगी। इससे कम–से–कम समय में पूरा राष्ट्र सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से अद्यतन सूचनाएँ प्राप्त कर सकेगा। एकरूपता तथा प्रामाणिकता की दिशा में हिंदी भाषा और तेजी से अग्रसर हो सकेगी। शिक्षा, ज्ञान, शोध तथा विचार–विनिमय का विस्तार हो सकेगा।

आज आवश्यकता है कि हम एक नए, पूर्णतः विकसित तथा वैश्विक दौड़ में अद्यतन श्रेष्ठ सिद्ध होने वाले भारत का निर्माण करें। इसके लिए हमें कुछ भाषाई परिवर्तनों को, बदलते मुहावरों को स्वीकारना होगा। पहले निर्माण, फिर परिष्कार के सिद्धांत को अपनाते हुए हमें इस प्रौद्योगिकी की तमाम चुनौतियों का समाना करना होगा। हिंदी का वर्चस्व तभी दिनों–दिन बढ़ेगा।

पूरे परिदृश्य को देखें तो यह स्पष्टतः प्रकट है कि हिंदी का वर्चस्व बाजारवाद, उपभोक्तावाद, व्यवसायवाद तथा रोजगारवाद की अन्य अनेकानेक सम्भावनाओं के साथ–साथ बढ़ रहा है। हमें फिलहाल हिंदी में अंग्रेजी या हिंदी में तकनीकी स्पर्श, दुरूहता–विकटता तथा असहजता, शुष्कता जैसी बातें छोड़कर इस भागीरथ यत्न को नैरंतर्य एवं गति प्रदान करनी होगी। यही हिंदी अंततः अन्य भारतीय भाषाओं के समस्त बैरीयर तोड़ते हुए उन्हें विश्व–मंच पर ले जाने का कार्य करेगी।

सेवानिवृत्त प्रोफेसर
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

पूस की रात

मुंशी प्रेमचंद

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा– सहना आया है, लाओ, जो रुपए रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।

मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली– तीन ही तो रुपए हैं, दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा? माघ–पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे। अभी नहीं।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, कम्मल के बिना हार में रात को वह किसी तरह नहीं जा सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाड़ों में मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी। यह सोचता हुआ वह अपना भारी–भरकम डील लिए हुए (जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला–ला दे दे, गला तो छूटे। कम्मल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखें तरेरती हुई बोली–कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूँ तो कौन–सा उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कम्मल? न जाने कितनी बाकी है, जों किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर–मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रुपए न दूँगी, न दूँगी।

हल्कू उदास होकर बोला–तो क्या गाली खाऊँ?

मुन्नी ने तड़पकर कहा–गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौहें ढीली पड़ गईं। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भाँति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपए निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए। फिर बोली– तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी तो खाने को मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस।

हल्कू ने रुपए लिए और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक–एक पैसा काट–कपटकर तीन रुपए कम्मल के लिए जमा किए थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक–एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

पूस की अँधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पतों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़ा काँप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ–कूँ कर रहा था। दो में से एक को भी नींद न आती थी।

हल्कू ने घुटनियों कों गरदन में चिपकाते हुए कहा–क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आए थे? अब खाओ ठंड, मैं क्या करूँ? जानते थे, मै यहाँ हलुवा–पूरी खाने आ रहा हूँ, दौड़े–दौड़े आगे–आगे चले आए। अब रोओ नानी के नाम को।

जबरा ने पड़े–पड़े दुम हिलायी और अपनी कूँ–कूँ को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान–बुद्धि ने शायद ताड़ लिया, स्वामी को मेरी कूँ–कूँ से नींद नहीं आ रही है।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा–कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बर्फ लिए आ रही है। उठूँ, फिर एक चिलम भरूँ। किसी तरह रात तो कटे! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है! और एक–एक भगवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गर्मी से घबड़ाकर भागे। मोटे–मोटे गद्दे, लिहाफ–कम्मल। मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी! मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!

हल्कू उठा, गड्ढ़े में से जरा–सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा–पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, जरा मन बदल जाता है।

जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा।

हल्कू–आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।

जबरा ने अपने पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कंपन होने लगा। कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था।

जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसक सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद में चिपटाए हुए

ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद यह समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उनका एक–एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमे एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडें झोकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी से बाहर आकर भूँकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया, पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़–दौड़कर भूँकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति ही उछल रहा था।

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरु किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है! सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जायँगे तब कहीं सबेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था। पतझड़ शुरु हो गई थी। बाग में पत्तियों को ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियाँ बटोरूँ और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देख तो समझे कोई भूत है। कौन जाने, कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिए और उनका एक झाडू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा तो पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा–अब तो नहीं रहा जाता जबरू। चलो बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें। टाँठे हो जायेंगे, तो फिर आकर सोएँगें। अभी तो बहुत रात है।

जबरा ने कूँ–कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे–आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में खूब अँधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूँदे टप–टप नीचे टपक रही थीं।

एकाएक एक झोंका मेहँदी के फूलों की खूशबू लिए हुए आया।

हल्कू ने कहा–कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में भी तो सुगंध आ रही है?

जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। उसे चिंचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। जरा देर में पत्तियों का ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पाँव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू–छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर सँभाले हुए हों अंधकार के उस अनंत सागर मे यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उताकर बगल में दबा ली, दोनों पाँव फैला दिए, मानों ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में जो आए सो कर। ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय–गर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा–क्यों जब्बर, अब ठंड नहीं लग रही है?

जब्बर ने कूँ–कूँ करके मानो कहा–अब क्या ठंड लगती ही रहेगी?

'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।'

जब्बर ने पूँछ हिलाई।

'अच्छा आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गए बच्चा, तो मैं दवा न करूँगा।'

जब्बर ने उस अग्निराशि की ओर कातर नेत्रों से देखा!

मुन्नी से कल न कह देना, नहीं तो लड़ाई करेगी।

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफ निकल गया। पैरों में जरा लपट लगी, पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा–चलो–चलो इसकी सही नहीं! ऊपर से कूदकर आओ। वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया।

पत्तियाँ जल चुकी थीं। बगीचे में फिर अँधेरा छा गया था। राख के नीचे

कुछ–कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा जाग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आँखें बंद कर लेती थी!

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी, पर ज्यों–ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था।

जबरा जोर से भूँककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुंड था। उनके कूदने–दौड़ने की आवाजें साफ कान में आ रही थी। फिर ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रहीं हैं। उनके चबाने की आवाज चर–चर सुनाई देने लगी।

उसने दिल में कहा– नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। कहाँ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ!

उसने जोर से आवाज लगाई–जबरा, जबरा।

जबरा भोंकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ था। इस जाड़े–पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असह्य जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने जोर से आवाज लगाई–लिहो–लिहो! लिहो!!

जबरा फिर भूँक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो–तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभने वाला, बिच्छू के डंक का–सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़ डालता था, नीलगायें खेत का सफाया किए डालती थीं और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढ़ कर सो गया।

सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी–क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा–क्या तू खेत से होकर आ रही है?

मुन्नी बोली–हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है। तुम्हारे यहाँ मड़ैया डालने से क्या हुआ?

हल्कू ने बहाना किया–मैं मरते–मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दरद हुआ कि मै ही जानता हूँ!

दोनों फिर खेत के डाँड़ पर आए। देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और जबरा मड़ैया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हों।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छायी थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा–अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा–रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।

– हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक

स्वाभिमान

लालबहादुर शास्त्री

किसी गाँव में रहने वाला एक छोटा लड़का अपने दोस्तों के साथ गंगा नदी के पार मेला देखने गया। शाम को वापस लौटते समय जब सभी दोस्त नदी किनारे पहुंचे तो लड़के ने नाव के किराये के लिए जेब में हाथ डाला। जेब में एक पाई भी नहीं थी।

लड़का वहीं ठहर गया। उसने अपने दोस्तों से कहा कि वह और थोड़ी देर मेला देखेगा। वह नहीं चाहता था कि उसे अपने दोस्तों से नाव का किराया लेना पड़े। उसका स्वाभिमान उसे इसकी अनुमति नहीं दे रहा था। उसके दोस्त नाव में बैठकर नदी पार चले गए।

जब उनकी नाव आँखों से ओझल हो गई तब लड़के ने अपने कपड़े उतारकर उन्हें सिर पर लपेट लिया और नदी में उतर गया। उस समय नदी उफान पर थी। बड़े–से–बड़ा तैराक भी आधे मील चौड़े पाट को पार करने की हिम्मत नहीं कर सकता था। पास खड़े मल्लाहों ने भी लड़के को रोकने की कोशिश की। उस लड़के ने किसी की न सुनी और किसी भी खतरे की परवाह न करते हुए वह नदी में तैरने लगा। पानी का बहाव तेज था और नदी भी काफी गहरी थी। रास्ते में एक नाव वाले ने उसे अपनी नाव में सवार होने के लिए कहा लेकिन वह लड़का रुका नहीं, तैरता गया। कुछ देर बाद वह सकुशल दूसरी ओर पहुँच गया। उस लड़के का नाम था **'लालबहादुर शास्त्री'**।

नराकास प्रतियोगिताओं में बीएचईएल के 15 कर्मचारियों ने पुरस्कार जीते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वाधान में आयोजित 15 प्रतियोगिताओं में बीएचईएल के कुल 15 कर्मचारियों ने पुरस्कार जीते हैं। 10 पुरस्कार कॉर्पोरेट कार्यालय के कर्मचारियों ने जीते हैं और 5 पुरस्कार उद्योग क्षेत्र के कर्मचारियों ने प्राप्त किये हैं।

विजेता कर्मचारियों का विवरण निम्नानुसार हैः

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	विजेता का नाम	पदनाम	स्थान
1	चित्र अभिव्यक्ति	श्री सुभाष अरोड़ा	सहायक अधिकारी	प्रथम
2	तकनीकी प्रस्तुतीकरण	श्री अनिरुद्ध रंजन	प्रबंधक	प्रथम
3	रचनात्मक वाचन	श्री गौरव अब्रोल	प्रबंधक	द्वितीय
4	राजभाषा प्रश्नमंच	श्री योगेश गुप्ता	वरिष्ठ उप महाप्रबंधक	द्वितीय
5	हिंदी संस्मरण लेखन	सुश्री विशाखा जैन	वरिष्ठ प्रबंधक	द्वितीय
6	तकनीकी प्रस्तुतीकरण	श्री असद अली	प्रबंधक	तृतीय
7	हिंदी प्रशासनिक शब्द अंताक्षरी	श्री प्रणब कुमार सिंह	अभियंता	तृतीय
8	हिंदी टिप्पण लेखन	श्री अर्पित अग्रवाल	वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.)	प्रोत्साहन
9	हिंदी प्रतिवेदन लेखन	श्री संतोष कुमार	अभियंता(मा. सं.)	प्रोत्साहन
10	सूक्ति लेखन	श्री आलोक पॉल	वरिष्ठ प्रबंधक	प्रोत्साहन
11	हिंदी आशु भाषण	सुश्री वैशाली वाधवा	प्रबंधक	प्रोत्साहन
12	हिंदी शब्दार्थ लिखित	श्री दिनेश कुमार शर्मा	अभियंता	प्रोत्साहन
13	हिंदी कविता पाठ	श्री सिद्धार्थ चित्रांशी	प्रबंधक	प्रोत्साहन
14	रचनात्मक वाचन	श्री विप्लव कुमार	प्रबंधक	प्रोत्साहन
15	राजभाषा ज्ञान एवं हिंदी व्याकरण	श्री रमेश बहल	प्रबंधक	प्रोत्साहन

नराकास (उपक्रम-1) के तत्वावधान में संस्मरण लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वाधान में बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा दिनांक 25.11.2025 को "हिंदी संस्मरण लेखन" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली के 21 सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने प्रतिभागिता की। बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय ने नराकास के तत्वावधान में आयोजित सभी 15 प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की है।

राजभाषा उल्लाष पर्व 2025 की झलकियां

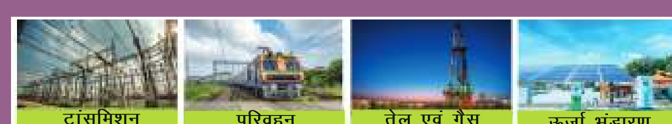

www.bhel.com

Follow us on

BHELOfficial | BHEL_India | BHEL_India | bhel.india | company/bhel